YUVE

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.)
द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित

NATIONAL EDUCATION POLICY NEP 2020

# स्वरगम

(हिंदी पाठ्यपुस्तक)


लेखकः
राहुल कुमार
एम.ए. (हिन्दी)


**Help Kit**
**6-8**

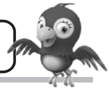

# 1 मेरी अभिलाषा है

## मौखिक

(क) बालक चन्दा के समान चमकना चाहते हैं।

(ख) बालक तारों के समान दमकना चाहता हैं।

(ग) बालक उपवन को गुंजित करना चाहता है, इसलिए कोयल की तरह कुहूकना चाहता है।

(घ) बालक आकाश के समान निर्मल और चन्द्रमा के समान शीतल होने की कामना करता है।

## लिखित

**1.** (क) चन्दा (ख) विहगों (ग) शशि
(घ) सागर

**2.** (क) पहली तीन पंक्तियों में बालक सूरज-सा दमकने, चन्दा-सा चमकने और तारों-सा दमकने की अभिलाषा प्रकट करता है।

(ख) मेरी अभिलाषा सेवा पथ पर सुमनों की तरह बिछ जाने की है।

(ग) बालक मेघों-सा मिटते तथा सागर सा लहराता हुआ सेवा पथ पर सुमनों की तरह बिछ जाना चाहता है।

(घ) बालक धरती के समान सहनशील बनना चाहता है।

(ङ) सेवा के पथ पर मैं, सुमनो सा बिछ जाऊँ,
पंक्ति मुझे सबसे अच्छी लगी, क्योंकि इसमें बालक सेवा इस तरह से करना चाहता है कि वह फूलों की तरह बिछ जाये।

(च) निम्न पंक्तियों में बालक की अभिलाषा है कि वह बादलों की तरह मिट जाये और सागर की तरह लहराये तथा सेवा के रास्ते में फूलों की तरह बिछ जाये।

## भाषा अध्ययन

**1.** (क) फूलों या दमकूँ मैं, विहगों सा चहकूँ मैं,
गुंजित कर वन उपवन, कोयल सा कुहकूँ मैं।

(ख) धरती सा सहनशील, पर्वत सा अविचल हूँ,
झलमल-झलमल उज्जवल तारों सा दमकूँ मैं,

(ग) नम जैसा निर्मल हूँ, शशि जैसा शीतल हूँ,

धरती सा सहनशील, पर्वत सा अविचल हूँ।

(घ) सूरज सा दमकूँ मैं, चन्दा सा चमकूँ मैं,

**2.**

| | | |
|---|---|---|
| सूरज | — | दिनकर, दिवाकर, भानु |
| मेघ | — | जलद, जलधर, घन |
| सागर | — | जलधि, समुद्र, सिंधु |
| चन्दा | — | चन्द्रमा, राकेश, शशि |
| फूल | — | पुष्प, सुमन, कुसुम |
| पक्षी | — | खग, विहग, विहंग नभ—अंबर गगन, आसमान। |

**3.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अनुमान | — | अनु | अतिरिक्त | — | अति |
| सुरक्षा | — | सु | असमर्थ | — | अ |
| कुमार्ग | — | कु | बेवजह | — | बे |
| लाइलाज | — | ला | | | |

**4.**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दिन | — | दिनकर | — | दिन करने वाला यानि सूर्य |
| निशा | — | निशाकर | — | रात्रि |
| प्रभा | — | प्रभाकर | — | सूर्य |
| लाभ | — | लाभकर | — | लाभ देने वाला |
| हित | — | हितकर | — | हित करने वाला |
| स्वास्थ्य | — | स्वास्थ्यकर | — | स्वास्थ्य सही करने वाला |
| हानि | — | हानिकर | — | हानि करने वाला |

# 2 भारत का राष्ट्रीय पक्षीः मोर

**मौखिक**

(क) शालीनता, सुन्दरता और बुद्धिमत्ता में मोर की बराबरी अन्य कोई पक्षी नहीं कर सकता, इसलिए मोर को राष्ट्रीय पक्षी चुना गया है।

(ख) भारत में पक्षियों की 1200 प्रजातियाँ पायी जाती हैं।

(ग) सन् 1963 में भारत सरकार ने मोर को राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया।

(घ) भगवान श्री कृष्ण शोभा बढ़ाने के लिए मोर पंख धारण करते हैं।

(ङ) बादशाह शाहजहाँ ने मोर की सुन्दरता से प्रभावित होकर अपने लिए एक रत्न जड़ित "तख्त-ए-ताऊस" (मयूर सिंहासन) बनवाया था।

(च) मोर का वैज्ञानिक नाम **पावो क्रिस्टाटस** है।

**लिखित**

1. (क) मोर (ख) 9000 (ग) मोरनी (घ) मोर

2. (क) राष्ट्रीय पक्षी मोर को पवित्र इसलिए माना जाता है क्योंकि सिंधु सभ्यता के बर्तनों की ठीकरों पर मोर का अंकन देखने को मिलता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में मोरनी का उल्लेख है। यजुर्वेद में अश्वमेघ यज्ञ के समय बलि वाले प्राणियों में मोर का नाम है। रामायण, महाभारत और स्कंद पुराण में मोर का उल्लेख है। मोर कार्तिकेय जी का वाहन है। श्रीकृष्ण के शिरोभूषण की शोभा बढ़ाते हैं। तथा मौर्यकाल में पंचमार्क सिक्कों पर भी मोर का चिह्न देखने को मिलता है।

   (ख) मोर देवताओं के सेनापति कार्तिकेय जी का वाहन है क्योंकि मोर बहुत चंचल होता है और इसे सिर्फ कार्तिकेय ही संभाल सकते थे क्योंकि उन्होंने अपने वेग को संभाल रखा था। इसी कारण विष्णु भगवान ने उन्हें मोर वाहन स्वरूप उपहार में दिया था। मोर विद्या की देवी सरस्वती का भी वाहन है।

   (ग) मोर के कई नाम है। संस्कृत में इसे 'मयूर' कहते हैं, जिसका अर्थ है- मारने वाला। मोर सर्प को खाता है इसलिए इसे 'मयूर' और 'भुजंग भुक' जैसे नाम मिले। मोर के सिर पर चमकीले नीले रंग की एक कलंगी रहती है इसलिए इसे 'शिखि' और 'शिखावल' भी कहते हैं। फारसी में 'ताऊस' तथा लैटिन और यूनानी भाषा में 'पावो' कहते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम 'पावो क्रिस्टाटस' यानी कलंगी वाला मोर है।

   (घ) नर को मोर तथा मादा को मोरनी कहते हैं। नर का गला और सिर गाढ़े नीले चमकीले रंग का रहता है। और सिर के ऊपर हरे और नीले परों की एक कलंगी रहती हैं। नर की पूँछ करीब 1 मीटर लम्बी रंगीन पंख वाली होती है। उन पर भूरे और नीले रंग की आँख जैसी आकृतियाँ बनी होती हैं। मोर की तरह मोरनी के भी कलंगी होती है। मगर मोरनी छोटी और चित्तीदार भूरे रंग की होती है। इसकी गर्दन का निचला भाग हरे रंग का होता है। मोरनी की सजीली पूँछ नहीं होती है।

   (ङ) भोजन के आधार पर मोर सर्वभक्षी प्राणी है। यह घास-फूस, बीज, नरम कच्चे फल, कीड़े-मकोड़े आदि को खा जाता है। देखा जाता है कि मोर छोटे सांपों और चूहों को मार कर खाता है। मोर शाम-सवेरे खेतों में दाना भी चुगते हैं।

(च) राष्ट्रीय पक्षी होने के बावजूद मोर का जीवन संकट में है। इसके मुख्य दो कारण है– इनके आवास क्षेत्र का सीमित होना तथा इनके खूबसूरत पंखों का व्यापार है।

(छ) हमें मोर पंखों के विदेश निर्यात पर पाबंदी लगानी चाहिए तथा इनकी ज्यादा से ज्यादा देखभाल और सुरक्षा करनी चाहिए।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हिमालय | — | व्यक्तिवाचक संज्ञा | सुन्दरता | — | भावाचक संज्ञा |
| पक्षी | — | जातिवाचक संज्ञा | ताजमहल | — | व्यक्तिवाचक संज्ञा |
| दिल्ली | — | व्यक्तिवाचक संज्ञा | राजीव गांधी | — | व्यक्तिवाचक संज्ञा |
| सच्चाई | — | भाववाचक संज्ञा | मित्रता | — | भाववाचक संज्ञा |
| बंगलौर | — | व्यक्तिवाचक संज्ञा | जनतन्त्र | — | जातिवाचक संज्ञा |
| घबराहट | — | भाववाचक संज्ञा | राकेश | — | व्यक्तिवाचक संज्ञा |

**2.** (क) क्या अमिता जी भाषण देंगी?

(ख) जब वर्षा हो रही थी, 'मैं बस स्टॉप पर था।'

(ग) भारतवासियों देश की रक्षा का समय आ गया है।

(घ) ओह! यशवन्त के भाई को चोट लग गई।

(ङ) क्या तुमने परीक्षा की तैयारी कर ली है?

(च) डॉ० रमेश के माता-पिता उत्सव में सम्मिलित हुये।

**3.** (क) अनीता के द्वारा भाइयों को राखी बाँधी गयी।

(ख) शिष्य द्वारा नृत्य सीखा गया।

(ग) हिन्दी के अध्यापक द्वारा अच्छा पढ़ाया गया।

(घ) माँ के द्वारा अनुज को थप्पड़ों से पीटा गया।

# 3 सबसे बड़ी चीज

**मौखिक**

(क) बीरबल अकबर के दरबार की शोभा थे।

(ख) अकबर ने बीरबल की ओर संकेत करते हुए कहा कि बीरबल मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस प्रश्न का उत्तर अवश्य दोंगे।

(ग) गिरिधर एक निर्धन बालक था। बीरबल उसकी बुद्धिमत्ता से प्रभावित हुये थे।

(घ) गिरिधर ने बीरबल को चिन्तित देखकर पूछा कि पिता जी मैं कई दिनों से देख रहा हूँ आप खोए-खोए रहते हैं। कृप्या बताइये, आपकी चिन्ता का क्या कारण है?

(ङ) गिरिधर ने बताया कि बुद्धिमान लोग प्राय: चिन्तित रहा करते हैं, जबकि मूर्ख लोग बेफिक्र रहकर मौज मस्ती किया करते हैं।

(च) क्रोध पर काबू न रखने पर अनेक समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

**लिखित**

(क) सप्ताह (ख) सभासद (ग) घर (घ) प्रश्न

(क) बुद्धि दुनिया की सबसे बड़ी चीज है, क्योंकि बुद्धि किसी को नीचे गिरा देती है, तो किसी को ऊपर उठा देती है।

(ख) बुद्धि चिन्ता को खाती है क्योंकि बुद्धिमान लोग प्राय: चिन्ता किया करते हैं, जबकि मूर्ख लोग बेफिक्र रहकर मौज मस्ती करते हैं।

(ग) बुद्धि क्रोध को पीती है। बुद्धिमान लोग क्रोध को पी जाते हैं। जबकि मूर्ख लोग अपने क्रोध पर नियन्त्रण नहीं रख पाते हैं।

(घ) बुद्धि क्या करती है। यह समझाने के लिए गिरिधर ने सम्राट से कहा कि प्रश्न पूछने। वाला, शिष्य होता है और बताने वाला गुरु होता है इसलिए आप शिष्य की तरह पूछो राजा ने कहा, शिष्य की तरह से तुम्हारा अभिप्राय सम्राट ने उत्सुकता से पूछा—गिरिधर ने कहा, आप राजगद्दी से उतर आइये। सम्राट राजगद्दी से उतरकर प्रश्न पूछने ही वाले थे कि तभी गिरिधर ने बीच में टोकते हुए कहा रुकिये महाराज, पहले मुझे गुरु का आसन तो ग्रहण कर लेने दीजिए। इतना कहकर गिरिधर राजगद्दी पर बैठ गया। और राजा को प्रत्यक्ष समझाया कि 'बुद्धि किसी को राजगद्दी से उतार देती है और किसी को राजगद्दी पर बैठा देती है।

(ङ) प्रस्तुत कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें चिन्ता से दूर रहना चाहिए। अपने क्रोध पर विजय प्राप्त करनी चाहिए और बुद्धि का सदुपयोग करना चाहिए।

(च) (i) बीरबल बहुत बुद्धिमान थे तथा अपने उत्तरों से सबको हँसा दिया करते थे।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) चिन्ता या बोझ, चित्त

(ख) चिंतित, बेफिक्र

(ग) बुद्धिमान, मूर्ख तथा अज्ञानी

(घ) बुद्धि, ऊपर

**2.** कटाव — काटना

वृक्षों को अधिक काटने से भूमि का कटाव होता है।

बहाव — बहना

नदियों का बहाव बहुत तेज था।

बचाव — बचना

हमें संतुलित आहार लेकर बीमारियों से बचाव करना चाहिए।

लगाव — लगना

माता–पिता को अपनी संतान से विशेष लगाव होता है।

पड़ाव — पड़ना

जीवन के आखरी पड़ाव में हमें अपनों की जरूरत पड़ती है।

पहनावा — पहनना

भारतीय पहनावा सबसे अच्छा है।

**3.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| थाली | — | थालियाँ | नीति | — | नीतियाँ |
| विधि | — | विधियाँ | क्यारी | — | क्यारियाँ |
| डोली | — | डोलियाँ | बेटी | — | बेटियाँ |
| रीति | — | रीतियाँ | खिड़की | — | खिड़कियाँ |

# 4 ओणम

**मौखिक**

(क) ओणम का त्योहार केरल राज्य में मनाया जाता है।

(ख) केरल की भाषा मलयालम है।

(ग) पूक्कलम फूलों से बनी रंगोली को कहते हैं।

(घ) ओणम त्योहार के दूसरे दिन को 'तिरुओणम' कहते हैं।

(ङ) केरल के लोग ओणम का देवता महाबली को मानते हैं।

(च) ओणम के त्योहार पर केरल में मुख्य रूप से नेहरू ट्रॉफी नौका दौड़ का आयोजन किया जाता है।

(छ) चिगमासम मलयालम भाषा में 'सावन' को कहते हैं।

**लिखित**

(क) मलयालम (ख) महाबली (ग) विष्णु (घ) पाँच

(क) ओणम का त्योहार परम्परागत उल्लास तथा उत्साह के साथ श्रावण मास में मनाया जाता है। यह लगातार पाँच दिन मनाया जाता है।

(ख) प्राचीन काल में महाबलि एक बेहद पराक्रमी और शक्तिशाली राजा था। उसकी राजधानी महाबलीपुरम थी। वह पृथ्वी, आकाश और पाताल तीनों पर राज्य करता था। देवता महाबली के शासन को पसन्द नहीं करते थे। उन्हें भय था कि कहीं इन्द्र का सिंहासन भी न छिन जाये। इसके लिए उन्होंने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। महाबली को हराना असान नहीं था इसलिए भगवान विष्णु वामन का रूप धारण करके भिक्षा माँगने गये। महाबली दानी और दयालु था। उसने वामन को मुँहमाँगी वस्तु देने का वचन दिया। वामन ने तपस्या करने के लिए बस तीन पग भूमि माँगी। महाबली ने उन्हें तीन पगभूमि मापने के लिए कह दिया। तीन पग में उन्होंने धरती, आकाश, पाताल नाप लिया। तब महाबली ने अपना सिर वामन के सामने झुका दिया। विष्णु ने महाबली को राज्य करने के लिए पाताल दे दिया। वह अपनी प्रजा से बहुत प्यार करता था इसलिए उसने भगवान से वर्ष में एक बार केरल की धरती पर आने की अनुमति माँगी। विष्णु ने अनुमति दे दी। तभी से ओणम का त्योहार मनाया जाता है।

(ग) तिरुओणम के दिन महाबली अपनी प्रजा की खुशहाली व सम्पन्नता देखने आता है।

(घ) ओणम के त्योहार में पहले दिन लोग घरों की साफ-सफाई करते हैं। उसके बाद घर का आंगन पूक्कलम से सजाया जाता है। प्रतिदिन पूक्कलम में फूलों की संख्या बढ़ती जाती है।

इस पर्व में प्रीति-भोज और भेंट का भी रिवाज है। इस पर्व में अनेक तरह के पकवान बनते हैं तथा महिलायें नृत्य करती हैं और कई तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है।

(ङ) ओणम् के दिन केरलवासी खीर, केले, नमकीन वस्तुएँ, अचार, पापड़, गाढ़ी कढ़ी, साँभर, उप्पेरी, पायसन आदि बनाते हैं।

(च) कैकोटिट्कली नृत्य को बालिकाएँ और स्त्रियाँ ताली बजाते हुये करती हैं।

(छ) ओणम का त्योहार हमें एकता और सुख समृद्धि का सन्देश देता है।

**भाषा अध्ययन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **1.** | प्रसंग | प्रमाण | प्रशंसा | प्रत्येक |
| | प्रयोग | प्रसन्न | प्रयोजन | प्रतीक |
| | प्रजा | प्रतियोगिता | प्रतिलोम | प्रवेश |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **2.** सुख | — | दुख | प्रचलित | — | अप्रचलित |
| धर्म | — | अधर्म | पृथ्वी | — | आकाश |
| पवित्र | — | अपवित्र | पसन्द | — | नापसन्द |
| नये | — | पुराने | आसान | — | कठिन |
| प्रसन्न | — | दुखी | राजा | — | रंक |
| **3.** स्त्री | — | स्त्रियाँ | खुशी | — | खुशियाँ |
| प्रतियोगिता | — | प्रतियोगिताएँ | तपस्या | — | तपस्यायें |
| कहानी | — | कहानियाँ | नौका | — | नौकायें |
| वस्तु | — | वस्तुएँ | कपड़ा | — | कपड़े |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **4.** समय | + | इक | — | सामयिक |
| नगर | + | इक | — | नागरिक |
| संसार | + | इक | — | संसारिक |
| इतिहास | + | इक | — | ऐतिहासिक |
| दिन | + | इक | — | दैनिक |
| व्यक्ति | + | इक | — | वैयक्तिक |

# 5 हम कुछ करके दिखालाएँगे

**मौखिक**

(क) प्रस्तुत कविता में बच्चों के दिलों में कुछ करके दिखाने की भावना दिखाई देती है।

(ख) बच्चों के अरमान कुछ कर दिखाने के हैं।

(ग) बच्चे अपना नाम अमर लोगों में लिखवाना चाहते हैं।

(घ) जो लोग अन्धेरे घर में हैं, उस घर के कोने-कोने में उद्यम का दीप जलाना चाहते हैं।

(ङ) बच्चे मातृ-भूमि की सेवा में अपना सर्वस्व लगाना चाहते हैं इसलिए वे अपने आपको आजादी के दीवाने कहते हैं।

**2.** (क) कोने-कोने (ख) लोग (ग) आजादी
(घ) मातृभूमि

**3.** (क) जो गरीब भिखारी है, जिन का इस संसार में कोई नहीं है। बच्चे उन्हें गले लगाने की बात कर रहे हैं।

(ख) उद्यम के दीपक से कवि का तात्पर्य मेहनत के लिए तैयार करना है।

(ग) जो लोग जिन्दगी से हार गये हैं। जो हर तरीके की उम्मीद छोड़ चुके हैं। उनके बुझे दिमागों में उत्साह जगाने की बात कर रहे हैं बच्चे।

(घ) बच्चे, अपना सर्वस्व मातृभूमि की सेवा में लगाना चाहते हैं

(ङ) बच्चे उन वीरों के बच्चे हैं, जो अपनी धुन के पक्के सच्चे थे।

**2.** (च) (i) जो लोग आलस्य में हैं और बिना किसी काम के घर में ही रहते हैं। बच्चे उन्हें मेहनत करना सिखाना चाहते हैं।

(ii) बच्चे अपने आपको उन वीरों के बच्चे बता रहे हैं, जो धुन के पक्के सच्चे थे।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) है शौक यही अरमान यही,
हम कुछ करके दिखलाएँगे।

(ख) जो लोग गरीब भिखारी हैं,
जिन पर न किसी की छाया हैं

(ग) हम उनके कोने–कोने में,
उद्यम का दीप जलाएँगे।

(घ) हम उन वीरों के बच्चे हैं,
जो धुन के पक्के, सच्चे थे।

**2.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कमाएँगे | — | बढ़ाएँगे | जताएँगे | — | सताएँगे |
| दिखलाएँगे | — | लिखाएँगे | लगाएँगे | — | बनाएँगे |

**3.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अंधेरा | — | उजाला | सच्चे | — | झूठे |
| अमर | — | नश्वर | खुशी | — | दुखी |
| छाया | — | धूप | गरीब | — | अमीर |
| आजादी | — | गुलामी | हार | — | जीत |

**4.**

| | | |
|---|---|---|
| जिसका पता न हो | — | लापता |
| जो सत्य बोलता हो | — | सत्यवादी |
| जो देश के लिए मरे | — | शहीद |
| साहस से भरे कार्य करने वाला | — | साहसी |
| स्वर्ग में जाने वाला | — | स्वर्गीय |

# 6 स्वामी विवेकानन्द

## मौखिक

(क) स्वामी विवेकानन्द के बचपन का नाम नरेन्द्र था।

(ख) नरेन्द्र के ऊधम मचाने पर माँ ने नरेन्द्र से कहा, ''देख, अगर तू उद्यम मचायेगा तो भगवान शंकर तुझे कैलाश नहीं आने देंगे।''

(ग) नरेन्द्र के कुश्ती, बॉक्सिंग, दौड़, घुड़दौड़, तैराकी, व्यायाम आदि उनके प्रिय शौक थे।

(घ) नरेन्द्र ने अपना गुरु 'स्वामी रामकृष्ण परमहंस' को बनाया क्योंकि वे एक योग्य गुरु थे।

(ङ) नरेन्द्र के बारे में रामकृष्ण ने टिप्पणी की कि—''नरेन (नरेन्द्र) एक दिन संसार को जरूर झकझोर डालेगा।''

(च) सन् 1893 ई० में स्वामी जी शिकागो में धर्माचार्यों के सम्मेलन में सम्मिलित होने गये।

## लिखित

(क) नरेन्द्र (ख) हठी (ग) 1881 (घ) सात

## प्रश्न-उत्तर

(क) स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी सन् 1863, मकर संक्रान्ति के पुण्य पर्व के दिन कलकत्ता में हुआ था।

(ख) बचपन से ही नरेन्द्र यह जानना चाहते थे कि—''क्या ईश्वर का अस्तित्व है ?''

(ग) रामकृष्ण परमहंस ने अपनी सारी शक्तियाँ नरेन्द्र को देकर कहा—
''मेरी इस शक्ति से, जो तुममें संचारित कर दी हैं, तुम्हारे द्वारा बड़े-बड़े कार्य होंगे और उसके बाद केवल तुम वहाँ चले जाओगे जहाँ से आये हो।''

(घ) स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण के विचारों को भारत की जनता तक घूम-घूम कर पहुँचाया।

(ङ) स्वामी विवेकानन्द ने दरिद्रजन की सेवा एवं उनका उद्धार कर अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया।

(च) शिकागो धर्म सम्मेलन में स्वामी जी ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा, ''अमेरिकावासी भाइयों एवं बहनों'' जबकि पूर्व के सभी वक्ताओं ने सम्बोधन में कहा 'अमेरिकावासी' महिलाओं और पुरुषों कहा था। स्वामी जी के अपनत्व भरे सम्बोधन को सुनकर श्रोता देर तक तालियाँ बजाते रहे।

(छ) स्वामी विवेकानन्द के व्यर्क्तित्व की विशेषता ''सर्वधर्म समभाव' ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया। क्योंकि वो सबको एक समान मानते थे।

**भाषा अध्ययन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **2.** | वर्ष | — | वर्षभर, वर्षफल, वर्षगांठ, वार्षिक |
| | देश | — | देशान्तर, देशभक्ति, देशद्रोही, देशभक्त |
| | समय | — | समयविपरीत, समयानुकूल, समयानुसार, समयअन्तराल |
| | इच्छा | — | इच्छामृत्यु, इच्छानुसार, इच्छापूर्ति, इच्छाधारी |

**3.** (क) करण कारक (ख) सम्बन्धकारक (ग) सम्प्रदान कारक
(घ) अधिकरण कारक (ङ) कर्ताकारक

**4.**
- रामकृष्ण परमहंस की बातों से नरेन्द्र का ईश्वर के प्रति संशय दूर हो गया।
- स्वामीजी के अपनत्व भरे सम्बोधन ने श्रोताओं का **हृदय जीत लिया**।
- स्वामी जी का दूसरा कार्य हिन्दू धर्म और संस्कृति पर हिन्दुओं की **श्रद्धा जमाये रखना** था।
- 4 जुलाई सन् 1902 ई० को स्वामी विवेकानन्द प्रात:काल से ही अत्यन्त **प्रफुल्ल** दिख रहे थे।
- स्वामी जी का भाषण सुनकर श्रोता **मन्त्रमुग्ध** हो जाते थे।
- घण्टे पहर बाद एक गहरा नि:श्वास छोड़ा और फिर **चिरमौन** छा गया।

# 7 आदि कांड रामायण से

**मौखिक**

(क) राजा दशरथ के पिता का नाम अज था तथा वे कोसल राज्य में राज करते थे।
(ख) कोसल प्रदेश की राजधानी अयोध्या थी।
(ग) सागर, रघु, दिलीप आदि राजा दशरथ के पूर्वज थे।
(घ) राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं- कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी।
(ङ) चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को राम का जन्म हुआ। उनकी माता कौशल्या थीं।
(च) विश्वामित्र राम को लेने इसलिए आये थे क्योंकि राक्षस उनके यज्ञ में विघ्न डाल रहे थे।
(छ) राम का विवाह राजा जनक की बड़ी बेटी सीता के साथ हुआ।

**लिखित**

(क) राजमहल (ख) सुमित्रा (ग) विश्वामित्र (घ) राक्षस

**प्रश्न-उत्तर**

(क) राजा दशरथ की बड़ी रानी कौशल्या के पुत्र राम थे। दूसरी रानी सुमित्रा के दो पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न तथा कैकेयी के पुत्र का नाम भरत था।

(ख) राजा दशरथ राम को विश्वामित्र के साथ भेजने में हिचक रहे थे क्योंकि वे अपने पुत्र राम से बहुत प्यार करते थे और वह जानते थे कि मारीच और सुबाहु बहुत भयानक राक्षस हैं।

(ग) राम ने मारीच और सुबाहु का संहार किया। राम ने मारीच को मानवास्त्र से मारा तथा सुबाहु को राम ने आग्नेयास्त्र से मार डाला।

(घ) यज्ञ के बाद राम विश्वामित्र के साथ मिथिला गये क्योंकि विश्वामित्र ने राम से कहा था कि मिथिला में यज्ञ हो रहा है। हम लोगों को वहाँ जाना है।

(ङ) सीता के विवाह के लिए राजा जनक की शर्त थी कि जो व्यक्ति धनुष की प्रत्यंचा को चढ़ाएगा, उसी के साथ सीता का विवाह होगा।

(च) सीता का जन्म पृथ्वी से राजा जनक के हल चलाते वक्त हुआ था।(छ) राम के तीनों भाइयों, लक्ष्मण का विवाह उर्मिला, भरत का मांडवी तथा शत्रुघ्न का श्रुतिकीर्ति से हुआ था।

**भाषा अध्ययन**

**1.** प्रारम्भिक, पारितोषिक, मानसिक, वार्षिक, आध्यात्मिक

**2.** संहार, प्रशंसा, संतुष्ट, मंत्रियों, प्रत्यंचा करूँगा, गूँज, दिशाएँ, पाँच, वहाँ

**3.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| डिब्बी | — | डिब्बी | ठाकुर | — | ठकुराइन |
| मामा | — | मामी | पतंग | — | पतंग |
| पाठक | — | पाठिका | चूहा | — | चुहिया |
| चौधरी | — | चौधराइन | बाबू | — | बबुआइन |
| दादा | — | दादी | लोटा | — | लुटिया |
| हाथी | — | हथिनी | राजा | — | रानी |
| लड़का | — | लड़की | अध्यापक | — | अध्यापिका |
| राजा | — | रानी | वधु | — | वर |

# 8 पर्यावरण के प्रदूषण की आवाज

**मौखिक**

(क) पर्यावरण प्रदूषण पर्यावरण का दूषित हो जाना है। यह समस्या एक भयंकर रूप

ले रही है क्योंकि यह समस्या किसी एक व्यक्ति, समूह या देश की समस्या नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व की समस्या है।

(ख) प्रकृति पर्यावरण में जब किन्हीं दो तत्वों का अनुपात इस रूप में बदलने लगता है, जिसका जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका होती है, तब कहा जाता है कि पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

(ग) वायुप्रदूषण का मुख्य कारण औद्योगिक संस्थान तथा यातायात के साधन हैं। इनका प्रभाव मनुष्यों तथा अन्य जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य पर पड़ता है।

(घ) जल के मुख्य स्त्रोतों में दूषित एवं विषैले तत्वों का समावेश होना जल प्रदूषण कहलाता है। इसे नियन्त्रित करने के लिए ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि कम व्यर्थ पदार्थ बाहर निकले तथा इन्हें उपचारित करके ही निकाला जाय। इसके अतिरिक्त नगरीय कूड़ा-करकट को भी जैसे-तैसे नष्ट कर देना चाहिए तथा जल स्त्रोतों में मिलने से रोकना चाहिए।

(ङ) पर्यावरण में ध्वनियों का बढ़ जाना ही ध्वनि प्रदूषण है। विद्वानों का कहना है कि शोर व्यक्ति को समय से पहले बूढ़ा कर देता है।

(च) ''जिस तरह से यातायात के साधन, फैक्ट्रियाँ, लाउडस्पीकर आदि का दिन पर दिन उपयोग बढ़ता है। जिससे ध्वनि प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। एक दिन ऐसा आयेगा जब मनुष्य को स्वास्थ्य के सबसे बड़े शत्रु शोर से संघर्ष करना होगा क्योंकि शोर का स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

**लिखित**

(क) दोनों (ख) तीन (ग) नगरों (घ) बहरा

**प्रश्न-उत्तर**

(क) आज के युग की अति गम्भीर समस्या पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या है। यह समस्या किसी एक व्यक्ति, समूह या देश की समस्या नहीं है बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। पर्यावरण प्रदूषण का कुप्रभाव न केवल मानव जाति पर पड़ रहा है। अपितु यह थलचर, जलचर तथा नभचर सभी जीव जन्तुओं को कुप्रभावित कर रहा है।

(ख) प्रदूषण तीन प्रकार का होता है—वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण।

- **वायु प्रदूषण**—वायुमण्डल में विभिन्न प्रकार की गैसें एक विशिष्ट अनुपात में प्रकृति में पायी जाती हैं। जब इन गैसों का प्रकृति में अनुपात बिगड़ जाता है तो, इसे वायु प्रदूषण कहते हैं।

- **जल प्रदूषण**—जल के मुख्य स्रोतों में दूषित एवं विषैले तत्वों का समावेश होना जल प्रदूषण कहलाता है।
- **ध्वनि प्रदूषण**—पर्यावरण में शोर अर्थात् ध्वनियों का बढ़ जाना ही ध्वनि प्रदूषण है।

(ग) वायु प्रदूषण से फेफड़ों के रोग मुख्य रूप से होते हैं। इसके अतिरिक्त सिरदर्द, आँखें का दुखना, आँखों में चिरमिराइट होना, खाँसी, दमा, ब्रोंकाइटिस, गले का रोग, हृदय रोग आदि कई रोग हो जाते हैं। हमें वायु प्रदूषण को रोकने के लिए ऊँची चिमनियाँ लगाई जानी चाहिए तथा उसमें छनने लगे होने चाहिए। सड़क पर चलने वाले वाहनों का कार्बोरेटर तथा धुआँ निकलने वाला भाग बिल्कुल ठीक होना चाहिए। वाहनों के धुआँ निकालने वाले सिलेण्डर के मुँह पर फिल्टर लगाने चाहिए। रेलगाड़ियों का विद्युतीकरण करके काफी हद तक वायु प्रदूषण को नियन्त्रित किया जा सकता है।

(घ) प्रदूषित जल के सेवन से मुख्य रूप से पाचनतन्त्र सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इन रोगों में मुख्य हैं—हैजा, पेचिस, पीलिया, टाइफाइड तथा पैराटाइफाइड आदि। ये सभी रोग संक्रामक रूप से फैलते हैं तथा घातक सिद्ध होते हैं।

(ङ) पर्यावरण में शोर अर्थात् ध्वनियों का बढ़ जाना ही ध्वनि प्रदूषण है। शोर के कारण रक्तचाप, श्वसनगति, नाड़ीगति में उतार-चढ़ाव, जठरांत्र गतिशीलता में कमी रुधिर परिसंचरण में परिवर्तन तथा हृदय-पेशी के गुणों में भी परिवर्तन होता है। शोर से शारीरिक एवं मानसिक तनाव बढ़ता है। अत्यधिक शोर से निस्टैग्मस हो जाता है और चक्कर आने लगते हैं।

(च) ध्वनि प्रदूषण का प्रभाव कान के अतिरिक्त पाचन तन्त्र, हृदय, केन्द्रीय तंत्रिका तन्त्र पर भी शोर का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(छ) पर्यावरण प्रदूषण से बचाव के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त रूप से प्रयास किये जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति को भी इस समस्या के प्रति सजग रहना चाहिए तथा इसके नियन्त्रण में अपना योगदान देना चाहिए।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पर्यावरण | — | परि + आवरण | जीवनाधार | — | जीवन + आधार |
| प्रतिकूल | — | प्रति + अनुकूल | औद्योगिक | — | उद्योग + योगिक |
| कदापि | — | कद + अपि | विषाक्त | — | विष + आक्त |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कीटाणु | — | कीट + अणु | जलाशय | — | जल + आशय |

2\.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अतिवृष्टि | — | अनावृष्टि | प्रतिकूल | — | अनुकूल |
| असन्तुलन | — | सन्तुलन | हानिकारक | — | लाभदायक |
| असम्भव | — | सम्भव | नियन्त्रित | — | अनियन्त्रित |
| कुप्रभाव | — | प्रभाव | शत्रु | — | मित्र |

3\. (क) जलचर (ख) पक्षी (ग) बंजर
(घ) स्वार्थी (ङ) धनी

# 9 नीति के दोहे

**मौखिक**

(क) कबीर ने अपनी रचनाओं में जाति-पाँति और ऊँच-नीच के भेदभाव का खुलकर विरोध किया है।

(ख) बोली को कबीर दास जी ने अनमोल इसलिए बताया है क्योंकि बोली से ही किसी को हम अपना बना सकते हैं और किसी को भी पराया।

(ग) मरी खाल से धौकनी बनती है, जो लोहे को पिघलाकर भस्म कर देती है।

(घ) कबीर ने गुरु की तुलना कुम्हार से तथा शिष्य की कुम्भ से की है।

(ङ) रहीम ने कपूत की तुलना बुझे हुए दीपक से की है। जिस प्रकार बुझे हुए दीपक से घर में अन्धेरा हो जाता है, उसी प्रकार कपूत कुल में अन्धेरा कर देता है।

(च) बसंत ऋतु में कोयल और कौए की पहचान बोलने के आधार पर की जाती है। क्योंकि बसंत में कौआ भी बोलता है और कोयल भी।

(छ) रहीम जी ने कहा कि बड़ों को देखकर छोटों की अवहेलना नहीं करना चाहिए क्योंकि जहाँ पर सुई से काम होता है, वहाँ तलवार का प्रयोग नहीं किया जा सकता। छोटे और बड़े सबका अपना-अपना महत्व है।

(ज) उत्तम लोगों की प्रकृति पर कुसंग का प्रभाव उसी प्रकार नहीं पड़ता जिस प्रकार से चंदन के पेड़ पर साँपों के लिपटे रहने पर भी विष उसमें प्रवेश नहीं कर पाता है।

(झ) रहीम दास जी ने प्रेम सम्बन्ध तोड़ने से इसलिए मना किया है क्योंकि जब प्रेम सम्बन्ध एक बार टूटकर दुबारा जुड़ते हैं तो उसमें गाँठ पड़ जाती हैं, जैसे कि धागा एक बार टूट जाये तो उसमें जुड़ने पर गाँठ पड़ जाती है।

**लिखित**

(क) संत कबीर (ख) अकबर (ग) सभी (घ) पानी

(क) यह शरीर एक कुम्भ के समान है। हम इसे साथ में लेकर घूमते हैं। लेकिन जब यह नष्ट हो जाता है तो, हमारे हाथ कुछ भी नहीं आता। ठीक उसी प्रकार जैसे कच्चे घड़े में जरा सा धक्का लगने पर वह फूट जाता है।

(ख) छोटी से छोटी वस्तु भी परिस्थिति विशेष में बड़ी महत्वपूर्ण सिद्ध होती है, इसलिए उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यह भाव रहीम दास जी के दोहे—

रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवैं सुईं, कहा करै तरवारि।।

(ग) 'एक ही सपूत से कुल भला कहलाने लगता है। जिस प्रकार एक ही दीपक घर में रोशनी करने के लिए काफी होता है।

(घ) क्योंकि दोनों काले होते हैं।

(ङ) (i) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरौ चटकाय।
जोरि ते फिर न जुरै, जुरै गाँठ पर जाय।।

(ii) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुईं, कहा करै तरवारि।।

(iii) मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर।
श्रवन द्वार हवै संचरै, सालै सकल शरीर।।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काचा | — | कच्चा | सीतलता | — | ठण्डा |
| कछु | — | कुछ | सुबरन | — | सुमिरन |
| अमोल | — | अनमोल | मोल | — | मूल्य |
| मुख | — | मुँह | | | |
| जाकी | — | जिसकी | | | |

**2.**

काक — कौआ, करठ, काग, पिशून, वयस
पानी — नीर, जल, अंबु
भुजंग — नाग, सर्प, विषधर
भगवान — ईश्वर, देवता, देव

अभिनेता — अभिनेत्री — कला गायक — गायिक — संगीत

संपादक — संपादिका — लेखन    शिष्य — शिष्या — अध्ययन
अध्यक्ष — अध्यक्षिका—सम्मेलन    नर्तक — नर्तिका — नृत्य
चित्रकार — चित्रकार —कला    अध्यापक— अध्यापिका— शिक्षण
धावक — धाविका — खेल

# 10 चेतक की वीरता

**मौखिक**

(क) चेतक राणा प्रताप का घोड़ा था।
(ख) युद्ध के बीच में चेतक चौड़की भर-भर कर निराला दिखाई पड़ता है।
(ग) राणा प्रताप के घोड़े चेतक के तन पर कभी कोड़े का प्रयोग नहीं किया गया था क्योंकि वह दुश्मनों के सिर पर आसमान में दौड़ता था। जरा-सी हवा से वह सवार को लेकर उड़ जाता था। जब तक राणा जी की पुतली घूमती थी, तब तक चेतक मुड़ जाता था।
(घ) चेतक राणा जी के इशारों को समझाता था तथा वह बहुत निपुण था।
(ङ) विकराल वज्रमय बादल-सा चेतक को इसलिए कहा गया है क्योंकि जिस तरह विकराल बादल गरजते हैं, उसी प्रकार वह दुश्मनों की सेना पर कहरता था।

**लिखित**

(क) चेतक    (ख) घोड़े    (ग) हवा    (घ) पुतली
(क) चेतक को आसमान का घोड़ा इसलिए कहा गया है क्योंकि वह दुश्मन के सर के ऊपर आसमान में दौड़ता था।
(ख) चेतक ने युद्ध में अनेक कौशल दिखाएँ। वह युद्ध भूमि में सरपट दौड़ता था। वह ढालों पर भी बिना डर के सरपट दौड़ता था।
(ग) ऐसी कोई जगह रणभूमि में नही थी, जहाँ चेतक दुश्मन को देखकर न मुड़ जाता था। वह जिधर दुश्मन को देखता था उधर ही मुड़ जाता था।
(घ) चेतन विकराल वज्रमय बादल की तरह सेना पर टूट पड़ता था।
(ङ) घोड़े का ऐसा रंग देखकर बैरी समाज दंग रह गया।
(च) हम महाराणा प्रताप को उनकी वीरता के लिए याद करते हैं।

**भाषा अध्ययन**

**1.** निराला — पाला    कोड़ा — घोड़ा
चाल — माल    लहर — ठहर
ढंग — अंग

**2.** (क) राणा प्रताप का घोड़ा हवा को काटते हुए आगे बढ़ता हैं

(ख) विकराल वज्रमय बादल की तरह शत्रुओं की सेना पर टूट पड़ता था।

(ग) राणा प्रताप के घोड़ चेतक के तन पर कभी कोड़े का प्रयोग नहीं किया गया था क्योंकि वह दुश्मनों के सर पर आसमान में दौड़ता था। जरा-सी हवा से वह सवार को लेकर उड़ जाता था। जब तक राणा जी की पुतली घूमती थी तब तक चेतक मुड़ जाता था।

(घ) वह राणा जी के इशारों को समझता था तथा वह बहुत निपुण था।

(ङ) चेतक कभी यहाँ होता था। जब यहाँ देखो तो यहाँ नहीं वहाँ होता था जब वहाँ देखो तो वहाँ नहीं यहाँ होता था। इतनी तेज उसकी गति थी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| (क) भर | (ख) ही | (ग) तो | (घ) ही |
| (ङ) भी | (च) तक | (छ) ही | (ज) भी |

# 11 देश के सपूत

**मौखिक**

(क) 'लाल-बाल-पाल' के तीनों नाम—लाल-लाला-लाजपतराय, बाल—बाल गंगाधर तिलक और पाल—विपिन चन्द्रपाल का बोधक है।

(ख) लाहौर में उन्होंने स्वामी दयानन्द का भाषण सुना और सत्रह वर्ष की आयु में वे आर्य समाज के सदस्य बन गये।

(ग) लाला लाजपत राय का जन्म 28 फरवरी 1865 ई० को उनके ननिहाल ढुड्डिके में हुआ था। पिता राधाकृष्ण तथा माता गुलाब देवी थीं।

(घ) भगतसिंह का जन्म विक्रमी सम्वत् 1964 अश्विन शुक्ला त्रयोदशी शनिवार को पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा गाँव में हुआ था।

(ङ) भगत के बाबा का नाम अर्जुन सिंह, भाई का नाम जगत सिंह और पिता का नाम किशन सिंह था।

(च) भगत सिंह, DAV College लाहौर के विद्यार्थी थे। महात्मा गाँधी ने देश की स्वतन्त्रता के लिए असहयोग आन्दोलन किया। भगत सिंह उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। वह स्कूल की पढ़ाई छोड़कर अपने साथियों के साथ इस आन्दोलन में कूद पड़े।

**लिखित**

(क) 28 फरवरी (ख) 1888 (ग) इंग्लैण्ड (घ) 1925

(क) लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की सामाजिक और शैक्षिक गतिविधियों का विस्तार किया और धीरे-धीरे इसको भारत की स्वाधीनता के साथ जोड़ दिया।

(ख) लाजपत राय ने अछूतोद्धार के लिए मुक्तिसेना का गठन किया।

(ग) साइमन कमीशन के देशव्यापी विरोध में जो प्रदर्शन हुआ उसका नेतृत्व लाला जी कर रहे थे। पुलिस ने उन पर निर्दयतापूर्वक लाठियाँ बरसायीं। लाला जी के सिर और छाती पर भी ये लाठियाँ पड़ी। इस चोट के परिणामस्वरूप ही 17 नवम्बर 1928 में उनका में उनका स्वर्गवास हो गया।

(घ) लाला लाजपत राय जी के देशभक्ति के गुण से हम प्रभावित हैं क्योंकि आज उनके इसी गुण के कारण हम आजादी की हवा में साँस ले रहे हैं।

(ङ) भगत सिंह के यज्ञोपवीत के समय उनके दादा जी ने घोषणा की थी कि, ''मैं अपने इन दोनों बच्चों को इस यज्ञवेदी पर खड़े होकर देश-सेवा के महान यज्ञ के लिए समर्पित करता हूँ।

(च) भगत सिंह को दिल्ली असेम्बली में बम फोड़ने अर्थात् अंग्रेजी राज के विरुद्ध षड्यन्त्र करने के लिए मृत्यु दण्ड दिया गया।

(छ) भगत सिंह का बलिदान दिवस 23 मार्च को मनाया जाता है।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (1) सातवीं किताब (2) तेरह घोड़े
(3) चार कप (4) कुछ वस्तुएँ

**2.** (क) सर्वनाम — (क) वे, हम
(ख) उन्होंने, मेरी
(ग) वे
(घ) मैंने, उनसे
(ङ) आपका

**3.** (i) दार्शनिक (ii) श्रद्धालु (iii) जापानी
(iv) भारतीय (v) विश्वयुद्ध (vi) ईमानदार

**क्रिया** — प्रतिक्रिया — फलस्वरूप

मैंने दीवार पर हाथ मारा **फलस्वरूप** मेरे चोट लग गयी।

**फल** — प्रतिफल — लाभ

अच्छे कर्मों का लाभ कभी न कभी मिलता है।

ध्वनि — प्रतिध्वनि — तरंगे

पहाड़ों पर कुछ बोलने पर हमें अपनी आवाज की प्रतिध्वनि (तरंगे) सुनाई पड़ती हैं।

हिंसा — प्रतिहिंसा — बदला

# 12 हमारे वैज्ञानिक

**मौखिक**

(क) डॉ० होमी जहाँगीर भाभा का जन्म 30 अक्टूबर सन् 1904 ई० में मुम्बई के एक पारसी परिवार में हुआ।

(ख) अंतरिक्ष में विद्यमान किरणों के रहस्य की जानकारी को हम तक पहुँचाने का श्रेय, हमारे देश के महान वैज्ञानिक डॉ० होमी जहाँगीर भाभा को है।

(ग) डॉ० भाभा ने वैज्ञानिक शोध करके किरणों के विषय में बताया कि बाह्य अंतरिक्ष से आने वाली किरणों के कण बहुत छोटे-छोटे और बहुत तेज गति से चलने वाले होते हैं।

(घ) अग्नि और पृथ्वी नाम की मारक मिसाइलें महान वैज्ञानिक अब्दुल कलाम की देन हैं। इसी उपलब्धि के कारण ही अब्दुल कलाम को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

(ङ) अब्दुल कलाम का पूरा नाम अब्दुल पाकिर जैनुलवद्दीन अब्दुल कलाम है।

(च) देश को नई उपलब्धियाँ दिलाने के लिए वैज्ञानिक परीक्षण किये जाते हैं

**लिखित**

(क) 1904 (ख) 1948 (ग) पद्मभूषण (घ) तमिलनाडु

(क) परमाणु ऊर्जा का उपयोग, इसका बड़े पैमाने में उत्पादन, अंतरिक्ष में विद्यमान किरणों के रहस्य की जानकारी को हम सभी तक पहुँचाने का श्रेय डॉ० भाभा को है। भाभा के कुशल निर्देशन में 'अप्सरा' 'सिरस' तथा जरलीना नामक तीन रिएक्टरों की स्थापना हुई।

(ख) पहला परमाणु विस्फोट 18 मई सन् 1974 में राजस्थान के पोखरण नामक स्थान में शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए किया गया।

(ग) अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर सन् 1931 ई० को तमिलनाडु प्रान्त के

रामेश्वरम् में हुआ।

(घ) अब्दुल कलाम ने अपनी कड़ी मेहनत और लगन से भारत के पहले उपग्रह प्रक्षेपण यान एस०एल०वी० 3 का निर्माण किया। कलाम ने पृथ्वी और अग्नि जैसी मिसाइलों की डिजाइन बनाकर देश को मिसाइल शक्ति से सुसज्जित किया। वर्ष 1998 का पोखरण परमाणु विस्फोट करके देश की परमाणु क्षमता विकसित करने का श्रेय अब्दुल कलाम को ही हैं

(ङ) मिसाइल एक प्रकार का हथियार है, जो कई सौ किलोमीटर की दूरी तक दुश्मन के ठिकानों, जहाजों तथा मिसाइलों को नष्ट कर सकती है। देश–देश में कलाम ने 'पृथ्वी' और 'अग्नि' मिसाइलों की डिजाइन बनाकर देश को मिसाइल शाक्ति से सुसज्जित किया।

(च) हवा से हवा में मार करने से मतलब युद्ध में वायुयान को नष्ट करने तथा जमीन से जमीन में मार करने का आशय थल युद्ध में वार करने वाली मिसाइलों से हैं।

(छ) पी०एच०डी०—पी०एच डी० की उपाधि मास्टर डिग्री के बाद दी जाती है। इस पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त करने वाला व्यक्ति डॉ० होता है, उस विषय का जिसमें वह पी०एच०डी० करता है। वह किताबों को लिख सकता है।

**पद्म भूषण**—पद्म भूषण का पुरस्कार सरकार द्वारा उस व्यक्ति को दिया जाता है, जिसने अपने कार्यक्षेत्र में सर्वोच्च कार्य किया है।

**भारत रत्न**—भारत रत्न का पुरस्कार देश के लिए सर्वोच्च कार्य करने पर दिया जाता है।

**नोबल पुरस्कार**—नोबल पुरस्कार शान्ति के लिए दिया जाता है।

**भाषा अध्ययन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **1.** | क्षत्रिय | त्रिशूल | ज्ञानी | श्रमिक |
| | क्षेत्र | त्रिमूर्ति | ज्ञाता | श्रोता |

**2.** शिक्षा — शिक्षार्थी, शिक्षक, शिक्षालय
शरीर — शरीर, शरीरांत रचना, शरीर योजना
मास — मासिक, प्रतिमास, महावार
विद्या — विद्यार्थी, विद्यालय, विद्याभवन
शरण — शरणार्थी, शरणागत, शरणम

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **3.** | भौगोलिक | ऐतिहासिक | वार्षिक | आध्यात्मिक |
| | नैतिक | दैनिक | साप्ताहिक | |

- डॉ० भाभा ने अंतरिक्ष किरणों पर **शोध** किया।
- डॉ० भाभा ने दुनिया को अंतरिक्ष की इन किरणों के रहस्यों से **अवगत कराया**।
- सन् 1922 ई० में गाँधी जी द्वारा चलाया गया असहयोग आन्दोलन **जोर पकड़** रहा था।
- अब्दुल कलाम ने पृथ्वी और अग्नि मिसाइलों का अविष्कार करके **गौरव प्राप्त किया**।
- वर्ष 1958 में भारत के राष्ट्रपति ने डॉ० भाभा को पद्मभूषण की उपाधि से **विभूषित किया**।
- हमारा देश डॉ० अब्दुल कलाम और डॉ० होमी जहाँगीर भाभा जैसे वैज्ञानिकों से **सुसज्जित** है।

# 13 सबसे बड़ा धन

**मौखिक**

(क) व्यापारी का नाम लियु तेह जौंग था। वह चीन के चागतेह प्रान्त के लिन सिएन नामक नगर में रहता था।

(ख) या-तिओ अपने माता-पिता के पास इसलिए नहीं रहती थी क्योंकि उसके माता पिता बहुत गरीब थे और उन्होंने या-तिओ को जौंग के हाथों दासी के रूप में बेच दिया था।

(ग) या-तिओ को सिक्का आँगन बहुारते वक्त आँगन में पड़ा मिला।

(घ) भिक्षु बुद्ध की एक विशाल मूर्ति स्थापित करने के लिए चन्दा एकत्र कर रहा था।

(ङ) मठाधीश ने मूर्ति न बनने का कारण या-तिओ का सिक्का न लेना बताया क्योंकि वह सिक्का उसका सर्वस्व था, जिसे वह भगवान को अपर्ति करना चाहती थी।

(च) भिक्षु का सिर शर्म से इसलिए झुक गया क्योंकि उसने निर्ममता से उस बच्ची का दान लेने से इंकार कर दिया था।

**लिखित**

(क) बंगला (ख) तितलियों (ग) बुद्ध (घ) मठ

(क) या-तिओ रोज सुबह जल्दी उठकर घर के सारे काम करती और हरेक के इशारे पर नाचती रहती। घर के दूसरे नौकर-चाकर उसे जो भी बचा-खुचा खाने को देते, वह उसी में संतोष कर लेती। रात होते-होते वह थक कर चूर हो जाती और

फिर अपनी चटाई पर लेटते ही निढाल होकर सो जाती।

(ख) सिक्के को लेकर या–तिओ के मन में ख्याल आया कि वह अपने लिए क्या–क्या खरीदेगी? कभी वह सोचती कि बाजार से केक खरीदकर खायेगी। लेकिन दूसरे ही क्षण वह केक का ख्याल छोड़कर कोई खिलौना अथवा पटाखे खरीदने की बात सोचने लगती। सिक्का अपने तकिये के नीचे रखकर रातभर वह इसी तरह के मीठे सपने में खोई रही।

(ग) जौंग ने अपने खजाने से सोने की अनेक पेटियाँ निकाल कर उस भिक्षु को दान में दे दीं। उसकी पत्नी, बहुओं तथा बेटियों ने भी अपने गहने लाकर उसे दे दिये। उसके बेटों ने अपनी रत्नों से जड़ित तलवारें दान में दीं।

(घ) भिक्षु ने सिक्के की उपेक्षा करते हुए कहा कि—''भगवान बुद्ध की सोने तथा हीरे–जवाहरात से बनने वाली मूर्ति को मैं इस गंदे ताँबे के सिक्के से अपवित्र नहीं होने दूँगा।

(ङ) मठ में बनी मूर्ति को देखकर विचार किया गया कि कहीं कोई गड़बड़ है, जिसकी वजह से भगवान रुठ गये हैं।

(च) मठाधीश ने भिक्षु को समझाया कि तुमने या–तिओ के साथ अन्याय किया है। ताँबे का सिक्का उसके जीवन का सर्वस्व था और जब अपना सर्वस्व उसने भगवान को अर्पित करना चाहा, तो तुमने उसकी भेंट को तुच्छ बताकर उसका अनादर कर दिया। भगवान इसी कारण तुमसे रुठ गये हैं। उनकी मूर्ति या–तिओ की भेंट के बिना नहीं बन सकती। अत: तुम इस बच्ची से प्रार्थना करो कि वह सिक्का तुम्हें दे दे।

(छ) ताँबे का सिक्का मूर्ति के हृदय के स्थान पर इसलिए रखा गया क्योंकि या–तिओ ने उसे दिल से भेंट किया था तथा वह सिक्का हृदय के स्थान पर करुणा तथा प्रेम का स्वरूप बनकर शान से चमक रहा था।

**भाषा अध्ययन**

**2.** इशारों पर नाचना — **वश में होना**

या–तिओ सभी के इशारों पर नाचती थी।

आँखें फटी रह जाना — **भौचक्का होकर देखते रह जाना**

उन अमीर महिलाओं का पहनावा देखकर उसकी आँखें फटी की फटी रह गयीं।

आँखे चमकना — **आँखों से ओझल होना**

मेरी बात सुनते ही अध्यापक आँखों से ओझल हो गये।

भृकुटि तन जाना — **क्रोध आना**

बच्चों की बातों पर मुझे क्रोध आ गया।

पलक झपकना — **क्षण भर में**

मैंने अपना काम क्षण भर में ही पूरा कर दिया था।

खुशी का ठिकाना न रहना — **बहुत खुश होना**

भिक्षु की बात सुनकर या-तिओ की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

**3.** (क) भूतकाल काल (ख) वर्तमान काल (ग) भूतकाल
(घ) भविष्य काल (ङ) भूतकाल काल (च) भूतकाल

**4.** (क) परलोकवासी (ख) अनकहा (ग) जिज्ञासु
(घ) निरर्थक (ङ) कृतज्ञन

# 14 मेरा गाँव

**मौखिक**

(क) कवि की यादों का गाँव नदी किनारे बसा हुआ है।
(ख) गाँव में दूर-दूर तक हरियाली फैली हुई है।
(ग) जब घर-घर से सुगंध आती है, तब भगवान स्वय उतर आते हैं।
(घ) गाँव में सभी लोगों का व्यवहार इन्द्रधनुष के रंगों जैसा है।
(ङ) गाँव में शहर का शोर और षड्यंत्री दाँव नहीं है।

**लिखित**

(क) नदी (ख) खेतो (ग) इन्द्रधनुष (घ) किसान

(क) कड़ी दुपहरी में पीपल की ठंडी छाँव सुख देती है।
(ख) गाँव-गाँव में शीतल जल तालाबों में मिलता है।
(ग) वृक्षों के नीचे की चौपाल पर बैठकर लोग सभी समस्याओं को सुलझाते हैं।
(घ) जब किसान पकी फसल को काटकर घर ले आते हैं, तब गाँव के घर-घर से सुगन्ध आती है।
(ङ) 'यहाँ नहीं षड्यन्त्री दाँव' से कवि का तात्पर्य किसी के प्रति बुरा न सोंचने और बुरा न करने से है।
(च) गाँव की धूल को चंदन की संज्ञा इसलिए दी गयी है क्योंकि वह ठण्डी होती हैं और चन्दन भी ठण्डा होता है।

**भाषा अध्ययन**

1. (क) इन पंक्तियों का यह आशय है कि जिस प्रकार इंद्रधनुष के रंग आपस में मिले रहते हैं, उसी प्रकार गाँव के लोग आपस में प्यार से रहते हैं।

   (ख) जिस प्रकर चन्दन ठण्डा होता है, उसी प्रकार गाँव के राह की धूल भी ठण्डी होती है जिस पर श्रमिकों यानि कि किसानों के पाँव बढ़ते हैं।

2.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुमन | — | फूल | नीर | — | जल |
| सरिता | — | नदी | तालाब | — | ताल |
| तरु | — | वृक्ष | परस्पर | — | आपस में |
| तीर | — | बाण | मार्ग | — | राह |

4. (क) चरित्रहीन (ख) शिशु

   (ग) संकलित (घ) वार्षिक

# 15 गाँव और शहर

**मौखिक**

(क) शहर अपने आपको को बढ़कर समझता था क्योंकि शहर में पक्की सड़कें हैं। रेलगाड़ी बस जैसी तेज सवारियों की सुविधा उपलब्ध है। भोजन वस्त्र भवन निर्माण की सामग्री तथा दैनिक जीवन में काम आने वाली सभी वस्तुएँ नगर के निवासियों को सुलभ रहती हैं। अच्छे विद्यालय, कॉलेज तथा चिकित्सालय यहाँ उपलब्ध हैं।

(ख) गाँव का वातावरण सूर्य का खुला प्रकाश, स्वच्छ शीतल हवा और चारों ओर हरा भरा होता है।

(ग) शहर के निवासियों को सूर्य का प्रकाश और वायु दुर्लभ होती है क्योंकि वहाँ कई कई मंजिलों वाले मकान होते हैं।

(घ) गाँव में प्रकाश के लिए लालटेन और दिए की सुविधा है।

(ङ) दूध, दही, घी, हरी सब्जी, ताजे फल आदि के मेल से हमारा भोजन पौष्टिक बनता है।

(च) मीलों, कारखानों, इंजनों आदि के धुएँ से वायु प्रदूषण या वायुमण्डल प्रदूषण होता है।

**लिखित**

(क) सड़क (ख) टिमटिमाती (ग) स्कूल (घ) आकार

(क) शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए सूर्य का खुला प्रकाश, स्वच्छ शीतल हवा और चारों ओर हरा-भरा वातावरण चाहिए।

(ख) अब गाँव में आने-जाने के लिए पक्की सड़कें बन गयी हैं।

(ग) गाँव में शिक्षा के लिए स्कूल खुल गये हैं। तथा थोड़ी-थोड़ी दूर पर प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों तथा अस्पतालों में स्वास्थ्य-रक्षा और चिकित्सा की सुविधाएँ उपलब्ध हो गयी हैं।

(घ) शहर में सामान खरीदने में लोगों को भीड़ का सामना, इसलिए करना पड़ता है क्योंकि गाँवों की अपेक्षा शहरों में जनसंख्या अधिक है।

(ङ) गाँवों में जनसंख्या बढ़ने से आवास की कठिनाई सामने आती है। क्योंकि बढ़ती जनसंख्या के हिसाब से कृषि योग्य भूमि का आकार सीमित है। परिवार के क्रमश: बढ़ते आकार के साथ खेतों का आकार छोटा होता जाता है।

(च) गाँव के निवासियों की तुलना में शहर के निवासियों की संख्या कहीं अधिक है, क्योंकि गाँव के बहुत से बेरोजगार लोग नौकरी की तलाश में लगातार शहर आते रहते हैं और यहीं रहने लगते है।

**भाषा अध्ययन**

**2.** सरलता — सुन्दरता
सुलभता — स्वच्छता
उदारता — विशेषता

**3.** प्रथम — दिन
समाज — सप्ताह
विज्ञान — इतिहास

**4.**

| विग्रह | | सामस |
|---|---|---|
| परलोक के लिए गमन | — | तत्पुरुष समास |
| रसोई के लिए घर | — | तत्पुरुष समास |
| दाल और भात | — | दूंद्व समास |
| नैत्रों से हीन | — | तत्पुरुष समास |

# 16 कहानी ब्रह्मपुत्र की

## मौखिक

(क) ब्रह्मपुत्र यानि ब्रह्मा का पुत्र, इसलिए इसे देव रूप में माना जाता है।

(ख) ब्रह्मपुत्र नदी तिब्बत में कैलाश पर्वत के चेमयुंगडंग ग्लेशियर से निकलती है। फिर अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है। फिर मेघालय, बांग्लादेश से होते हुए बंगाल की खाड़ी में प्रवेश करती है।

(ग) ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ रागा लैंगयो, शिगात्से तथा क्यी हैं।

(घ) गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा निर्मित डेल्टा सुन्दरवन का डेल्टा है। यह लगभग 50,000 वर्ग मील के क्षेत्र में फैला हुआ है तथा यह विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है।

(ङ) ब्रह्मपुत्र के द्वीपों में सबसे महत्वपूर्ण जोरहाट द्वीप है। यह सांस्कृतिक तथा धार्मिक केन्द्र भी हैं

(च) जमीन का काटना भू–क्षरण कहलाता है।

(छ) ब्रह्मपुत्र घाटी की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, चाय–उद्योग, मत्स्यउद्योग, हस्तकरघा, हस्तशिल्प उद्योग, लकड़ी के व्यापार, तेल एवं प्राकृतिक गैस पर आधारित है।

(ज) तिब्बत को बौद्ध धर्म का केन्द्र कहा जाता हैं

## लिखित

(क) 2900 (ख) तिब्बत (ग) 9,34,990 (घ) प्रथम

(क) ब्रह्मपुत्र को तिब्बत में सैंगपो नाम से, अरुणांचल प्रदेश में दि हांग, असम में ब्रह्मपुत्र, बांगलादेश में जमुना के नाम से जनी जानी जाती है।

(ख) बह्मपुत्र द्वारा लाई गयी मिट्टी से सैडबार, ऑक्सओलेक तथा जोरहाट द्वीपों का निर्माण हुआ है।

(ग) भारत में ब्रह्मपुत्र के तट पर विविध संस्कृतियों की झलक दिखाई पड़ती है। इस क्षेत्र में तिब्बत, मंगोल, आर्य तथा बर्मीज प्रजातियों की झलक देखने को मिलती है। ब्रह्मपुत्र के मैदान में मोम्पा आदि बोडो, मिशिंग जैसी कई जनजातियाँ पायी जाती हैं। यदि धर्म देखा जाये तो हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, सभी प्रमुख धर्मों के अनुयायी इस नदी के तट पर बसे हुए मिलेंगे। भाषाएँ भी यहाँ अनेक बोली जाती हैं—असमिया, बंगला तथा कई जनजातीय बोलियाँ और जहाँ इतनी विविध प्रकार की संस्कृतियों का वास हो, जाहिर है वहाँ त्योहारों, वेश–भूषा पहनावा तथा हस्तशिल्प आदि में भी विविधता होगी।

(घ) ब्रह्मपुत्र के मैदानी इलाकों में बाँस एवं साल के वृक्ष बहुतायत में पाये जाते हैं।

(ङ) 35 से भी अधिक सहायक नदियों के साथ ब्रह्मपुत्र वास्तव में सांस्कृतिक एकता की एक प्रतीक है।

(च) चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार, ब्रह्मपुत्र घाटी में नगरीय सभ्यता उन दिनों काफी विकसित थी। गारो पर्वत के पास फुलवारी नामक स्थान में भी ईसा पूर्व दूसरी सदी के किसी नगर के अवशेष खुदाई के दौरान मिले। लेकिन इस प्रकार के प्राचीन स्मारक हमें इस क्षेत्र में कम ही देखने को मिलते हैं। इसके तीन कारण हैं—ब्रह्मपुत्र में आनेवाली सालाना बाढ़, भू-क्षरण तथा भूकम्प।

**भाषा अध्ययन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **1.** | समृद्धि | पौराणिक | ऐतिहासिक | अर्थव्यवस्था |
| | भू-क्षरण | व्यक्ति | हस्तशिल्प | सांस्कृतिक |

| | | |
|---|---|---|
| **2.** | लचकदार | ममत्व |
| | लोचदार | भ्रातृत्व |
| | चमकदार | अपनत्व |
| | धारदार | स्वामित्व |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **3.** | देव | — | दानव | अर्वाचीन | — | प्राचीन |
| | उत्थान | — | पतन | वरदान | — | श्राप |
| | मधुर | — | कटु | कृतिम | — | प्राकृतिक |
| | पराजित | — | विजयी | आगमन | — | गमन |

# 17 किसान

**मौखिक**

(क) कविता में सर्दी, गर्मी, बरसात ऋतुओं का वर्णन किया गया है।

(ख) कवि ने किसान के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है क्योंकि किसान विभिन्न ऋतुओं में कष्ट सहन करता हुआ प्रसन्नता से अपने कर्त्तव्य का पालन करता है।

(ग) शिशिर ऋतु में किसान के पास वस्त्र नहीं होते हैं। ठण्ड से उसका शरीर काँप जाता है तथा ठण्डी हवा चुभती रहती है।

(घ) किसान ठण्ड की सारी कठिनाइयों को ध्वस्त करके शीत का घमण्ड चूर कर देता है।

(ङ) जिस समय गहन रात होती है, कमल खिले होते हैं तथा तरु-लता और पात नींद में होते हैं, उस समय किसान चारागाह में अपनी भैंसे चराता हुआ मधुर तान छेड़ता है।

**लिखित**

(क) किसान (ख) कृषक (ग) अद्‌भुत (घ) हिम्मत

(क) जिस समय सारा संसार व्याकुल होता है, जब मूसलाधार बारिस हो रही होती है। बिजली चमक रही होती है, उस समय भी किसान में सहने की इतनी शक्ति होती है कि वह घटों तक बैठकर पानी में, धान लगता है।

(ख) ग्रीष्म ऋतु में किसान को गरम हवाओं, कड़ी धूप तथा भूमि जो आग की लपटों का समूह बन जाती है का सामना करना पड़ता है।

(ग) 'है व्याकुल सी हो रही सृष्टि' से कवि का तात्पर्य व्याकुल होने अर्थात् संसार के लोगों के बारिस से व्याकुल होने से है।

(घ) वर्षा ऋतु में हमारी दृष्टि में चकाचौंध तब होती है, जब बिजली चमकती है।

(ङ) 'मूसलाधार वृष्टि' से कवि का तात्पर्य मूसलाधार यानि बहुत तेज बारिश से है।

(च) गहन अन्धेरी रात का वर्णन करने में कवि ने मुरझाये हुये कमल या नींद में तरु, लता-पात के होने की बात कही है।

(छ) (i) भूमि आग की लपटों की तरह आग उगलती है।

(ii) विश्व के सभी लोगों की आँखें बन्द थीं। कमल मुरझाये हुये थे तथा पेड़-पौधे लता पत्ते नींद में थे।

**भाषा अध्ययन**

1. शीत-व्यथा ज्वाल-माल विश्व-दृग विराजात तरु-लता-पात

2.

| | | |
|---|---|---|
| तीर | — तीर से | — तीरों से |
| चश्मा | — चश्मे से | — चश्मों से |
| लाठी | — लाठी से | — लाठियों से |
| कलम | — कलम से | — कलमों से |
| पानी | — पानी से | |

3.
- वर्षा होने लगी
- पानी बरसने लगा।
- वह चल सकता है।
- नीरज खाना खा चुका है।
- मैं पत्थर भी तोड़ सकता हूँ।
- मैं वहाँ जा सकता हूँ।
- अपने कर्मों का दण्ड सबको भोगना पड़ता है।
- वो शर्बत पी चुके हैं।
- वह किताब भी लिख देता है।
- भगवान वरदान दिया करते हैं।
- गरीबों को जीने दो।
- मुझे कुछ काम से जाना पड़ा।

# 18 वनः हमारी अमूल्य सम्पदा

**मौखिक**

(क) वायु, जल, पेड़-पौधे, मिट्‌टी आदि सभी पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं।

(ख) प्राचीन काल में गुरुकुलों की स्थापना वनों में इसलिए की जाती थी ताकि प्रकृति से सम्बन्ध बना रहे।

(ग) प्राचीन ग्रन्थ 'अथर्ववेद में वनों को सुखों का स्रोत', गीता में ईश्वर की विभूति, अग्निपुराण में परिवार की सुख-समृद्धि का आधार, मत्स्यपुराण में एक वृक्ष को दस युगों के बराबर बताया है।

(घ) वृक्षों की जड़ से लेकर तना, शाखाएँ, छाल, फूल, फल, बीज आदि सभी हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं।

(ङ) पेड़-पौधे वातावरण की अशुद्ध एंव हानिकारक वायु को स्वयं पचा लेते हैं और वायु को शुद्ध रखते हैं।

(च) वृक्षों की कमी से वायुमण्डल प्रदूषण बढ़ता है, भूमि अधिक तप्त हो जाती है, भूमि का कटाव होने लगता है।

**लिखित**

(क) मानव (ख) अथर्ववेद (ग) किसान (घ) खेती

(क) प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में वनों के सम्बन्ध में अथर्ववेद में वनों को समस्त सुखों का स्रोत कहा गया है। गीता में श्रीकृष्ण ने वृक्ष को ईश्वर की विभूति कहकर उसका महत्व स्पष्ट किया है। अग्निपुराण में वृक्षों को काटने का निषेध किया है, क्योंकि वे परिवार की सुख-समृद्धि के आधार हैं। मत्स्यपुराण में एक वृक्ष को दस युगों के बराबर बताया गया है।

(ख) वृद्ध किसान का कथन पूर्णत: सत्य था कि वन तथा पेड़-पौधे सम्पूर्ण मानव जाति के लिए धरोहर हैं इसलिए राजा ने किसान को पुरस्कृत किया।

(ग) हरा सोना से तात्पर्य पेड़-पौधों से हैं।

(घ) वनों से हमें कई लाभ हैं; जैसे वन हमारे वातावरण की वायु को शुद्ध रखते हैं। भूमि को अधिक तप्त होने से रोकते हैं। वन उपज का उपयोग गृह-निर्माण, मेज, कुर्सी, दरवाजे खिड़कियाँ, बैलगाड़ी, फर्नीचर, कृषि उपकरण, खिलौने, खेल की सामग्री, वाद्य यन्त्र आदि बनाने में किया जाता है।

(ङ) वृक्षों की जड़ें पानी के तेज बहाव को रोकती हैं, जिससे भूमि-संरक्षण में सहायता मिलती है और मिट्‌टी का कटाव नहीं होता है।

(च) वृक्ष हमारे जीवन को सुखी और सुविधापूर्ण बनाने में अत्यधिक सहायक हैं। ये आँधी तूफान की तेज गति को नियन्त्रित करते हैं। भूमि में आर्द्रता बनाये रखते हैं तथा भूमि को अपनी जड़ों से जकड़कर चट्टानों तथा मिट्टी को खिसकने से रोकते हैं वनों का महत्वपूर्ण कार्य प्रदूषण को रोककर वायुमण्डल का सन्तुलन बनाये रखना है। उपरोक्त लिखे उदाहरणों से पर्यावरण का संरक्षण वनों द्वारा होता है।

**भाषा अध्ययन**

**1.**
- वन परविार की सुख-**समृद्धि** का आधार हैं।
- वन मानव जीवन के निर्वाह हेतु आवश्यक वस्तुओं की **आपूर्ति** के साधन रहे हैं।
- वन भूमि–**संरक्षण** में सहायक हैं।
- वनों के संरक्षण और वृक्षारोपण द्वारा **हरीतिमा** संवर्धन आवश्यक है।
- ''सामाजिक वृक्षारोपण'' कार्यक्रम व्यापक **स्तर** पर चलाया गया है।
- वन पर्यावरण सन्तुलन बनाये रखते हैं।

2. (क) श्री कृष्ण ने वृक्षों को ईश्वर की सम्पदा कहा है।

(ख) वृक्षों से ही हमें फल, फूल, अन्य जीवनोपयोगी वस्तुएँ तथा प्राणदायनी वायु ऑक्सीजन प्राप्त होती है। अत: ये हमारे परिवार की सुख–समृद्धि का आधार हैं।

(ग) पेड़–पौधे हमारे समाज की धरोहर हैं क्योंकि इन्हें एक पीढ़ी अगली पीढ़ी को सौंपती है।

(घ) किसी वृक्ष को लगाने वाला मृत्यु के बाद भी याद किया जाता है। अत: वृक्ष अपने लगाने वाले मनुष्य को मृत्यु के बाद सुदीर्घ काल के लिए यशस्वी बना देते हैं।

**3.** (क) योजना — योजना + अवधि

(ख) सर्वाधिक — सर्व + अधिक

(ग) पुस्तकालय — पुस्तक + आलय

(क) अत्यावश्यक — अति + आवश्यक

(ख) इतयादि — इति + आदि

(क) सूर्योदय — सूर्य + उदय

(ख) नरोत्तम — नर + उत्तम

# 19 शिष्टाचार

## मौखिक

(क) सभ्य आचरण ही शिष्टाचार कहलाता है।

(ख) शिष्टाचार के तीन नियम हैं—पहला विनम्रता, दूसरा जीवन में दखल न देना और उसकी राह में विघ्न बाधायें पैदा न करना। तीसरा है, नियम पालन।

(ग) सौजन्यपूर्ण आचरण व व्यवहार को शिष्टाचार की संज्ञा दी गयी है।

(घ) बड़ों को बुलाने पर हमें 'जी हाँ' या 'जी नहीं' का प्रयोग करना चाहिए।

(ङ) बस अथवा ट्रेन में वृद्ध, महिला, रोगी और अपाहिज को बैठने के लिए स्थान देकर भी हम शिष्ट आचरण का परिचय दे सकते हैं।

(च) यदि कोई व्यक्ति कष्ट या असुविधा उठाकर हमारे लिए कोई काम करता है। तो हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता धन्यवाद देकर प्रकट करनी चाहिए। 'धन्यवाद' शब्द बोलते समय ऐसा लगना चाहिए कि हम उसे हृदय से धन्यवाद दे रहे हैं।

(छ) किसी का नाम लेने या लिखने से पहले श्री, श्रीमान या कुँवारी लगाना शिष्टाचार है।

## लिखित

(क) सभ्य (ख) तीन (ग) विनम्रता (घ) अन्तर

(क) छोटों से बात करते वक्त वाणी में मिठास रखकर हम शिष्टाचार का पालन कर सकते हैं।

(ख) विनम्रता होते हुए हम अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकते हैं। लेकिन दीनता में हमारा स्वाभिमान खतरे में पड़ जाता है। यही अन्तर है, दोनों में।

(ग) किसी दूसरे व्यक्ति के निजी जीवन में दखल देना अशिष्टता होती है। क्योंकि हर व्यक्ति का अपना निजी जीवन होता है और हमें उनके जीवन में दखल नहीं देना चाहिए।

(घ) किसी को धन्यवाद इस प्रकार देना चाहिए कि उसे लगे हम उसे दिल से धन्यवाद दे रहे हैं।

(ङ) भोजन करते समय मुँह से आवाज करना अच्छा नहीं माना जाता। अपने से बड़ों के भोजन समाप्त कर देने पर भी खाते रहना उचित नहीं।

(च) राष्ट्रीय ध्वज को चढ़ाते-उतारते समय हिलना-डुलना, बातें करना या आंखों से संकेत करना राष्ट्रीय ध्वज के प्रति अशिष्टता है।

(छ) विद्यालय में शिष्टाचार के नियम—अध्ययन के समय कक्षा न छोड़ना, बातें न करना, अध्यापक की अनुपस्थिति में कक्षा में शोर न करना, कक्षा और उसके सामान की सफाई करना, अध्यापक के प्रवेश करने पर चुपचाप अपने स्थान पर खड़े होना आदि।

(ज) कभी-कभी थक जाने पर इच्छा होती है कि कुर्सी पर पैर रखकर बैठें या चारपायी पर निढाल होकर पड़े रहें। अन्य लोगों की उपस्थिति में हमें अपनी ऐसी इच्छा को दबा देना चाहिए।

**भाषा अध्ययन**

**1.** छोटों के प्रति — स्नेह
बड़ों के प्रति — आदर
सहायक के प्रति — कृतज्ञता
वाणी में — मिठास
व्यवहार में — विनम्रता

**2.** (क) हमें धन्यवाद देना चाहिए।
(ख) मेहमान के मना करने के बाद नहीं देना चाहिए।
(ग) मुस्कान के साथ उसका स्वागत करना चाहिए।
(घ) जूते-चप्पल उतार कर अन्दर जाना चाहिए।
(ङ) फैलकर या पैर फैलाकर नहीं बैठना चाहिए।
(च) हिलना-डुलना नहीं चाहिए।
(छ) मुँह से आवाज नहीं करनी चाहिए।

**3.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विनम्र | — | कठोर | शिष्ट | — | अशिष्ट |
| संयम | — | अधीर | दीनता | — | सम्पन्नता |
| अनुशासन | — | अनुशासनहीन | मधुर | — | कढ़वा |
| कर्कशता | — | कोमल | कृतज्ञता | — | अकृतज्ञता |

**4.** (क) भीतर (ख) कम (ग) अधिक
(घ) प्रतिदिन (ङ) बाएँ (च) आज

# 20 वरदान

## मौखिक

(क) प्रस्तुत कविता में ईश्वर से ईश्वर को प्रेम करने का वरदान माँगा जा रहा है।

(ख) कविता में प्रियतम ईश्वर को सम्बोधित किया है।

(ग) मनुष्य के जीवन का सर्वश्रेष्ठ धन ईश्वर से प्रेम है।,

(घ) दीन दुखी जन की सेवा कर।
तुम्हें प्रसन्न करूँ जीवन भर।।
प्रेम तुम्हारा ही मेरा धन।
परम मनोहर अतुलित शोभन।।
इस धन की नित धनी रहूँ मैं।
सदा सेविका बनी रहूँ मैं।।

## लिखित

(क) 1207 (ख) ईश्वर (ग) तुम्हारा (घ) तुम्ही

(क) प्रस्तुत कविता में ईश्वर को प्रभु, प्रियतम, ईश्वर आदि नामों से सम्बोधित किया गया है।

(ख) कवयित्री सभी में ईश्वर का रूप इसलिए देखना चाहती है ताकि उसका सारा जीवन सेवामय हो जाये।

(ग) मनुष्य ईश्वर को दीन–दुखी की सेवा करके प्रसन्न कर सकता है।

(क) (i) कवयित्री ईश्वर से एकान्त में मिलने की बात कर रही है।
(ii) कवयित्री कह रही है, जो कुछ भी जीवन में हो सब अच्छा हो।
(iii) प्यारी, मन को मोह लेने वाली, जिसकी तुलना न की जा सके, प्यारी

**1.** प्रति + फल = प्रतिफल प्रति + दिन = प्रतिदिन
प्रति + घात = प्रतिघात प्रति + कार = प्रतिकार

**2.** (क) तुमसे नित एकात्म बोध हो।
सर्व समर्पण बिना रोध हो।।
(ख) सबमें देखूँ रूप तुम्हारा।

सेवामय हो जीवन सारा।।

(ग) दीन दु:खी जन की सेवा कर।
तुम्हें प्रसन्न करूँ जीवन भर।।

# 21 एक 'बालवीर' की डायरी

**मौखिक**

(क) डायरी में दिनचर्या, सप्ताहिक दिनचर्या आदि लिखा जाता है।

(ख) बालवीर ने डायरी 15 जनवरी, 2014 से लिखनी प्रारम्भ की।

(ग) स्काउट में बालक को बालवीर तथा बालिका को बुलबुल कहा जाता है।

(घ) चारों ओर घेरा बनाकर फ्लाक की बैठक की जाती है, उसे जादुई वृक्ष कहते हैं।

(ङ) बालवीर के दो नियम— 1. बड़ों का कहना मानना और 2. स्वच्छता से रहना तथा विनम्रतापूर्वक व्यवहार करना है।

(च) स्काउट गाइड संस्था के जन्मदाता एक अंग्रेज थे, जिनका नाम बेडन पावेल था।

(छ) घर आते वक्त बालवीर ने एक बुढ़िया को सड़क पार करवायी।

**लिखित**

**1.** (क) पिताजी (ख) आज (ग) दोनों (घ) साप्ताहिक

**2.** (क) बालवीर की पहली प्रतिज्ञा थी कि मैं ईश्वर तथा देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करूँगा।

(ख) प्रतिदिन ईश्वर की प्रार्थना, दूसरों की भलाई और बड़ों का सम्मान करके ही ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं।

(ग) सच्चा नागरिक नियमों का पालन करते हुये ईमानदारी और परिश्रम से कार्य करता है।

(घ) बुलबुल तथा बालवीरों के आवश्यक गुण निष्ठा और भलाई हैं।

(ङ) पट्टी बाँधने के लिए रीफ गाँठ का प्रयोग किया जाता है।

(च) फ्लाक की ओर से अतिथि का विशेष अभिवादन ग्रैंड सैल्यूट किया जाता है। विशेष अवसरों पर सम्मानित अतिथियों को इस प्रकार का सैल्यूट दिया जाता है। मुझे यह बहुत अच्छा लगता है। जब आपस में मिलते हैं तब दो अंगुलियों से सैल्यूट करते हैं और बाँया हाथ मिलाते हैं, बहादुरी

तथा परस्पर भाई–चारे की भावना व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

(छ) स्वस्थ रहने के मुख्य नियम हैं—

(i) केवल लाभदायक भोजन खाओ।

(ii) नाक द्वारा स्वच्छ हवा में सांस लो।

(iii) अपने आपको अन्दर और बाहर से साफ रखो।

(iv) अपने आपको मोड़ो, झुकाओगे और दौड़ लगाओ।

**भाषा अध्ययन**

**1.** प्रेमपूर्वक शान्तिपूर्वक धैर्यपूर्वक
निष्ठापूर्वक स्नेहपूर्वक

**2.**
- हमें डायरी में अपने प्रतिदिन की **दिनचर्या** लिखनी चाहिए।
- **परिश्रम** का फल मीठा होता है।
- विशेष **अवसरों** पर सम्मानित अतिथियों को ग्रैंड सैल्यूट दिया जाता है।
- हमें अपने से बड़ों का **सम्मान** करना चाहिए।
- हमें **परस्पर** प्रेमपूर्वक रहना तथा एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए।

**3.**

| **विशेषण** | **विशेष्य** |
|---|---|
| विलुप्त | नदी |
| निर्मल | वाणी |
| अंतर्राष्ट्रीय | स्तर |
| सांस्कृतिक | चरित्र |
| सुंदर | आभूषण |
| मानव | सभ्यता |
| व्यावसायिक | एकाधिकार |

**4.** (क) नीतिज्ञ (ख) विश्वासपात्र (ग) सौम्य
(घ) पठनीय (ङ) दृढ़चित्त

# चाँदनी-7

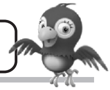

# 1 आ रही रवि की सवारी

**मौखिक**

(1) प्रात:काल

(2) बादलों की तुलना स्वर्ण से की गयी हैं

(3) सूर्य की सवारी आने के कारण तारों की फौज मैदान छोड़कर भाग गयी।

(4) रात में चन्द्रमा राजा होता है, लेकिन सुबह सूर्य के निकलते ही वह छिप जाता है तथा एक भिखारी बन जाता है।

**लिखित**

(क) सूर्य (ख) स्वर्ण की (ग) चन्द्रमा को

(घ) तारों का समूह

(1) पक्षी रवि की सवारी का कीर्ति-गायन गाकर स्वागत करते हैं।

(2) रवि की सवारी का मार्ग कलियों और सुमनों से सजा हुआ है।

(3) अन्तिम छन्द में कवि सूर्य की विजय की बात कर रहा है।

(4) (क) सूर्य के निकलते ही बादलों में पीली रोशनी इस प्रकार फैलती है जैसे कि बादलों ने सोने (स्वर्ण) की पोशाक धारण कर ली हो।

(ख) पक्षी, प्रशंसा के गीत गाने और चारण (भाट) यश का गान कर रहे हैं।

(ग) रात का राजा यानि चन्द्रमा राह का भिखारी बनकर खड़ा है, मतलब कि नजर नहीं आ रहा है।

(5) इस कविता के अनुसार प्रात: काल में कलियाँ खिल जाती हैं। बादलों में पीले रंग की रोशनी फैल जाती है। पक्षी चहकने लगते हैं। तारे और चन्द्रमा छिप जाते हैं।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | |
|---|---|---|
| प्रिय | प्रियतर | प्रियतम |
| अधिक | अधिकतर | अधिकतम |
| दृढ़ | दृढ़तर | दृढ़तम |
| निकट | निकटतर | निकटतम |

**2.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | — | चन्द्रमा | रास्ता | — | मंजिल |
| पक्षी | — | पशु | सोना | — | जागना |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गगन | — | धरती | निशा | — | दिन |
| सेवक | — | मालिक | भिक्षुक | — | दानी |

3. (क) सुमित देहरादून शायद ही जाये।
   (ख) गौतम खूब पढ़ता है।
   (ग) सुशील एकाएक चला गया।
   (घ) वन्दना उधर गयी है।
   (ङ) राजेश, रोहिणी के यहाँ प्रतिदिन जाता है।

## 2 जमीन की भूख

### मौखिक

(1) दीना अपने गाँव के लोगों के व्यवहार से असन्तुष्ट था तथा पास के गाँव में बीस एकड़ भूमि मुफ्त मिल रही थी इसलिए उसने गाँव छोड़ दिया।

(2) दीना दूसरे स्थान पर जमीन प्राप्त करके भी खुश नहीं था क्योंकि वह सोचता था कि उसके पास जमीन और अधिक होती तो, वह और अधिक सुख-सुविधा का जीवन व्यतीत करता।

(3) अधिक जमीन प्राप्त करने के लिए दीना कोलों के क्षेत्र में गया क्योंकि वहाँ जमीन की कमी नहीं थी।

(4) कोलों के क्षेत्र में पहुँचकर दीना ने उनको उपहार देकर प्रसन्न किया।

(5) कोलों के क्षेत्र में दीना ने रात सपने बुनते हुए काटी।

(6) सरदार ने दीना को जमीन का मूल्य हजार रु० प्रतिदिन का बताया।

(7) अन्त में दीना को अपने लिए दो मीटर जमीन की आवश्यकता पड़ी।

### लिखित

(क) अधिक सम्पन्न (ख) सौदागर (ग) दोपहर (घ) व्यर्थ

(1) कोलों के सरदार ने दीना के सामने शर्त रखते हुए कहा कि ''एक दिन पैदल चलकर जितनी जमीन तुम नाप डालो, उतनी ले लो।'' एक दिन का मूल्य एक हजार रू० देना होगा। एक शर्त और है। यदि तुम जहाँ से चले हो, उसी स्थान पर उसी दिन सूर्यास्त से पहले नहीं लौट आओगे तो, तुम्हें जमीन नहीं मिलेगी और तुम्हारा एक हजार रुपया जब्त कर लिया जायेगा।

(2) दीना एक मिनट भी नष्ट नहीं करना चाहता था इसलिए उसने कोलों के द्वारा दी गयी चाय को स्वीकार नहीं किया।

(3) (क) गलत (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत

(4) कोलों का सरदार अपनी जमीन दीना को देने के लिए तैयार हो गया क्योंकि कोल खेती नहीं करते थे, पशुपालन और शिकार ही उनकी जीविका के आधार थे।

(5) दीना लालच की वजह से कोलों के क्षेत्र में जमीन प्राप्त नहीं कर सका। वह सोच रहा था। कि मैं इस जमीन को भी नाप लूँ और इस चक्कर में वह टोपी वाले स्थान पर वापस नहीं पहुँच सका।

(6) दीना के चरित्र की तीन विशेषताएँ मेहनती, गर्वी तथा लालची हैं।

(7) दीना ने अपनी यात्रा पूर्व दिशा की तरफ प्रारम्भ की लगभग 5 km चलने के बाद जब उसने पीछे मुड़कर देखा टेकरी और उस पर खड़े आदमी साफ दिखाई दे रहे थे। उसे खाने की याद आयी पर उसने खाना नहीं खाया। बास्केट उतार कर कंधे पर रख ली जूते कमर में खांस लिये और चलने की गति तेज कर दी। उसने फिर पीछे मुड़कर देखा लोग चींटी की तरह लग रहे थे, उसने सोचा काफी दूर आ गया हूँ अब वापस चलना चाहिए। उसने गड्ढा बनाकर घास का ढेर उस पर रख दिया। खाना खाया और पानी पिया। अब शरीर में नयी जान आ गयी। अब वह वापस मुड़ने ही वाला था। उसे जमीन का एक उपजाऊ टुकड़ा दिखाई पड़ा। उसने सोचा इसे भी नाप लूँ उसने टेकरी की ओर देखा पर वह दिखाई नहीं दी। उसने सोचा बहुत दूर निकल आया हूँ।

सूरज ढलने लगा था। अब वह सीधे टेकरी की ओर चलने लगा। अब दीना इतना थक चुका था आगे चलना कठिन हो रहा था। धूप और गर्मी ने उसकी सारी शक्ति छीन ली। पैरों में छाले पड़ गये, आराम करने का समय नहीं था। उसने जूते चप्पल सब फेंक दिये। बस यही सोच रहा था किसी तरह टेकरी पर पहुँचना है वरना सारी मेहनत व्यर्थ हो जायेगी। अपनी सारी शक्ति समेटकर उसने लम्बी साँस खींची और आँखें मूँदकर टेकरी की ओर दौड़ा। टेकरी के पास वह मुँह के बल गिर पड़ा और चीख निकल गयी। उसके हाथ सरदार की टेकरी पर रखी टोपी तक पहुँच चुके थे।

**भाषा अध्ययन**

**1.**
- वह बहुत खुश था क्योंकि वह प्रथम श्रेणी से पास हो गया था।
- भारत और पाकिस्तान का आपस में मतभेद है।
- रोज भाषण देना उसकी आदत में शामिल हो गया है।

- उसने खुशी से स्वीकार कर लिया कि वह उसकी बेटी है।
- कोलों के लोगों ने दीना का मजाक उड़ाया।

**2.** तन–मन धूम–धाम स्त्री–पुरुष रात–दिन

**3.**

| **विशेषण शब्द** | **संज्ञा शब्द** |
|---|---|
| प्रसन्न | सफेदी |
| रोगी | भलाई |
| कल्पनीय | स्वतन्त्रता |
| सरलतम | अनुकरण |
| नकलची | कठोरता |
| सुखी | दयालुता |

# 3 यात्रा वृतान्तः किन्नौर

**मौखिक**

(1) लेखक ने किन्नौर की यात्रा की है और यह पहाड़ों में स्थित है।

(2) कुछ ही दूर चलने पर घोड़ा इसलिए ठमकने लगा क्योंकि उसकी पीठ कटी थी।

(3) किन्नौर प्रदेश की स्त्रियाँ पहनावे में ऊर्ण साड़ी पहने थीं। यह काफी लम्बा चौड़ा पतला कम्बल होता है, जिसे स्त्रियाँ दाहिना कंधा खोले काँटे से इस प्रकार पहनती हैं कि सिर को छोड़कर सारा शरीर ढक जाता है।

(4) लेखक ने यात्रा के दौरान गौरा के डाक बंगले, सराहन के डाक बंगले में रुककर विश्राम किया।

(5) हमें पाठ में सबसे अच्छा सराहन तथा गौरा का डाक बंगला लगा।

**लिखित**

(क) रामपुर (ख) घोड़े का (ग) तिब्बती
(घ) डाक बंगले में

(1) यात्रा में लेखक ने सामान के लिए खच्चर तथा यात्रा के लिए घोड़े का प्रयोग किया।

(2) थोड़ी दूर चलते ही घोड़ा ठमकने लगा। लेखक ने साथ चलने वाले लड़के से पूछा घोड़े की पीठ कटी तो नहीं, पता चलने पर कि घोड़ी की पीठ कटी है, उसने घोड़े को वापस अस्तबल भेजकर दयालुता का परिचय दिया।

(3) सराहन के डाक बंगले तक पहुँचते-पहुँचते लेखक की हालत ऐसी हो गयी थी कि वह आगे बढ़ तो रहा था पर उसका हर पाँव घंटे पर जान पड़ता था।

(4) खम्पा लोगों को देखकर लेखक के मन में ख्याल आया कि 'इन्हीं की भाँति निर्द्वन्द हो गदहा, खच्चर और तम्बू के लिए एक ही देश से दूसरे देश में घूमूँ। काश! मैं बीस बरस का हो जाता, फिर इसी तरुण से कहता—लो दोस्त! अब मुझे भी अपने परिवार में शामिल कर लो।

(5) देवदारों के घन वनों में चलते समय लेखक के मन में विचार था कि कहीं भालू इधर-उधर से न आ जाये।

(6) वस्पा में अंगूर बारिस की वजह से नहीं लगते थे।

**भाषा अध्ययन**

**2.** बिजली चमकने लगी।

बादल गरजने लगा।

कुत्ते भौंकने लगे।

पक्षी चहचहाने लगे।

बादल गरजने लगे।

कोयल कूँकने लगी।

पानी बरसने लगा।

मेढ़क पानी में कूदने लगा।

**3.**
- थक जाने के बाद हमें थोड़ा **विश्राम** कर लेना चाहिए।
- मनुष्य किसी कार्य को करते-करते उसका **अभ्यस्त** हो जाता है।
- **हिमालय** सबसे बड़ा पर्वत है।
- **खानाबदोश** एक प्रजाति है।
- मैं **निश्चिन्त** था कि वह व्यक्ति मुझे पैसे दे देगा।
- मनुष्य दुनिया में **अकेला** ही आता और अकेला ही जाता है।

**4.** (क) पहाड़ में अकेला खच्चर नहीं ले जाया जा सकता है।

(ख) मालूम हुआ चौकीदार साहब मेला गए हुये हैं।

(ग) सराहन पहाड़ पर नीचे तक काफी ढलवाँ बसा हुआ है।

(घ) हम धीरे-धीरे आगे बढ़े।

# 4 जलाओ दिए

**मौखिक**

(1) कवि इस प्रकार के दिए जलाने के लिए कह रहा है कि अन्धेरा पृथ्वी पर कहीं न रहें। सब जगह उजाला हो।

(2) हमें ऐसे कर्म करने चाहिए कि मुक्ति का द्वार खुल जाये कभी दिन खत्म न हो और रात न आये।

(3) मनुजता पूर्ण तब तक नहीं बनेगी, जब तक लोग एक-दूसरे से लड़ते-झगड़ते रहेंगे और एक-दूसरे के खून के प्यासे रहेंगे।

(4) कवि ने प्रस्तुत कविता में मनुष्य को सम्बोधित किया है।

**लिखित**

(i) जग में उजाला करना (ii) गगन-स्वर्ग को (iii) सुबह के
(iv) इनमें से कोई नहीं

(1) केवल दीपकों के प्रकाश से पृथ्वी का अन्धेरा नहीं मिट सकता क्योंकि दीपक तो केवल बाहर ही उजाला करता है। जब मनुष्य का हृदय साफ होगा, तभी पृथ्वी पर अन्धेरा मिटेगा।

(2) जब मनुष्य दिए का रूप ले लोगा, तब पृथ्वी का अन्धेरा दूर होगा।

(3) इस कविता में कवि हमें सन्देश देना चाहता है कि हमें अपने मन को भ्रातृभाव, समता, न्याय, त्याग और दया के प्रकाश से प्रकासित करना चाहिए।

(4) (क) रोशनी इतनी होनी चाहिए कि रात की गली में अन्धकार भी रास्ता भूल जाये।

(ख) जब मनुष्य स्वयं को भ्रातृत्व, समता, न्याय, त्याग और दया के प्रकाश से प्रकाशित कर लेगा, तभी संसार से अन्धकार खत्म हो जायेगा।

**भाषा अध्ययन**

1.

| संयुक्त वर्ण | आधा व्यन्जन | पूर्ण व्यन्जन | उदाहरण |
|---|---|---|---|
| ज्ञ | ज़् | ञ | ज्ञान |
| द्य | द् | ध | विद्या |
| त्र | त् | र | त्रिशूल |
| क्त | क् | त | विशाक्त |
| श्र | श् | र | श्रमिक |

2. (क) असामान्य (ख) साप्ताहिक (ग) शताब्दी
(घ) अन्जान (ङ) आकस्मित

3. रोशनी — प्रकाश, उजाला, दीप्ति
रात्रि — रात, निशा, रजनी
उषा — सुबह, भोर, प्रातः
गगन — आकाश, बादल, नभ
धरती — पृथ्वी, धरा, वसुन्धरा

# 5 ताँबे का सिक्का

**मौखिक**

(1) शरद खुश इसलिए था कि पहली बार बाबूजी उसे कहीं घुमाने ले जा रहे थे।
(2) प्रदर्शनी के बाद शरद के बाबूजी शरद को 'गेट वे ऑफ इंडिया' ले गये।
(3) फुटपाथ पर बैठी महिला पीतल, ताँबे, जस्ते और एल्युमिनियम के सिक्के बेच रही थी।
(4) जब शरद उदय के घर गया तो, वह फ्रांस के महान उपन्यासकार अलेक्जेंडर ड्यूमा की अमर कृति 'तीन तिलंगे' पढ़ रहा था।
(5) ताँबे का सिक्का 168 वर्ष पुराना था।
(6) उदय शरद को अखबार लेकर यह दिखाने आया था कि उसने प्रतिष्ठित 'चतुरंग मुम्बई शतरंज जूनियर चैम्पियनशिप' जीती है।

**लिखित**

(क) बाबू जी के साथ (ख) गेटवे ऑफ इण्डिया
(ग) जार्ज पंचम (घ) सिक्के

(1) शरद बाबू जी के साथ उनके मित्र मणिशंकर जी के यहाँ तेल के चित्रों की प्रदर्शनी देखने गया था।
(2) 'गेटवे ऑफ इण्डिया' का नाम सुनते ही शरद खुशी से उछल पड़ा क्योंकि इस ऐतिहासिक स्मारक को प्रत्यक्ष रूप से देखने की उसकी प्रबल इच्छा थी।
(3) 'गेटवे ऑफ इण्डिया' का निर्माण जार्ज विटेट द्वारा ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम और रानी मेरी के भारत आगमन पर उनके स्वागत हेतु 2 दिसम्बर सन् 1911 में करवाया गया।

(4) सिक्का पाकर शरद खुश था क्योंकि उसको लग रहा था कि मानो उसे कुबेर का खजाना मिल गया हो।

(5) सिक्का खो जाने पर शरद ने कल्पना की कि पुराना सिक्का होने के कारण सम्भव है, उसमें कोई जुदाई शक्ति होगी इसलिए स्वत: ही बंद डिब्बे से गायब हो गया।

(6) सिक्का खो जाने पर शरद को उदय पर शक इसलिये हुआ कि उसे पता चला कि एक दोपहर जब वह घर पर नहीं था, तब उपन्यास लौटाने उदय आया था और बिना कुछ बोले जल्दी चला गया था।

(7) शरद ने अपनी गलती का पश्चाताप उदय से माफी माँगकर तथा उसे सैकड़ों वर्ष पुराने ईस्ट इण्डिया के सिक्के को भेंट देकर किया। उसे अपनी मित्रता के सामने सब दुर्लभ लगने लगा था।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

- एकटक देखना
  शरद सिक्के को लगातार **एकटक देखता** रहा
- तारीफों के पुल बाँधना
  वह अपने मित्र की लिखावट पर **तारीफ के पुल बाँध** रहा था।
- तल्लीन होना
  उदय किताब पढ़ने में **तल्लीन हो गया** था।
- दबे पाँव चलना
  शरद ने **दबे पाँव चलकर** उदय के हाथ से किताब छीन ली।
- मसरुफ होना
  उदय किताब पढ़ने में **मसरुफ** था।
- बवाल मचा देना
  कुछ दिनों बाद शरद ने घर में **बवाल मचा दिया**।
- आपे से बाहर होना
  शरद का सिक्का खो जाने के कारण वह **आपे से बाहर हो गया**।।
- पैर जमाना
  ब्रिटिश सरकार ने भारत में **पैर जमाये** थे।
- टस से मस न होना
  बुढ़िया सिक्के के दाम में **टस से मस न हुई**।

2. (क) बाबू जी ने शरद से (ख) बुढ़िया ने शरद से
(ग) उदय ने शरद से (घ) उदय ने शरद से
(ङ) बाबू जी ने शरद से

4.
| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| निषेध | + | आत्मक | — | निषेधात्मक |
| विचार | + | आत्मक | — | विचारात्मक |
| शिक्षा | + | आत्मक | — | शिक्षात्मक |
| भावना | + | आत्मक | — | भावनात्मक |

# 6 छोटा गाँधी

## मौखिक

(1) चिंटू और सुमित स्कूल के मैदान में बड़े बरगद के पेड़ के नीचे मिलते थे।
(2) सुमित विजयवाड़ा के सेन्ट्रल स्कूल में पढ़ता था।
(3) सुमित जब स्कूल में नया आया था तो वह अजूबा जैसा दिख रहा था। दुबई से आने के कारण उसके कपड़े अलग थे। वह स्मार्ट लग रहा था इसलिए बच्चे उससे कतरा रहे थे।
(4) कुष्ठ रोग एक प्रकार की संक्रमित बीमारी है, जो बैक्टीरिया के कारण फैलती है।
(5) डॉ० कुमार ने चिंटू को एम०डी०टी० का टीका लगाया।
(6) चिंटू ने स्वयं को छूने से सुमित को इसलिए मना किया क्योंकि उसे लगता था कि छूने से यह कुष्ठ रोग की बीमारी उसे भी लग जायेगी।
(7) दो अक्टूबर गाँधी जयन्ती के अतिरिक्त, कुष्ठ रोग विरोधी दिन के रूप में भी मनाते हैं।

## लिखित

(क) मित्र (ख) एम०डी०टी०

(1) चिंटू के दोस्त चिंटू का पता सुमित को बताने से इसलिए कतरा रहे थे क्योंकि उसे कुष्ठ रोग की बीमारी हो गयी थी।
(2) चपरासी ने सुमित से चिंटू के बारे में कहा कि 'क्या जानना चाहते हो उस कोढ़ी के बारे में''?
(3) चिंटू को स्कूल आने से इसलिए मना कर दिया गया था क्योंकि उसे कुष्ठ रोग हो गया था तथा स्कूल में सब यही सोचते थे कि यह रोग छूने से फैलता है।

(4) सुमित को कुष्ठ रोग के बारे में जानकारी इंटरनेट से मिली है।

(5) चिंटू जब स्कूल से घर आया तो उसके पैर से खून बह रहा था और उसे पता भी नहीं था। न कुछ महसूस हो रहा था। न उसे दर्द हो रहा था, न कुछ महसूस हो रहा था। डॉक्टर के पास ले जाने पर उसने सुई चुभोकर देखा उसे चुभन भी महसूस नहीं हुई तथा उन्होंने बताया कि उसे कुष्ठ रोग हो गया है तभी चिंटू को पता चला कि उसे कुष्ठ रोग है।

(6) डॉ० कुमार ने विद्यालय में आकर बच्चों को बताया कि जो आप कोल्हापुरी या दूसरे तरह की चमड़े की चप्पल पहनते हैं, व बाबा आमटे, शिवाजी राव पटवर्धन तथा अन्य लोगों के आश्रम में जिन कुष्ठ रोगियों का इलाज किया गया। उन्होंने बनायी हैं, वे चप्पलें। क्या आपको यह रोग हुआ नहीं? कुष्ठ रोग एक से दूसरे को नहीं होता, न वह माता-पिता से बच्चों में आता है? यह एक बैक्टीरिया से होता है।

(7) पाठ में छोटा गांधी सुमित को कहा गया है।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निश्चल | — | नि | उपसर्ग | — | साफ-सुथरा |
| विशेषता | — | वि | उपसर्ग | — | खूबी |
| दुष्कर्म | — | दु | उपसर्ग | — | बुरा कर्म |
| दुर्दशा | — | दु | उपसर्ग | — | बुरी दशा |
| निरुत्तर | — | नि | उपसर्ग | — | जिसका उत्तर न हो |
| विरक्त | — | वि | उपसर्ग | — | अलग |
| नि:स्वार्थ | — | नि | उपसर्ग | — | जिसमें स्वार्थ न हो |
| विभाग | — | वि | उपसर्ग | — | खंड |
| विपक्ष | — | वि | उपसर्ग | — | दूसरा पक्ष |
| निर्जन | — | नि | उपसर्ग | — | एकान्त |

(क) वीरेन्द्र ने बस पकड़ी, स्कूल पहुँचा, उपस्थिति लगवाई, फिर कक्षा में गया।

(ख) ओह! यशवन्त के भाई को चोट लग गयी।

(ग) डॉ० रमेश के माता-पिता, भाई-बहन और सगे सम्बन्धी उत्सव में सम्मिलित हुए।

(घ) नशा स्वास्थ्य और शरीर को नष्ट कर देता है। इससे बचना चाहिए।

(ङ) श्री मदनगोपाल ने कहा था, ''हम स्वतन्त्रता के लिए प्राण तक दे देंगे''।
(च) काश! सर्वेश अच्छे अंक ले आता।

3.

| व्यक्तिवाचक संज्ञा | जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|---|
| रामगोपाल, ईटानगर | पहाड़, कक्षा | माधुर्य, अहंकार |
| अरहर, न्यूयार्क | मानव, पुस्तक | निकटता, दूरी |
| मनजीत, प्याज | बूढ़ा, पण्डित | |
| | सोना | |

# 7 झाँसी की रानी की समाधि पर

**मौखिक**

(1) रानी की समाधि में दिव्य राख की ढेरी छिपी है।
(2) रानी की समाधि को लघु समाधि कहा गया है।
(3) रण में बलिदान होने से वीरों का मान इसलिए बढ़ता है क्योंकि देश उनका सम्मान करता है।
(4) हमें रानी की समाधि रानी से भी अधिक प्यारी इसलिए लगती है क्योंकि यहाँ स्वतन्त्रता की आशा की चिंगारी छिपी है।

**लिखित**

(क) अ और ब दोनों (ख) समाधि
(ग) रानी की समाधि में (घ) कवियों द्वारा

(1) 'रानी की समाधि में स्वतंत्रता की आशा की चिंगारी छिपी है' ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि रानी एक स्वतन्त्रता सेनानी थीं तथा उनकी समाधि में जाने पर लोग देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत हो जाते हैं।
(2) रानी की समाधि में स्वतन्त्रता की चिंगारी छिपी हैं जबकि अन्य समाधियों पर आधी रात को छोटे जीव-जन्तु ही गाते हैं। रानी की समाधि की गाथा तो सारा संसार गाता है।
(3) रानी की समाधि एक स्वतन्त्रता सेनानी की समाधि है तथा जो हमें राष्ट्रभक्ति, प्रेम और बलिदान की कहानी सुनाती है। जबकि अन्य समाधियाँ साधारण समाधियाँ हैं।
(4) झाँसी की रानी का नाम इसलिए अमर है क्योंकि उन्होंने देश के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी थी।

(5) (क) कवि रानी लक्ष्मीबाई के बारे में कहता है कि वह यहीं कहीं मोतियों की माला की तरह बिखर गयी तथा उनकी अस्थियों के फूल, उनकी याद के रूप में उनकी समाधि में संचित हैं।

(ख) रानी रणभूमि में वार-सहती गयी, जब तक उनके शरीर में प्राण थे तथा जिस प्रकार हवन में आहुति दी जाती है, उसी प्रकार के आहुति की तरह चिता पर चढ़ गयीं तथा ज्वाला सी चमक गयी।

**भाषा अध्ययन**

**1.** वाणी — गिरा    संचित — एकत्र

रण — युद्ध    स्वतंत्र — स्वाधीन

कहानी — गाथा    राख — भस्म

**2.** (क) साहसी   (ख) बलिदानी   (ग) लौह पुरुष   (घ) योद्धा

| संज्ञा शब्द | सर्वनाम शब्द | विशेषण शब्द | क्रिया शब्द |
|---|---|---|---|
| देवता | आप | पीला | खेलता |
| पुस्तक | हमने | सुन्दर | रंगता |
| केशव | उसने | कम | पढ़ता |
| जहर | तुम | जहरीला | |
| गाँव | मैं | सुन्दर | |
| बकरी | | देवत्व | |
| खेल | | मीठा | |
| रंग | | | |
| टोकरी | | | |
| दिल्ली | | | |

# 8 शहीद भगतसिंह के पत्र

**मौखिक**

(1) पिता का पत्र पढ़कर भगतसिंह को दुख और आश्चर्य हुआ कि जब आप जैसे तपे हुए देशभक्त और धीर पुरुष भी छोटी-छोटी बातों से विचलित हो सकते हैं तो, सामान्य पुरुष की बात ही क्या है?

(2) भगत सिंह ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उनके वहाँ रहने से उन्हें बार-बार तरह-

तरह से शादी के लिए विवश किया जाता।

(3) भगत सिंह की जेल में माँ से भेंट नहीं हो सकी क्योंकि उन्हें मुलाकात की इजाजत नहीं मिली।

(4) भगत सिंह ने जीने की इच्छा प्रकट करते हुए कहा—कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सके, अगर स्वतन्त्र जिन्दा रह सकता, तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता।

(5) फाँसी पर चढ़ने से पहले भगत सिंह ने अपने ऊपर गर्व किया क्योंकि वे अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझते थे।

**लिखित**

(क) विवाह के कारण (ख) क्रान्ति (ग) दुःख (घ) गर्व

(1) भगत सिंह विवाह के बंधन में इसलिए नहीं बँधना चाहते थे क्योंकि वो देश के लिए कुछ करना चाहते थे।

(2) भगत सिंह जी के भाई कुलवीर सिंह को यह पता था कि जेल में मुलाकात की इजाजत नहीं मिलती, फिर भी वह माँ जी को साथ लाये थे इसलिए भगत सिंह ने पत्र में लिखा था कि ''फिर माँ जी को साथ क्यों लाये?

(3) भगत सिंह जी ने अपने भाई को सुझाव दिया कि सभी साहस से हालात का मुकाबला करें।

(4) भगत सिंह के मन में देश और मानवता के लिए जो हसरतें थीं, वह उन्हें पूरा करना चाहते थे।

(5) भगत सिंह के चरित्र की चार विशेषताएँ, देशभक्त, बलिदानी, साहसी, धैर्यवान हैं।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) सफेद–काला (ख) पास–पास (ग) भक्ति–रस
(घ) काला–सा (ङ) छोटे–से–छोटा

**2.** विचलित — भगतसिंह के जेल में होने की बात सुनकर उनकी माँ बहुत **विचलित** थीं।

धृष्टता — भगत सिंह ने अपनी **धृष्टता** के लिए अपने पिता से क्षमा माँगी।

इजाजत — जेल में मुलाकात की **इजाजत** नहीं मिली।

प्रतीक — भगत सिंह **क्रान्ति** के प्रतीक बन गये थे।

आरज़ू — भगत सिंह देश और मानवता के लिए कुछ करना चाहते थे। यह उनकी **आरज़ू** थी।

सौभाग्यशाली — भगत सिंह अपने आपको **सौभाग्यशाली** समझते थे कि उन्हें देश के लिए कुछ करने का मौका मिला।

हसरत — भगतसिंह स्वतन्त्र और जिन्दा रहते तो, वह अपनी हसरतों को पूरा करना चाहते थे।

**3.** बेइन्साफी प्रकाश

बेकार प्रणाम

बेगैरत प्रमाण

# 9 प्रदूषण और पर्यावरण

## मौखिक

(1) जब पर्यावरण में विषैले तत्वों का समावेश हो जाता है, तो उसमें निहित एक या अधिक तत्वों की मात्रा अपने निश्चित अनुपात से बढ़ जाती है। इसे ही पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है।

(2) प्रदूषण मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं। वायु जल तथा ध्वनि प्रदूषण।

(3) वायुमण्डल में अधिकांशत: नाइट्रोजन और ऑक्सीजन गैस विद्यमान रहती हैं।

(4) कीटनाशकों का मनुष्य के स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव पड़ता है।

(5) जल सभी प्राणियों के जीवन के लिए अनिवार्य पदार्थ है। पृथ्वी पर बिना जल के जीवन सम्भव नहीं है।

(6) पर्यावरण के सम्बन्ध में निम्न संस्कार प्रचलित हैं—

(i) पेड़ों को लगाना सदा पुण्य का काम माना जाता है।

(ii) नारियाँ भी पीपल, बरगद, आम, नीम, बेल, जामुन, आँवला जैसे उपयोगी वृक्ष को लगाना महान धार्मिक कृत्य मानती हैं।

(iii) पेयजल–स्रोतों के निकट या तटों पर मल–मूत्र त्याग पापकर्म माना गया है।

## लिखित

(क) परि + आवरण (ख) अवांछनीय परिवर्तन

(ग) वायु प्रदूषण (घ) ईंधनों

(1) जल प्रदूषण जीवाणु, विषाणु, कल कारखानों से निकले हुये वर्जित पदार्थ, कीटनाशक पदार्थ व रासायनिक खाद्य से हो सकता है।

(2) वायु प्रदूषण श्वसन, अपघटन और सक्रिय ज्वालामुखियों से उत्पन्न गैसों के अतिरिक्त, हानिकारक गैसों की सर्वाधिक मात्रा मनुष्य के कार्य-कलापों द्वारा उत्पन्न के द्वारा होता है।

(3) जल प्रदूषण से पीलिया, आँतों के रोग व अन्य संक्रामक रोग हो जाते हैं।

(4) ध्वनि प्रदूषण से श्रवण, ह्रास तथा मस्तिष्क पर घातक प्रभाव जैसी हानिकारक बीमारियाँ होती हैं।

(5) पेड़-पौधे वायुमण्डल की अशुद्ध वायु का अवशोषण कर शुद्ध वायु ऑक्सीजन को बाहर निकालते हैं। जिससे वायुमण्डल में सामन्जस्य बना रहता है।

(6) प्रदूषण से बचने के लिए निम्नलिखित उपायों पर अम्ल करना चाहिए—
- वृक्षारोपण का कार्यक्रम तेजी से चलाया जाये और भारी संख्या में नये वृक्ष लगाए जायें।
- वनों के विनाश पर रोक लगायी जाये।
- बस्ती व नगर के समस्त वर्जित पदार्थों के निस्कासन के लिए सुदूर स्थान पर समुचित व्यवस्था की जाए।
- बस्ती व नगर में स्वच्छता व सफाई की ओर ध्यान दिया जाये।
- पेय जल की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया जाये।
- परमाणु विस्फोटों पर पूर्णत: नियन्त्रण लगाया जाये।

(7) निम्न पंक्तियों में कवि का भाव है कि जब पृथ्वी प्रदूषण मुक्त होगी, तब वायु शीतल, सुन्दर और शहद की तरह मीठी और सुख देने वाली होगी।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) अवांछनीय परिवर्तन (ख) निश्चित (ग) श्रवण शक्ति
(घ) विरासत (ङ) भारतीय संस्कृति (च) पापकर्म

**2.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कीटाणु | — | कीट + अणु | कदापि | — | कदा + अपि |
| पर्यावरण | — | परि + आवरण | उत्तरार्द्ध | — | उत्तर + अर्थ |
| यातायात | — | यात + आयात | जलाशय | — | जल + आशय |
| जीवनधारा | — | जीवन + धारा | देवालय | — | देव + आलय |

**3.** पूर्वार्द्ध — उत्तरार्द्ध    कुप्रभाव — सुप्रभाव

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शुद्ध | — | अशुद्ध | असम्भव | — | सम्भव |
| असन्तुलन | — | सन्तुलन | जैविक | — | अजैविक |
| अतिवृष्टि | — | अनावृष्टि | सक्रिय | — | अक्रिय |
| अनिवार्य | — | अनावश्यक | हानिकारक | — | लाभदायक |

# 10 अन्धेर नगरी

**मौखिक**

(1) कुंजड़िन ने गोबर्धन को भाजी का मूल्य टके सेर बताया।

(2) नगर को अन्धेर नगरी इसलिए कहा गया है क्योंकि वह मूर्खों का नगर था तथा वहाँ न्याय ढंग से नहीं होता था।

(3) भीख में मिले पैसों से गोबर्धन दास ने साढे तीन सेर मिठाई ली।

(4) फरियादी राजा के पास फरियाद लेकर आया कि महाराज कल्लू बनिए की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गयी। सो न्याय हो।

(5) राजा के सिपाही गोबर्धन दास को फाँसी देने के लिए पकड़कर ले जाते हैं क्योंकि कोतवाल जिसको फाँसी का हुक्म हुआ था उसके लिए तैयार फाँसी का फन्दा बड़ा था तथा कोतवाल दुबला जबकि गोबर्धन दास मोटा था। और किसी मोटे आदमी को फाँसी देनी थी।

**लिखित**

(क) पश्चिम की ओर (ख) अनबूझ राजा

(ग) सात (घ) राजा

(1) महन्त अन्धेर नगरी को छोड़कर इसलिए चला गया क्योंकि वहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता था।

(2) शिष्य अपने गुरु के साथ नहीं लौटा और उसने कहा कि गुरुजी, मैं तो इस नगर को छोड़कर नहीं जाऊँगा, जगह-जगह दिन भर माँगो तो भी पेट नही भरता। मैं तो यहीं रहूँगा।

(3) सिपाही गोबर्धन दास को फाँसी देना चाहते थे क्योंकि कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब उसे फांसी देने को ले गये तो फाँसी का फन्दा बड़ा निकला क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज की। इस पर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो। बकरी मरने के अपराध में किसी न किसी को तो सजा होना जरूरी है। और गाबर्धन दास मोटा था।

(4) गोबर्धन दास ने मुसीबत में अपने गुरु को याद किया। गुरु जी ने सारी बात सुनने के बाद गोबर्धन के कान में कुछ कहा, उसके बाद गुरुजी बोले, मैं फाँसी चढ़ूँगा

और शिष्य बोला मैं चढ़ूँगा। इस बात पर बहेश होने लगी तो राजा और मन्त्री वहाँ आ गये। राजा के पूछने पर गुरु जी ने बताया कि इस समय ऐसी शुभ घड़ी है, जो मरेगा सीधा स्वर्ग जायेगा और मूर्ख राजा ने स्वर्ग जाने के लालच में खुद को फाँसी लगवा ली। और गोबर्धन दास की जान बच गयी।

(5) इस एकांकी में नगरी, राजा, भाजी और खाजा (मिठाई) पर व्यंग्य किया है।

(6) हमारे अनुसार बकरी मरने का दोषी कोई नहीं है, ये तो अचानक दीवार गिर गयी जो केवल एक दुर्घटना थी।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) भिक्षा (ख) साढ़े तीन सेर
(ग) अनबूझ, खाजा (घ) सीधा स्वर्ग

**2.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुन्दर | — | नगर | टका सेर | — | भाजी |
| चौपट | — | राजा | अन्धेर | — | नगरी |
| बड़ी | — | भेड़ | शुभ | — | घड़ी |

**3.**

| | | |
|---|---|---|
| दीवार | गणरिये | हुज्जत |
| गोवर्धनदास | फाँसी | महन्त |
| शिष्य | | |

# 11 सूर के पद

**मौखिक**

(1) सूरदास के अराध्य देव नन्दनन्दन श्रीकृष्ण हैं।

(2) भक्त पक्षी के रूप में भगवान से प्रार्थना करता है कि हे भगवान मेरी रक्षा करो शिकारी ने मुझ पर बाण से निशाना साध रखा है तथा अगर मैं उड़ना चाहूँ तो ऊपर बाज मुझ पर घात लगाये बैठा है।

(3) भक्त श्री कृष्ण को छोड़कर अन्य किसी देवताओं की प्रीति इसलिए नहीं करना चाहता क्योंकि कोई प्यासा परम गंगा को छोड़कर कुआँ नहीं खुदवाता और न ही कोई भौरा जिसने कमल का रस चख लिया हो, वह करेले के फल का रस नहीं लेता है ठीक उसी प्रकार जिसने श्री कृष्ण की भक्ति का रस चख लिया हो, वह अन्य किसी देवता से प्रीत क्यों करेगा?

(4) सूरदास को किसी भी प्रकार से सुख इसलिए नहीं मिलता था क्योंकि उनका मन सदैव ईश्वर की भक्ति में लीन रहता था। इसमे आने वाला किसी भी प्रकार का

व्यवधान उन्हें कलेश प्रदान करता था।

(5) सूरदास जी श्री कृष्ण के चरणों की वन्दना इसलिए करना चाहते हैं कि श्री कृष्ण के चरणों की वन्दना से लंगड़ा पर्वत को पार कर लेता है, अंधे को सब कुछ दिखने लगता है, बहरा सुनने लगता है, गूँगा बोलने लगता है तथा गरीब सिर पर छत्र रखकर चलता है अर्थात् राजा बन जाता है।

**लिखित**

(क) श्री कृष्ण (ख) पक्षी (ग) भौंरे के फूल के प्रति

(घ) श्री कृष्ण

(1) भगवान ने संकट में फँसे पक्षी की सहायता की कि जो शिकारी उस पर बाण साधे खड़ा था, उसको सांप ने डस लिया तथा उसके हाथ में जो बाण था वह जाकर बाज को लग गया।

(2) सूरदास ने पक्षी की तुलना अपने मन से करते हुए कहा है कि जिस प्रकार जहाज में बैठा पक्षी उड़कर सब जगह घूमने के बाद फिर जहाज में वापस आता है, उसी प्रकार मेरा मन सब जगह घूम फिर कर, फिर श्री कृष्ण की भक्ति की तरफ लौट आता है।

(3) ईश्वर की कृपा से अन्धा देखने लगता है तथा लंगड़ा व्यक्ति पर्वत पार कर जाता है।

(4) प्रभु की कृपा से भिखारी सर पर छत्र रखकर राजा बन जाता है।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) जिहिं मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील-फल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।।

(ख) बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौं तिहिं पाइ।।

**2.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्यासा | — | पिपासा | कूप | — | कुआँ |
| चरन | — | चरण | पंच्छी | — | पंक्षी |
| करुणा | — | करुना | लग्यौ | — | लगी |
| दुरमति | — | दुर्मति | फिरि | — | फिर |

# 12 जमशेद जी नसरवान जी टाटा

**मौखिक**

(1) जमशेद जी टाटा का नाम सूती वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में लिया जाता है।

(2) जमशेद जी टाटा का जन्म सन् 1839 ई० को नवसारी (गुजरात) के एक पारसी परिवार में हुआ था।

(3) जब जमशेद जी का जन्म हुआ था, तब भारत अंग्रेजों के शासन में था। देश में शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं थी। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। 13 वर्ष की अवस्था में इनके पिता इन्हें मुम्बई ले गये। वहाँ स्थानीय पुरोहितों के पास शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद जमशेद जी एल्टिंस्टन के कॉलेज में भर्ती हुये। अभी कॉलेज में अध्ययन चल ही रहा था कि हीराबाई नाम की कन्या से उनका विवाह हो गया।

(4) जमशेद जी टाटा ने अपने व्यापार की शाखाएँ लन्दन और नागपुर में खोलीं।

(5) कारलाइल की बात ''जिस देश का लोहे पर नियन्त्रण हो जाता है, उसका शीघ्र ही सोने पर भी नियन्त्रण हो जाता है'' टाटा के मन में बैठ गयी।

(6) महारानी विक्टोरिया भारत की मलिका सन् 1877 में घोषित की गयीं।

(7) जमशेद जी टाटा के दोनों पुत्रों के नाम दोराब जी टाटा और रतन जी टाटा थें।

**लिखित**

(क) देशभक्त

(ख) 1839 ई० के गुजरात

(ग) दोनों (अ) और (ब)

(घ) सन् 1911

(1) जमशेद जी टाटा का नाम सूती वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में लिया जाता है।

(2) जमशेद जी टाटा को भारत में सूती वस्त्रोद्योग का जन्मदाता कहा जाता है क्योंकि उन्होंने भारत से कपास के निर्यात तथा मैनचेस्टर और लंकाशायर से कपड़े के आयात का अध्ययन किया और भारत में नागपुर में एक सूती मिल 1877 में लगायी तथा भारत में सूती कपड़ा बनाना शुरू हो गया। इसलिय उन्हें सूती वस्त्र उद्योग का जन्मदाता कहा जाता है।

(3) जमशेद जी टाटा की आरम्भिक स्थिति अच्छी नहीं थी, उनके सामने अनेक कठिनाइयाँ थीं। उनके आरम्भिक जीवन में अंग्रेजों का शासन था। पढ़ाई की समुचित व्यवस्था नहीं थी।

(4) जमशेद जी ने कारलाइल के भाषण को सुनने के बाद सूती वस्त्र उद्योग और लौह उद्योग की योजनाएँ बनाईं, फिर उन्हें साकार किया। इससे उनकी दृढ़ता का तथा फिर उन्होंने अपने पिता के व्यवसाय को आगे बढ़ाया। उससे उनकी इमानदारी

का तथा उसके बाद उन्होंने वस्त्रोद्योग के लिए नागपुर का चयन किया, इससे उनकी दूरदर्शिता का परिचय मिलता है।

(5) टाटा ने सूती मिल के लिए नागपुर का ही चयन इसलिए किया क्योंकि वहाँ कच्चे माल की सुलभता, बाजार की निकटता और कोयला तथा पानी की सुलभता थी।

(6) जमशेद जी टाटा की मृत्यु, 1904 ई० में हुई। जीवन के अन्तिम क्षणों में उन्होंने अपने पुत्रों से कहा—"यदि तुम लोग इन कार्यों का अधिकतर विस्तार न कर सको, तो कम से कम उन्हें सुरक्षित अवश्य रखना, किसी कार्य की उपेक्षा न करना। मैंने जो भी कार्य आरम्भ किये हैं, उनमें वृद्धि करते चले जाना और यदि तुम ऐसा न कर सको, तो कम से कम जो सफलताएँ, हम प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें हाथ से न गवाँ बैठना।"

(7) जमशेद जी टाटा के पुत्रों ने पिता द्वारा शुरू की गयी। योजनाओं को न केवल सुरक्षित रखा, वरन् उन्हें पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ाया।

(8) मजदूरों के कल्याण के लिए टाटा ने अनेक कल-कारखानों, मिलों और उद्योग धन्धों का निर्माण किया।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अच्छा | — | भला | अपना | — | पराया | अपना | — | अपना |
| काम | — | काज | आया | — | गया | राम | — | राम |
| घर | — | गृहस्थी | सीधा | — | उल्टा | सीधा | — | सीधा |
| रुपया | — | पैसा | आगे | — | पीछे | हरे | — | हरे |
| चाँद | — | तारे | ऊपर | — | नीचे | कृष्णा | — | कृष्णा |
| भजन | — | संध्या | अनुलोम | — | प्रतिलोम | राधे | — | राधे |

**2.**

- धाक जमाना—**रौब जमाना**
  बाजार में उसने अपनी धाक जमा रखी है।
- खुशी का ठिकाना न रहना—**बहुत खुश होना**
  आज उसकी खुशी का ाठकाना नहीं था क्योंकि वह पास हो गया था।
- हाथ से न गँवाना—**मौका न जाने देना।**
  मैं इतनी अच्छी नौकरी हाथ से नहीं जाने देना चाहती।
- अक्ल ठिकाने लगना—**अपनी गलती समझ में आना**
  आज उसकी अक्ल ठिकाने लग गयी।

- एड़ी से चोटी तक—**बहुत मेहनत करना**
  उसने सफलता प्राप्त करने के लिए एड़ी से चोटी तक मेहनत की।
- दाल न गलना—**युक्ति न चलना**
  मैंने बहुत कोशिश की लेकिन मेरी दाल नहीं गली।

**3.** **वाक्य पूर्ति–**

(क) सूती वस्त्र उद्योग (ख) कपास

(ग) स्नेह (घ) नागपुर

**4.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| औद्योगिक | — | उद्योग + इक | वैज्ञानिक | — | विज्ञान + इक |
| व्यावहारिक | — | व्यवहार + इक | नागरिक | — | नगर + इक |
| नैतिक | — | नीति + इक | आर्थिक | — | अर्थ + इक |

# 13 हल्दी घाटी

**मौखिक**

(1) विजय दशमी के पर्व पर राजदूत विजय अभियान पर निकलते थे और शिकार करते थे।

(2) शिकार पर जाते वक्त उनके हाथ से तलवार गिर गयी और बायें अंग फड़कने लगे।

(3) शिकार खेलते समय शक्तिसिंह ने उछलकर अपने बरछे से उस पर वार किया लेकिन सिंह का कुछ न बिगड़ा, तभी राणाप्रताप ने शक्तिसिंह को एक ओर हटाकर, भाले से उस पर तीखा वार किया। सिंह घायल होकर गिर पड़ा, लेकिन दोनों भाइयों में भयंकर विवाद छिड़ गया।

(4) मानसिंह के अपमान की बात सुनकर वह आग बबूला हो गया। उसने शक्तिसिंह के साथ मिलकर राणा से बदला लेने की ठानी। मानसिंह ने शक्ति सिंह को साथ लिया और बड़ी फौज के साथ चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी।

(5) हल्दीघाटी के युद्ध में मानसिंह को जान बचाने के लिए हाथी के हौदे में छिपना पड़ा।

(6) भामाशाह ने राणा को धनराशि भेंट करते वक्त कहा कि''इस धन से तुम वेतन भोगी सेना एकत्रित करो। एक बार फिर जूझो। इस बार अवश्य ही तुम्हारी विजय होगी। तुझे मेवाड़ नहीं छोड़ सकता। जब तक तू इसका उद्धार नहीं कर लेगा, ऋण से मुक्त नहीं हो सकेगा प्रताप!''

**लिखित**

(क) सिंह ने (ख) विवाद (ग) शक्ति सिंह (घ) एक साल में

(1) दोनों भाइयों में भयंकर विवाद छिड़ा हुआ था तभी पुरोहित जी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं माने, तब पुरोहित ने उन्हें शान्त करने के लिए अपनी छाती में कटार भोंक ली। पुरोहित का यह बलिदान देखकर दोनों भाइयों की आँखें खुली। और दोनों भाइयों का विवाद शांत हुआ।

(2) अकबर ने मानसिंह को आदेश देते हुए कहा कि—"मैं शोलापुर जीतना चाहता हूँ और यह जिम्मेदारी तुम्हें सौंपता हूँ।" अकबर ने आगे कहा और हाँ, मेवाड़ का राणा प्रताप भी हमेशा सिर ऊँचा करके चलता है। मैं उसका सिर झुका हुआ देखना चाहता हूँ।

(3) राणा प्रताप के घोड़े चेतक के बारे में कहा गया है कि—

रण बीच चौकड़ी भर-भरकर<br>
चेतक बन गया निराला था,<br>
राणा प्रताप के घोड़े से<br>
पड़ गया हवा का पाला था,<br>
है यहीं रहा, अब यहाँ नहीं<br>
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,<br>
किस अरि मस्तक पर कहाँ नहीं।

(4) झाला सरदार ने राणा प्रताप को शत्रुओं से बचाने के लिए उनके सिर से छत्र और हाथ से झंडा ले लिया। शत्रुओं ने उन्हें ही महाराणा समझा और घेर लिया।

(5) हल्दी घाटी के युद्ध में हारने के बाद राणा अपने परिवार के साथ जंगलों और पहाड़ों में भटकने लगे। मखमली फर्श पर पाँव रखने वाले प्रताप कँटीले रास्तों पर चलते। पथरीली गुफा में नंगी धरती पर सोते। घास-पात की रोटियाँ खाकर किसी तरह गुजारा करते थे।

(6) राणा प्रताप की बेटी ने तोतली जवान में कहा—"पिताजी, आप राजा हैं। आपकी बेटी भूख प्यास से परेशान है। कौन है आपका शत्रु, जिसने हमें वनवास दिया है? छोटी सी तलवार मुझे दे दो, में उसको मार भगाऊँगी।" बेटी की बात सुनकर रानी रो पड़ीं। राणा प्रताप के धीरज का बाँध भी दरक उठा। उन्होंने निश्चय किया कि वह अकबर से संधि कर लेंगे।

रानी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि "तुम झाला सरदार का बलिदान भूल गए?

चेतक को गँवा दिया? कितनी औरतें विधवा हो गयीं? माताओं ने बेटे दाँव पर लगा दिए। संधि करने का अधिकार तुम्हें नहीं है।'' राणा प्रताप का मोह भंग हो गया।

(7) भामाशाह ने राणा की सहायता असर्फियाँ और कीमती रत्न देकर की।

(8) सिंह मानो गरजता हुआ, राणा प्रताप और शक्ति सिंह से कह रहा हो कि हम भी शेर हैं, तुम भी शेर हो और अब हम आमने-सामने हैं। अब यह देखना है कि आज हम दोनों में कौन बड़ा है?

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) भामाशाह ने राणा प्रताप को समझाते हुए था कि तुझे मेवाड़ कभी नहीं छोड़ सकता, जब तक तू इसको स्वतन्त्र नहीं करा देगा, तब तक ऋण मुक्त नहीं होगा।

(ख) राणा प्रताप ने भामाशाह को उत्तर देते हुए कहा, कि यदि मेवाड़ मुझे नहीं छोड़ सकता, तो मैं भी उसे स्वतन्त्र कराकर ही चैन की साँस लूँगा। हमारी जन्मभूमि मेवाड़ भी स्वतन्त्र होगी और प्रताप भी स्वतन्त्र होगी।

**4.** कथित—कथन + इत

पोषित—पोषण + इत | रचित—रचना + इत

आधारित—आधार + इत | आनंदित—आनन्द + इत

प्रस्तावित—प्रस्ताव + इत

**5.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रदेश | — | पुल्लिग | मंदिर | — | पुल्लिग |
| तालाब | — | पुल्लिग | जंगल | — | पुल्लिग |
| लड़ाई | — | स्त्रीलिंग | स्वतन्त्रता | — | स्त्रीलिंग |

# 14 अशोक का शस्त्र त्याग

**मौखिक**

(1) कलिंग के महाराज के मारे जाने के बाद भी कलिंग का फाटक बन्द था इसलिए अशोक ने स्वयं सेना का संचालन करने के लिए कहा।

(2) कलिंग को जीत लिये जाने के बाद भी कलिंग दुर्ग के फाटक इसलिए बन्द थे क्योंकि पदमा और उनकी स्त्री सेना का प्रण था कि जननी जन्मभूमि को पराधीन होते देखने से पहले, हम सदा के लिए अपनी आँखें बन्द कर लेंगे।

(3) कलिंग की सेना ने अशोक के सामने आत्मसमर्पण, कलिंग के राजा की बेटी

पदमा के कहने पर नहीं किया।

(4) स्त्रियों की सेना देखकर अशोक के मन में भाव उत्पन्न हुआ कि—क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? ना। ना। मैं स्त्री से युद्ध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

(5) बौद्ध भिक्षु ने अशोक से प्रतिज्ञा करवायी कि जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे अहिंसा ही मेरा धर्म होगा। मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा तथा जब तक जीवित रहूँगा अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शान्ति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

(6) अशोक ने भविष्य में युद्ध न करने का निश्चय किया क्योंकि युद्ध में होने वाली हिंसा को देखकर उसे युद्ध से घृणा हो गयी थी।

**लिखित**

(क) चार साल से (ख) पद्मा

(ग) मंत्र-मुग्ध (आश्चर्य चकित) (घ) निहत्थों की

(1) अशोक ने पद्मा के ललकारने पर भी युद्ध करना स्वीकार नहीं किया क्योंकि उन्होंने कभी युद्ध न करने का संकल्प किया था।

(2) बदले का बड़ा अच्छा अवसर पाने पर भी पद्मा ने अशोक को जीवित छोड़ते हुए कहा कि जाइये महाराज। स्त्रियाँ भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिये।

(3) सैनिकों को उत्साहित करने के लिए सम्राट अशोक और राजकुमारी पद्मा अधिक प्रभावशाली लगी क्योंकि वह अपने देश को बचाने के लिए युद्ध कर रही थी, जबकि अशोक कलिंग राज्य पर अधिपत्य करने के लिए युद्ध कर रहा था।

(4) बौद्ध धर्म के प्रमुख सूत्र वाक्य—
बुद्धं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

(5) ये सभी वाक्य रणभूमि में घटित हुये हैं।

**भाषा अध्ययन**

**3.** • चिन्ता की छाया
अशोक के चेहरे पर **चिन्ता की छाया** थी कि चार साल युद्ध को चलते हुए हो गये, मगर इसका कोई परिणाम नहीं निकला।

- किस मुँह से
  **किस मुँह से** अशोक पदमा से छमा मांगते।
- साक्षात चंडी सी
  पदमा सैनिक वेश में **साक्षात चंडी सी** दिखाई देती हैं।
- मंत्रमुग्ध से
  सैनिक पदमा को देखकर **मंत्रमुग्ध** से हो गए।
- लोहा लेना
  पदमा अपनी सेना से कहती हैं कि आज तुम्हें **बहादुरी से लोहा लेना** है।
- गोद सूनी होनी
  पदमा राजा अशोक से कहती हैं, तुमने कितनी माँओं की **गोद सूनी कर दी**।
- माँग का सिन्दूर पोंछना
  पद्मा अशोक से कहती हैं, कि आपने न जाने कितनी सुहागनों की माँग का **सिन्दूर पोछं** डाला
- खून की प्यास बुझाना
  सैनिकों की तलवार ने **खून की प्यास बुझाई** थी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| (क) | द्वारपाल | — | (सिर झुकाकर) राजन्। संवाददाता आना चाहता है। |
| (ख) | संवाददाता | — | (धीरे से) बोलूँ क्या महाराज!? कलिंग-दुर्ग के फाटक आज भी बन्द हैं। फिर किस मुँह से कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया। |
| | अशोक | — | अशोक तो मैं ही हुँ, राजकुमारी। दोषी मैं ही हूँ, परन्तु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की है। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा। |
| | अशोक | — | शास्त्र की आज्ञा है, राजकुमारी। |

# 15 देखा मैंने स्वप्न मनोरम

**मौखिक**

(1) कवि की यह प्रार्थना ईश्वर को संबोधित है।

(2) स्वप्न में प्रभु की छवि देखकर सारे गम दूर हो जाते हैं इसलिए वह प्रभु की छवि पर बलिहारी होना चाहता है।

(3) यह स्वप्न कवि को आनन्दित करता है क्योंकि उसके मन से कड़वाहट मिट जाती है। मन के सभी तार झकृत हो जाते हैं। दसों दिशाओं में अमृत बरसने लगता है, आँखें खुशी से नम हो जाती हैं।

(4) कवि ने प्रभु से अहंकार हर लेने की बात की है।

**लिखित**

(क) ईश्वर को (ख) अहंकार (ग) दसों (घ) मनोरम

(1) कवि ने ईश्वर को ज्योतिर्मय और करुणाकर नाम से संबोधित किया है।

(2) दसों दिशाओं में अमृत बरस रहा है इसलिए कवि के नयन खुशी से भर आये।

(3) ईश्वर की छवि इतनी प्यारी और सुन्दर है कि वह उसका वर्णन नहीं कर सकता और अपना सब कुछ ईश्वर पर वार देना चाहता है।

(4) (क) मन के अन्दर उजाला हो गया है तथा सभी कड़वाहट मिट गयी मन की।

(ख) मुझे कमल की तरह निर्मल कर दो ताकि मैं जग में किसी के साथ छल न कर सकूँ।

(ग) चारों दिशाओं में प्रकाश छाया हुआ है और स्वप्न अत्यधिक सुख पहुँचाता है।

**भाषा अध्ययन**

**3.**

| | |
|---|---|
| सकपकाहट | बड़बड़ाहट |
| चिचिआहट | गरमाहट |
| घबराहट | चिल्लाहट |
| चिकनाहट | झुंझलाहट |

**4.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अंतर | — | मंतर | झंकृत | — | अमृत |
| निर्मल | — | प्रबल | चतुर्दिक | — | अत्यधिक |
| तुम्हारा | — | सहारा | बलिहारी | — | तुम्हारी |
| गम | — | तम | पहुँचाता | — | सकुँचाता |

# 16 कम्प्यूटर शिक्षाः एक क्रान्ति

**मौखिक**

(1) कम्प्यूटर का उपयोग आज जीवन के हर क्षेत्र में होने लगा है इसलिए यह आज के युग की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है।

(2) आधुनिक युग में गणक पटल गणना करने के काम आता है।

(3) कम्प्यूटर मशीन के पाँच भाग होते हैं—

(i) मैमोरी या स्मरण यन्त्र

(ii) कंट्रोल या नियन्त्रण कक्ष

(iii) अंकगणित का अंग

(iv) इनपुट यन्त्र का आन्तरिक यन्त्र भाग

(v) आउटपुट यंत्र

(4) कम्प्यूटर की भाषा को बिट्स द्वारा अंकों में बदला जाता है।

(5) कम्प्यूटर और मानव मस्तिष्क में मानव मस्तिष्क श्रेष्ठ है।

(6) कम्प्यूटर 1 सेकेण्ड में 10 लाख तक की गणना सरलता से कर देता है।

**लिखित**

(क) गणक पटल (ख) पाँच (ग) दोनों (अ) तथा (ब)

(घ) असीमित

(1) कम्प्यूटर मानव की एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि कम्प्यूटर का उपयोग अब जीवन के हर क्षेत्र में होने लगा है।

(2) आधुनिक भागती हुई दुनिया में एक ऐसी मशीन की आवश्यकता पड़ी, जो अधिक तीव्र गति से सही गणना करके बस आवश्यकता को पूरा कर सके और मानव का लम्बा, कठिन, श्रम बच जाये।

इसलिए कम्प्यूटर का अविष्कार 1822 में हुआ।

(3) कम्प्यूटर मशीन के पाँच प्रमुख भाग होते हैं—

(i) **मैमोरी या स्मरण यंत्र**—जिसमें सभी प्रकार की सूचनाएँ भरी जाती हैं इन्हीं के आधार पर कम्प्यूटर गणना करता है।

(ii) **कण्ट्रोल या नियन्त्रण कक्ष**—इस कक्ष के परिणाम से यह पता चलता है कि कम्प्यूटर अपेक्षित गणना को सही कर रहा है या फिर त्रुटिपूर्ण हो गयी है।

(iii) **अंकगणित का अंग**—इस हिस्से द्वारा गणना सम्बन्धी प्रक्रिया सम्पन्न होती है।

(iv) **इनपुट यन्त्र या आन्तरिक यन्त्र भाग**—इस भाग में ही सब प्रकार की जानकारियों या उससे सम्बन्धित निर्देश संकलित रहते हैं।

(v) **आउटपुट यंत्र**—कम्प्यूटर प्रणाली में इन चारों अंगों की प्रक्रिया के

द्वारा जो सूचनाएँ संकलित हुई, उनका विश्लेषण करना और सम्भावित परिणाम को बताना जिसको, छापकर घोषित किया जाता है।

(4) सूचनाएँ एकत्र करने के लिए कम्प्यूटर में अलग भाषा और संकेत भरे जाते हैं।, हिन्दी या अंग्रेजी अथवा अन्य किसी भी भाषा की वर्णमाला या अक्षर नहीं होते। अत: सभी सूचनाओं को पहले कम्प्यूटर भाषा में परिवर्तित किया जाता है, जो तकनीकी दृष्टि से 'ऑफ', 'ऑन' शून्य तथा एक है, जिनको बाइनरी नम्बर कहते हैं। इन बिट्स के द्वारा ही भाषा को अंकों में बदलते हैं। कम्प्यूटर प्रणाली में 6 बिट्स को 64 विधियों से प्रयोग करते हैं।

(5) कम्प्यूटर के कुँजी पटल  जिसे, की-बोर्ड कहते हैं। अंग्रेजी के 26 वर्णों, 10 अंकों, आवश्यक विराम चिन्हों को गणित सम्बन्धी कुछ संकेतों से प्रकट करते हैं।

(6) आज ओटोमोबाइल इण्डस्ट्रीज, चिकित्सा क्षेत्र, मौसम की आगामी सूचनाओं के सही संग्रह में कम्प्यूटर बेजोड़ है। कम्प्यूटर के कारण प्रत्येक क्षेत्र में विकास की गति 10 गुनी से लेकर हजार गुनी तक बढ़ सकेगी। डिजाइन के क्षेत्र में तो कम्प्यूटर ने क्रान्ति ला दी है। ऑटोमोबाइल उद्योग में तो दस व्यक्ति दस सप्ताह में चौबीस घण्टे, कठिन परिश्रम करके जितनी गणना का कार्य करेंगे। कम्प्यूटर उसे 1 घण्टे में कर देगा।

(7) मानव मस्तिष्क श्रेष्ठ है क्योंकि कम्प्यूटर प्रणाली का निर्माण भी तो मानव मस्तिष्क ने ही किया है। मानव मस्तिष्क में खोज और आविष्कार की जो चेतना है, चिन्तन और विचार है, अनुभूति की क्षमता है, अच्छे बुरे की परख है, वह कम्प्यूटर में नहीं है। वह तो आँकड़ों की गति युक्त गणना है और वे आँकड़े किसी परिस्थिति के प्रभाव के विश्लेषण की उपलब्धि है, जिनकी गणना त्रुटिपूर्ण भी हो सकती है, भविष्यफल गलत भी हो सकता है। वहाँ कठिन नियन्त्रण एक वैज्ञानिक प्रक्रिया और जटिल गणना है, इस प्रक्रिया में बीच में किसी कारण तनिक भी त्रुटि हो गई तो, सारी गणना का प्रतिफल ही उल्टा हो जायेगा।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) कम्प्यूटर की स्मरण-शक्ति असीमित है क्योंकि कम्प्यूटर में जो हम सुरक्षित कर देते हैं—वह हमेशा सुरक्षित रहता है। हम कभी भी प्राप्त कर सकते हैं जबकि मनुष्य आज ही हुई बातों को कुछ समय पश्चात् भूल भी सकता है।

(ख) मानव मस्तिष्क में खोज और आविष्कार की जो चेतना है, चिन्तन और विचार है, अनुभूति की क्षमता है, अच्छे-बुरे की परख है, वह कम्प्यूटर में नही है

क्योंकि कम्प्यूटर को मनुष्य ने ही बनाया है। उसके अन्दर दिमाग है, वह सोच-समझ सकता है कि क्या सही है क्या गलत है? लेकिन कम्प्यूटर हमें वही जानकारी देता है, जो मनुष्य द्वारा पूँछी जाती हैं। कम्प्यूटर सिर्फ उतना ही काम करता है, जितना हम उससे करवाते हैं।

**2.** विध्वंसक — तोप　　प्राणदायी — बूटी
प्राणघातक — विष　　सुदीर्घ — सड़क
ऐतिहासिक — नगर　　प्रतिभावान — छात्रा

**3.** इलेक्ट्रॉनिक्स — **इलेक्ट्रॉनिक्स** की प्रगति में कम्प्यूटर प्रणाली का सर्वाधिक योगदान है।

गगनचुम्बी — भारतीय वैज्ञानिकों का यश आज भी बढ़ रहा है और 21वीं शताब्दी में **गननचुम्बी** हो जायेगा।

प्रतिष्ठान — बड़े-बड़े **प्रतिष्ठानों की** गणितीय गणना के लिए कम्प्यूटर सर्वाधिक उपयोगी है।

संकलित — कम्प्यूटर में सारी सूचनाओं को **संकलित** करके रखा जा सकता है।

विश्लेषण — कम्प्यूटर तो आँकड़े की गति को युक्त करता है और वे आँकड़े किसी परिस्थिति के प्रभाव के **विश्लेषण** की उपलब्धि है।

गणक — ईसा से लगभग 4 हजार वर्ष पूर्व ''अबेकस'' नामक ''**गणक** पटल'' का निर्माण हुआ।

पटल — की-बोर्ड को कुंजी **पटल** भी कहते हैं।

**4.** प्रभुसत्ता　　प्रश्न　　प्रभाव
प्रत्येक　　प्रतिष्ठान

## 17 जगदगुरु शंकराचार्य

**मौखिक**

(1) लगभग बारह सौ वर्ष पहले इनका जन्म दक्षिण के केरल प्रदेश में पूर्णा नदी के तट पर कालड़ी ग्राम में हुआ था।

(2) शंकराचार्य महान पण्डित, प्रतिभावान, धर्मप्रचारक थे।

(3) एक दिन सहपाठियों के साथ भिक्षा माँगने के लिए गये। मार्ग में एक ब्राह्मण का घर मिला, जो निर्धन था। ब्रह्मचारी घर पर भिक्षा माँगने आया, गृहस्वामिनी कुछ न दे सकती थी, इसलिए वह रोने लगी। शंकर के हृदय पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। भी से गृहस्थ जीवन के प्रति उनके मन में घृणा हो गयी।

(4) केरल के राजा ने शंकराचार्य की ख्याति सुनी और इन्हें अपने दरबार का पण्डित बनाना चाहा। इसलिए अपने मन्त्री को बुलाने के लिए भेजा। शंकर नहीं गये। इन्होंने विनयपूर्वक कहला दिया कि मैं सम्मानित नहीं होना चाहता, धनहीन रहकर लोगों को धर्मोपदेश देना चाहता हूँ। राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई और स्वयं शंकराचार्य के घर पहुँचे और एक हजार अशर्फिया इन्हें भेंट की। किन्तु असर्फियाँ लेना इन्होंने अस्वीकार कर दिया। राजा लौट गये और मन ही मन शंकराचार्य की प्रसन्नता करते रहे कि इनको लालच छू तक नहीं गया।

(5) शंकर के गुरु गोविन्दनाथ जी थे। उन्होंने शंकर को संन्यास की दीक्षा तथा आत्मविद्या का उपदेश दिया।

(6) जब शंकर ने मंडन मिश्र का पता पूछा तो लोगों ने बताया कि जिस घर में तोता भी संस्कृत बोलता हो वही मंडन मिश्र का घर है।

(7) शंकराचार्य ने गीता, उपनिषद् पर भाष्य भी लिखा है।

**लिखित**

(क) बारह सौ वर्ष पूर्व (ख) संन्यास (ग) गुफा में
(घ) चार मठों की

(1) शंकर के पिता का नाम शिवगुरु तथा माता का नाम सती था। इनके पिता बड़े विद्वान और पण्डित थे। इनके पूर्वज पाण्डित्य के लिए विख्यात थे।

(2) ज्योतिष के विद्वान पंडितों ने शंकर के भविष्य के संबंध में भविष्यवाणी की कि 'आपका पुत्र महान पण्डित, यशस्वी तथा भाग्यशाली होगा। इसका यश विश्व में फैलेगा और अनन्त काल तक इसका नाम अमर रहेगा।''

(3) एक दिन सहपाठियों के साथ भिक्षा माँगने के लिए गये। मार्ग में एक ब्राह्मण का घर मिला, जो निर्धन था। ब्रह्मचारी घर पर भिक्षा माँगने आया, गृहस्वामिनी कुछ न दे सकती थी, इसलिए वह रोने लगी। शंकर के हृदय पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। तभी से गृहस्थ जीवन के प्रति उनके मन में घृणा हो गयी।

(4) एक दिन बेगमती नदी की बाढ़ में शंकर और उनकी माता घिर गयीं। शंकर ने

माता से कहा, ''यदि आप मुझे सन्यास लेने की आज्ञा दें तो मैं अपने बचने की चेष्टा करूँ, नहीं तो यहीं डूब जाऊँगा, और हाथ-पाँव छोड़ दिए। जब वह डूबने को हुए तो उनकी माता ने स्वीकृति दे दी।

(5) काशी की अनेक घटनाएँ प्रसिद्ध हैं। एक कथा है कि एक दिन वह गंगा जी जा रहे थे, मार्ग में एक चाण्डाल मिला। शंकराचार्य ने उसे हट जाने के लिए कहा। उस चाण्डाल ने विनम्र भाव से पूछा, ''महाराज! आप चाण्डाल किसे कहते हैं? इस शरीर को या आत्मा को? यदि शरीर को तो वह नाश हो जायेगा और जैसा अन्न-जल का आपका शरीर, वैसा ही मेरा; और यदि शरीर के भीतर की आत्मा को तो वह तो सबकी एक है, क्योंकि ब्रह्म एक हैं।'' शंकराचार्य इस उत्तर से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उसे धन्यवाद दिया।

(6) शंकराचार्य का मंडन मिश्र से कई दिनों तक शास्त्रार्थ हुआ। अंत में मंडल मिश्र हार गये, तब उनकी स्त्री सरस्वती से विवाद हुआ। बड़ी कठिनाई से उन पर भी शंकराचार्य ने विजय प्राप्त की। दोनों शंकराचार्य के शिष्य हो गये।

(7) शंकराचार्य के मत का सार यह है कि आत्मा-परमात्मा एक हैं, दो नहीं।

(8) शकराचार्य की मृत्यु बत्तीस वर्ष की अल्पावस्था में केदारनाथ में हुई।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लड़ना | — | लड़ाई | मूर्ख | — | मूर्खता |
| सजाना | — | सजावट | सर्व | — | सभी |
| मुस्कराना | — | मुस्कुराहट | हँसना | — | हँसी |
| अच्छा | — | अच्छाई | ठण्डा | — | ठण्डक |
| लोभ | — | लोभी | इन्सान | — | इन्सानियत |

**2.** (क) बच्चों के द्वारा शोर मचाया जाता है।
(ख) क्या दीप्ति के द्वारा मिजोरम जाया जायेगा?
(ग) अभिषेक के द्वारा कहानी लिखी गयी।
(घ) यह चित्र गुंजन के द्वारा बनाया गया है।
(ङ) करिश्मा के द्वारा सड़क पर चला जाता है।

# 18 स्वास्थ्य ही धन है

**मौखिक**

(1) शरीर और मन दोनों का स्वस्थ रहना ही उत्तम स्वास्थ्य है।

(2) खेल से शरीर फुर्तीला और सशक्त होता है। अपितु इसमें परस्पर सहयोग से काम करने की भावना का भी विकास होता है।

(3) हृदय एक प्रकार का स्वचालित पम्प है, जो बिना हमारी जानकारी के हमारे खून को दिन-रात सारे शरीर में प्रवाहित करता है।

(4) चलना, दौड़ना, झुकना, उठना, बैठना, मुड़ना, खाना, पीना, बोलना आदि क्रियाए माँसपेशियों के द्वारा ही की जाती हैं।

(5) हम काम करके अपनी मांसपेशियों को सशक्त और समर्थ बना सकते हैं। तथा सक्रिय बनाने के लिए खेल, व्यायाम, आसन आदि क्रियाएँ नित्य करते रहना चाहिए।

(6) व्यायाम करने से मन प्रसन्न एवं तन में स्फूर्ति बनी रहती है।

(7) किशोरावस्था के बच्चों के लिए खेलकूद, जिमनास्टिक, आसन, दौड़ना और तैरना आदि अच्छे और लाभकारी व्यायाम हैं।

**लिखित**

(क) दोनों (अ) तथा (ब) (ख) माँसपेशियों

(ग) प्राणायाम के द्वारा (घ) स्वच्छ

(1) शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मनोरंजन, व्यायाम, खेल, आसन, तैराकी एवं प्राणायाम आदि अत्यन्त उपयोगी एवं सरल उपाय हैं।

(2) सामूहिक खेलों से शरीर फुर्तीला और सशक्त होता है, अपितु इसमें परस्पर सहयोग से काम करने की भी भावना का विकास होता है।

(3) आसन हर अवस्था के व्यक्तियों के लिए उपयोगी होते हैं। इससे न केवल शरीर के सभी अंगों को सक्रिय किया जाता है, अपितु तन-मन पर नियन्त्रण भी किया जाता है।

(4) खेल या व्यायाम करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इन्हें हमेशा खुली हवा में करना चाहिए।

(5) मुझे खो-खो खेल सबसे अच्छा लगता है क्योंकि इसे, छोटे बच्चे भी खेल सकते हैं और इस खेल के लिए अधिक धन की आवश्यकता भी नहीं होती है।

(6) उत्तम स्वास्थ्य के लिए अच्छा भोजन अत्यन्त आवश्यक है। बिना पौष्टिक भोजन के उत्तम स्वास्थ्य नहीं है।

(7) जीवन जीने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है इसलिए उतना खाना चाहिए जितने में जीवन समाप्त न हो।

**भाषा अध्ययन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | मासिक | दैनिक | ऐच्छिक |
| | सामाजिक | भौगोलिक | उपचारिक |
| | जैविक | | |
| | ऐतिहासिक | | |

2. (क) सविता जल्दी–जल्दी उठी और उसने घर की सफाई की।
(ख) संजय ने ध्यान नहीं दिया और वह फिसलकर गिर गया।
(ग) मनोहर मेरा पड़ोसी है। वह बहुत परिश्रमी है।
(घ) रुचि ने दुकानदार को दस रुपये दिये, उसने उसे चीनी दी।
(ङ) राहुल शरारती है पर वह कामचोर नहीं है।

# 19 कदम्ब का पेड़

**मौखिक**

(1) बालक कन्हैया इसलिए बनना चाहता है क्योंकि वह सब कुछ करना चाहता है, जो कन्हैया किया करते हैं।

(2) बालक नीची डाली से ऊँची डाली पर चढ़ने के लिए कह रहा है।

(3) माता बालक की बंशी को सुनकर इसलिए खुश हो जातीं क्योंकि वह बंशी की धुन में अम्मा,अम्मा कहकर बुला रहा था।

(4) बालक को पेड़ से नीचे उतारने के लिए माँ मेरे भइया, मुन्नाराजा कहकर बुलाती हैं।

(5) बालक के नीचे न उतरने पर उनका हृदय विकल हो जाता, तब वह पेड़ के नीचे बैठकर ईश्वर से विनती करती है।

**लिखित**

(क) कन्हैया (ख) माँ को (ग) विकल
(घ) नदी के किनारे

(1) बालक कदम्ब के पेड़ पर बैठकर बाँसुरी बजाना चाहता है क्योंकि वह कन्हैया बनना चाहता है।

(2) जब बालक पेड़ की ऊपर वाली डाल पर चढ़ जाता है और पत्तों में छिप जाता है तथा बहुत देर तक नीचे नहीं उतरता तो माँ का हृदय विकल हो जाता है।

(3) माँ बालक को पेड़ से नीचे उतर आने पर मिठाई, नए खिलौने, माखन, मिश्री, दूध मलाई देने को कहती हैं।

(4) बालक माँ के आँचल में छिप जाने के लिए कहता है।

(5) बालक कहता है कि जब बंशी में मैं आपको अम्मा-अम्मा कहकर बुलाता, तो आप इतनी खुश हो जाती कि सब काम छोड़कर बाहर आ जातीं।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना तीरे,
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।

(ख) तुम्हें नहीं कुछ कहता, पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाल से अम्मा, ऊँचे पर चढ़ जाता।

(ग) नीचे उतरो मेरे भैया! तुम्हें मिठाई दूँगी,
नए खिलौने, माखन मिसरी, दूध मलाई दूँगी।

**2.** दे — ईश्वर सबको बुद्धि दे।
दें — आप मुझे मेरी किताब दें।
दो — तुम मुझे मेरे दस रुपये दो।
दीजिए — कृपया मुझे किताब दीजिए।
दीजिएगा — आप मुझे फोन दीजिएगा।

**3.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जड़ | — | चेतन | जीवन | — | मरण |
| पाप | — | पुण्य | उत्थान | — | पतन |
| विरोध | — | सहयोग | गुण | — | अवगुण |
| आदर | — | निरादर | मान | — | अपमान |
| साक्षर | — | निरक्षर | ऊँचा | — | नीचा |

## 20 पानी पर चँदा और चाँद पर आदमी

**मौखिक**

(1) मनुष्य को चन्द्रमा पर पहुँचने में 102 घण्टे 45 मिनट 42 सेण्ड का समय लगा।

(2) अपोलो-2 को केप केनेडी से बुधवार 16 जुलाई, 1969 को छोड़ा गया तथा इसमें तीन यात्री थे—कमांडर नील आर्मस्ट्रांग, माइकल कॉलिन्स और एडविन एल्ड्रिन।

(3) एल्ड्रिन ने भाव विभोर होकर कहा—वैज्ञानिक चंद्रतल को जैसा समझते रहे हैं, वह उससे एकदम भिन्न तो नहीं है।

(4) अन्तरिक्ष युग का सूत्रपात 4 अक्टूबर, 1956 को हुआ था। प्रथम अंतरिक्ष यात्री बनने का गौरव यूरी गागरिन को प्राप्त हुआ।

(5) चन्द्रयात्रियों को पृथ्वी पर उतरते ही सीधे प्रयोगशाला में ले जाया जाता है। कई सप्ताह किसी से मिलने-जुलने नहीं दिया जाता। उनके अनुभव रिकार्ड किये जाते हैं तथा यह भी जाँच की जाती है कि ये यात्री ऐसे कीटाणु तो अपने साथ नहीं ले आये जो मानव, जाति के लिए घातक हों।

(6) सोमवार 21 जुलाई, 1969 को ईगल नामक चन्द्रयान प्रथम बार उतरा था। इसमें नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन वैज्ञानिक गए थे।

**लिखित**

(क) 1969 (ख) अमेरिकी (ग) नील आर्मस्ट्रांग

(घ) परिक्रमा

(1) मानव के चन्द्रतल पर उतरने की प्रतीक्षा, संसार के लोग स्त्री, पुरुष और बच्चे रेडियो से कान सटाये बैठे थे। जिनके पास टेलीविजन थे, वे उनके पर्दे पर आँखें गड़ाए थे। मानवता के सम्पूर्ण इतिहास की सर्वाधिक रोमांचक घटना और एक-एक क्षण के वे भागीदार बन रहे थे। उत्सुकता और कौतूहल के कारण अपने अस्तित्व से ही बिल्कुल बेखबर हो गये थे।

(2) चन्द्रयात्रियों ने वहाँ से चन्द्रधूल ले ली तथा टेलीविजन कैमरे को त्रिपाद पर जमा दिया क्योंकि उन्हें अपने सीमित समय में एक-एक क्षण का उपयोग करना था। दोनों चन्द्र-विजेताओं ने चन्द्रमा की चट्टानों और मिट्टी के नमूने लिये। कई तरह के उपकरण वहाँ स्थापित किए, जो बाद में पृथ्वी पर वैज्ञानिक जानकारी भेजते रह सकें।

इन चन्द्र विजेताओं ने चन्द्रतल पर भूकम्पमापी यन्त्र स्थापित किया और लेसर परावर्तक रखा। इन्होंने एक धातु फलक, जिस पर तीनों यात्रियों और अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के हस्ताक्षर थे, वहाँ रखा। उन्होंने अमेरिकी ध्वज वहाँ फहराया। विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों के संदेशों की माइक्रो फिल्म भी उन्होंने वहाँ छोड़ दी। दो रुसी यात्रियों और तीन अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्रियों को दिए पदकों की अनुकृतियाँ वहाँ रखीं।

(3) चन्द्रतल पर उतरते समय चन्द्रयात्रियों को इस बात का ध्यान रखना था कि उन्हें

चन्द्रमा के धरातल के बारे में पता नहीं था। अत: आरम्भ में वह आराम-आराम से कदम रखें।

(4) प्रस्तुत निबन्ध के आधार पर मानवता के सम्पूर्ण इतिहास की सबसे रोमांचकारी घटना मानव का चन्द्रमा पर पहुँचना है।

(5) संसार की कहानियों में चन्द्रमा की कई विशेषताओं का उल्लेख है। किसी ने रजनीपति माना, तो किसी ने उसे रात की देवी कहकर पुकारा है। किसी विरहिणी ने उसे अपना दूत बताया, तो किसी ने उसके पीलेपन से क्षुब्ध होकर उसे बूढ़ा और बीमार ही समझ लिया।

(6) (क) नील आर्मस्ट्रांग ने चंद्रतल पर अपना पहला कदम रखते हुए कहा था कि यद्यपि वह मानव का छोटा सा कदम है, लेकिन मानवता के लिए यह बहुत ऊँची छलांग है। अर्थात् मानव का चाँद पर पहुँचना भले ही छोटा हो, लेकिन यह आगे चलकर देश को बहुत आगे तक ले जायेगा।

(ख) बालक श्री राम चन्द्रमा को खिलौना समझकर उसके लिए मचलते हैं तो, सूर के श्री कृष्ण भी उसके लिए हठ करते हैं। बालक को शान्त करने के लिए एक ही उपाय था—चन्द्रमा की छवि को पानी में दिखा देना। लेकिन मानव की प्रगति का चक्र कितना घूम गया है। इस लम्बी विकास यात्रा को श्रीमती महादेवी वर्मा ने एक ही वाक्य में बाँध दिया है—''पहले पानी में चंदा को उतारा जाता था और आज चाँद पर मानव पहुँच गया है।''

(ग) दुनिया के सभी भागों में स्त्री-पुरुष और बच्चे रेडियो से कान सटाये बैठे थे, जिनके पास टेलीविजन थे, वे उसके पर्दे पर आँखें गड़ाये थे। मानवता के सम्पूर्ण इतिहास की सर्वाधिक रोमांचक घटना और एक-एक क्षण के वे भागीदार बन रहे थे।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रघात | — | प्र + घात | प्रयोग | — | प्र + योग |
| बदसूरत | — | बद + सूरत | प्रतिक्रिया | — | प्रति + क्रिया |
| अनुसंधान | — | अनु + संधान | लापरवाह | — | ला + परवाह |
| दुस्साहस | — | दु: + साहस | अत्याधुनिक | — | अति + आधुनिक |
| विशेष | — | वि + शेष | सहयोगी | — | सह + योगी |

**2.** दुर्घटना — दुर्घटित इत प्रत्यय

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| स्थगन | — | स्थगित | इत | प्रत्यय |
| अस्ति | — | अस्तित्व | त्व | प्रत्यय |
| काल | — | कालिक | इक | प्रत्यय |
| स्थापना | — | स्थापित | इत | प्रत्यय |
| प्रक्षेपण | — | प्रक्षेपित | इत | प्रत्यय |
| सुहावना | — | सुहावित | इत | प्रत्यय |
| शीतल | — | शीतलित | इत | प्रत्यय |
| कष्ट | — | कष्टित | इत | प्रत्यय |

**3.**

| | | |
|---|---|---|
| मरणोपरान्त | — | मरण + उपरान्त |
| दुस्साहस | — | दुः + साहस |
| सर्वाधिक | — | सर्व + अधिक |
| पूर्वाभिनय | — | पूर्व +अभिनय |
| प्राणोदक | — | प्राण + उदक |
| नागाधिराज | — | नाग + अधिराज |
| शयनागार | — | शयन + आगार |
| रवीन्द्र | — | रवी + इन्द्र |

**4.** चन्द्रमा — शशि, राकेश, सुधाकर, रजनीश, चाँद।

# 21 शू-मेकर से प्रधानाचार्य

**मौखिक**

(1) नरेन्द्र ने शिकागो विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया।

(2) नियाग्रा जल प्रपात अमेरिका में स्थित है।

(3) नियाग्रा जल प्रपात पर नरेन्द्र ने देखा कि एक नवयुवक उसकी तिपाई के पास खड़ा है और उससे कह रहा है—"बाबूजी, अपने जूते की मरम्मत सफाई कराइएगा।"

(4) युवक का नाम हैमिल्टन था। वह शू-मेकर का काम करता था तथा नाइट स्कूल में पढ़ाई करता था।

(5) विश्वविद्यालय के उपाधि वितरण समारोह में स्वर्ण पत्र हैमिल्टन को दिया गया क्योंकि कि उन्होंने एम०ए० की परीक्षा में इस वर्ष सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था।

(6) प्लेग की बीमारी में उसके भाई आनन्द देव और भाभी का स्वर्गवास हो गया था जिसके कारण उसका मासिक खर्च आना बन्द हो गया था तथा उसका मैस से खाना भी बन्द हो गया था। बिना खाए दो दिन बीत गये थे इसलिए उसने शिकागो विश्वविद्यालय के प्रधानाचार्य के यहाँ काम करना स्वीकार कर लिया था।

**लिखित**

(क) जल प्रपात (ख) युवक है मिल्टन

(ग) प्रधानाचार्य के घर (घ) मेहनत

(1) नियाग्रा प्रपात की नैसर्गिक सुन्दरता इस प्रकार है—नियाग्रा प्रपात एक ऊँची चट्टान से झर-झर करता हुआ बड़े वेग से नीचे गिर रहा था। चट्टानों की चोटी से असंख्य जल बिन्दु उछल रहे थे और फिर सूर्य के सुनहरे प्रकाश से प्रकाशित हो, सोने के गुच्छे की तरह एक दूसरे में गुथकर छप-छप करके पानी में गिर रहे थे। प्रपात के किनारे हरे-भरे मैदानों में हजारों तिपाइयाँ पड़ी हुई थीं।

(2) नरेन्द्र ने शू-मेकर से उसके काम के सम्बन्ध में पूछा कि क्या आप शू-मेकर हो?

(3) हैमिल्टन ने नरेन्द्र के प्रश्न का उत्तर दिया कि ''जी हाँ, इस कार्य से सम्बन्धित सारा सामान मेरे पास है।''

(4) नरेन्द्र ने ताली नहीं बजायी क्योंकि उसका हृदय टूटा हुआ था और उसे नियाग्रा प्रपात की वह घटना तथा शू-मेकर हैमिल्टन का स्मरण हो रहा था।

(5) नरेन्द्र के भाई आनन्द देव तथा भाभी का प्लेग की बिमारी में स्वर्गवास हो गया था। इसलिए घर से मिलने वाला मासिक खर्च उसे प्राप्त नहीं हुआ। इस कारण नरेन्द्र पर बिजली सी गिर गई और वह चीख-चीख कर रोने लगा।

(6) नरेन्द्र की मुलाकात प्रधानाचार्य से इसलिए नहीं हो पाती थी क्योंकि वो बहुत व्यस्त व्यक्ति थे।

(7) हैमिल्टन ने दुखी नरेन्द्र को समझाया कि दुख तो जीवन में आतें-जाते रहते हैं। मैंने कहा था कि कर्तव्य निभाते जाइए। मेहनत व कर्तव्य के बल पर सफलता अवश्य मिलेगी।

**भाषा अध्ययन**

**1.**
- मुख गौरव से दमकना
  हेमल्टन का मुख **गौरव से दमक रहा** था।
- आत्मसात न कर पाना
  नरेन्द्र हेमल्टन की बात को **आत्मसात नहीं कर सका** था।
- छद्‍म प्रतिष्ठा
  **छद्‍म प्रतिष्ठा** अधिकतर हमारे विनाश का कारण बनाती है।

- हृदय टूटना
  नरेन्द्र ने ताली नहीं बजायी क्योंकि उसका **हृदय टूटा हुआ** था।
- बिजली गिर पड़ना
  भाई की मौत की खबर की बात सुनकर नरेन्द्र पर **बिजली गिर पड़ी**।
- अवलोकन करना
  मुझे अवलोकन करना है कि बच्चे ने सब सही लिखा है।

**2.** (क) ''आजीविका के लिए किया गया कोई भी काम, निम्न स्तरीय नहीं हो सकता। इसलिए कर्तव्य किसी के पद को नहीं बिगाड़ सकता।''

(ख) किसी भी दुख से दुखी होकर अपने प्राणों को त्याग देना या आत्महत्या करना कायरता है।

**3.** लड़कपन, अनाड़ीपन
अपनापन, नीचपन
बालकपन, परायापन

**5.**

| **एकार्थी** | **अनेकार्थी** |
|---|---|
| पत्र, मान, दरवाजा | सोना, अंक |
| दवात, खिड़की, पीला | दल, कुल |
| मेज, कुर्सी, पक्ष | नाना, वर्ण |
| कक्ष, | वर, पद |

# 22 फूल और काँटा

**मौखिक**

(क) एक ही पौधे पर काँटा और फूल दोनों जन्म लेते हैं।

(ख) फूल और काँटे पर चाँद एक-सी, चाँदनी डालता है। एक ही पौधा उन्हें पालता है। मेह उन पर एक-सा बरसता है तथा हवा भी सदा एक-सी चलती है।

(ग) फूल, काँटे की अपेक्षा अत्यधिक कोमल सर्वप्रिय होते हैं इसलिए उनके ढंग अलग-अलग होते हैं।

(घ) काँटा उँगली, वस्त्र, तितली और भौंरे को नुकसान पहुँचाता है।

**लिखित**

(क) फूल (ख) दोनों (अ) तथा (ब)

(1) फूल अपने रंग तथा सुगन्ध से हमारे मन की कली खिला देता है। फूल हमें प्रसन्नता प्रदान करते हैं।

(2) फूल का स्वभाव सबके लिए कोमल तथा काँटे का स्वभाव सबके लिए कठोर है।

(3) काँटा अपने कठोर स्वभाव के कारण लोगों को खटकता रहता है क्योंकि वह किसी भी व्यक्ति की उगँली में छेद कर देता है कपड़े फाड़ देता है, तितलियों के पर कतर देता है। भौंरे के श्याम तन को भेद देता हैं।

(4) फूल तितलियों को गोद में लेकर खुश करता है।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) काँटा (ख) काँटा (ग) फूल
(घ) फूल (ङ) काँटा

**2.** (क) काँटा सबकी आँख में खटकता है जबकि फूल सिर पर सुशोभित होता है, केवल अपने गुणों के कारण।
(ख) पानी उन पर एक-सा बरसता है तथा हवा भी एक-सी लगती है, लेकिन फिर भी दोनों के स्वभाव में बहुत अंतर है।

# 23 बालचर संस्था

**मौखिक**

(1) आठ वर्ष या इससे अधिक उम्र का बच्चा, जो नि:स्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करता है, बालचर कहलाता है।

(2) बालचर संस्था का उद्देश्य नि:स्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करना और जनता में स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरता की भावनाओं को जाग्रत करना है।

(3) बाल्यकाल ही मनुष्य के जीवन का निर्माण काल है, क्योंकि बाल्यावस्था में ही हम मनुष्य को जिधर चाहें उधर मोड़ सकते हैं।

(4) बालचर संस्था के संस्थापक 'सर रॉबर्ट बैदन पॉवल' थे।

(5) किसी पुराने या बड़े वृक्ष की शाखा को अपने मन के अनुकूल मोड़ लें तो, यह सर्वथा असम्भव है से कवि का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार हम एक छोटे बच्चे को जैसे चाहें वैसे माहौल में ढाल सकते हैं जबकि व्यस्क हो जाने के बाद ऐसा नहीं कर सकते।

(6) प्रत्येक बालचर खाकी मोजे, खाकी नेकर, खाकी कमीज और खाकी टोपी या

खाकी साफा पहनता है। सबके समान जूते होते हैं। सभी स्कार्फ धारण करते हैं। प्रत्येक स्काउट की वेशभूषा में सीटी, झण्डी और लाठी की भी अनिवार्यता हैं।

(7) एक पेट्रोल में आठ बालचर होते हैं।

**लिखित**

(क) श्रीमती ऐनी बेसेन्ट (ख) चार (ग) खाकी (घ) नि:स्वार्थ

(1) सन् 1900 में जिस समय अफ्रीका में बोअर-युद्ध हो रहा था, बालचर संस्था का निर्माण सैनिकों की सहायता के लिए किया गया।

(2) बालचरों को निम्न प्रशिक्षण दिये जाते हैं—भोजन बनाना, तैरना, नदी पर पुल बनाना, घायल के पट्टी बाँधना, प्रारम्भिक चिकित्सा करना, घायल को अस्पताल पहुँचाना, गाँठ, लगाना, मार्ग ढूँढ़ना, सिग्नल देना, सामयिक घर बनाना, सामयिक सड़क बनाना आदि।

(3) एक पेट्रोल में आठ बालचर होते हैं। उनका नायक पेट्रोल लीडर कहा जाता है, जो उन सबमें तेज होता है और उनका पथ-प्रदर्शन करता है। चार पेट्रोल से अधिक पेट्रोल का एक ट्रूप बनाया जाता है, जिसका नायक ट्रूप लीडर कहा जाता है। प्रत्येक ट्रूप का अधिकारी एक स्काउट मास्टर होता है। जो आगे ट्रूप के प्रत्येक स्काउट की शिक्षा, वेश-भूषा, कर्तव्य पालन, अनुशासन आदि की देखभाल रखता है तथा उन्हें प्रशिक्षण भी देता है। जिले के समस्त ट्रूप डिस्ट्रिक्ट स्काउट कमिश्नर के अधीन होते हैं।

(4) बालचर संस्था के सेवकों के मुख्य कर्तव्य दीन-दुखियों की सेवा करना और उनसे सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना हैं। उनका प्रत्येक कार्य समाज की दृष्टि से होना चाहिए।

(5) गंगा के पर्वों पर, जो बच्चे या बड़े स्नान करते, गंगा के प्रवाह में डूबने लगते हैं, बालचर अपने प्राणों को हथेली पर रखकर उनके प्राणों की रक्षा के लिए गंगा में एकदम कूद जाते हैं। और उन्हें बचाने का प्रयत्न करते हैं।

**भाषा अध्ययन**

| 1. | सास्कृतिक | **प्रत्यययुक्त** | **उपसर्गयुक्त** |
|---|---|---|---|
| | कलाकार | सांस्कृतिक | अभिमान |
| | अभिमान | कलाकार | परिक्रमा |
| | दयावान | दयावान | अपूर्ण |

| | | |
|---|---|---|
| चढ़ाई | चढाई | सफल |
| अपूर्व | _______ | _______ |
| सफल | _______ | _______ |

**2.** गरीब — रंक    भौंरा — मधुकर

फूल — कमल    शिकारी — अरधि

**3.** (क) बालचर संस्था का आधुनिक स्वरूप सूक्ष्म सैनिक प्रयास है क्योंकि जिस तरह सैनिक समाज की सेवा करते हैं, उसी प्रकार बालचर भी समाज की नि:वार्थ भाव से सेवा करते हैं।

(ख) आज देश को और समाज को ऐसी ही नि:स्वार्थ सेवा संस्थाओं की आवश्यकता है क्योंकि इस संस्था से समाज को अनेक लाभ हैं। यह संस्था नि:स्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करती है।

# 24 बुद्धिमान तेनालीराम

**मौखिक**

(क) तेनालीराम राजा कृष्णदेव राय के दरबार की शोभा थे। वे अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थे।

(ख) महल बनने के बाद एक समस्या वहाँ आ खड़ी हुई। धीरे-धीरे आस-पास के बन्दरों का झुण्ड वहाँ आकर उत्पात मचाने लगा। वे महल में घुस आते। तोड़-फोड़ कर नुकसान पहुँचाते। चीजें कपड़े उठा ले जाते।

(3) शिकारी बन्दरों को इसलिए नहीं पकड़ सके क्योंकि शिकारी को देखकर बन्दर तलहटी में जा छिपते थे।

(4) राजा ने गरजते बादलों को देखकर प्रश्न पूछा कि—''क्या कोई बता सकता है? बादल गरजकर क्या कह रहे हैं?''

(5) तेनालीराम राजा को चापलूसों की चापलूसी तथा बादलों के गरजने का सही अर्थ समझाना चाहते थे इसलिए उन्होंने एक सप्ताह का समय लिया।

(6) तांत्रिक ने शत्रु सेना को भगाने के लिए अनुष्ठान किया धुँआ, उठा। विशालकाय दैत्य के आकार में बदल गया। शत्रु सेना भागने लगी। कुछ देर में मैदान साफ हो गया।

(7) राजा कृष्णदेव राय तांत्रिक को राज्य की सुरक्षा की जिम्मेदारी इसलिए देना चाहते थे क्योंकि उसने बिना युद्ध किए शत्रु सेना को खदेड़ दिया था।

## लिखित

(क) विजयनगर (ख) बन्दरों (ग) सिपाहियों द्वारा (घ) पुरस्कृत

(1) राजपुरोहित ने बन्दरों को मारने से मना करते हुए कहा कि—''बन्दरों को मारना शास्त्र विरुद्ध है।''

(2) तेनालीराम ने बन्दरों को भगाने के लिए एक केले से भरी बैलगाड़ी को हाँक रहे थे। उन्होंने कुछ केले बन्दरों को दिखा नीचे फेंक दिये। देखते ही देखते सारे बंदर आगे बढ़ती बैलगाड़ी के पीछे-पीछे चल दिए। वे उन्हें केले खिलाते हुए पास के जंगल में ले गये। वहाँ पहले से ही उन्होंने चार लंगूर मंगवा रखे थे।

(3) तनालीराम ने राजा से ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह राजा को चापलूसों की चापलूसी समझाना चाहते थे। तथा सच में बादल का जो इशारा था, वह समझाना चाहते थे। उन्होंने राजा को समझाते हुए कहा महाराज बादल गरजकर बारिश और बाढ़ की चेतावनी दे रहे थे। आपकी ओर से उत्तर दे दिया गया है। बादल चाहें जितना बरसें, बाढ़ नहीं आयेगी। हमने टूटे-फूटे पुलों और कमजोर बाँधों को ठीक करवा दिया है।

(4) राजा के प्रश्न का उत्तर तेनालीराम ने बुद्धिमत्ता से सिर झुकाकर दिया।

(5) तेनालीराम ने तांत्रिक से कहा, मुझे तुम्हारी बातों पर यकीन नहीं, आप पहले ऐसी रेखा मेरे घर के चारों ओर खींच दीजिए। उसे मित्र पार कर सके शत्रु नहीं, मैं आपका गुलाम बन जाऊँगा। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उन्हें तांत्रिक पर शक हो गया था कि वह शत्रु सेना का जासूस है।

(6) ''भागते समय शत्रु सेना अपने तमाम डेरे-तम्बू और हथियार उखाड़कर ले गई थी। सचमुच डरकर भागने वाली सेना ऐसा नहीं कर पाती इसलिए तेनालीराम जान गए कि तांत्रिक शत्रु का जासूस है।

## भाषा अध्ययन

1.
- उत्पात मचाना

  धीरे-धीरे आसपास के बन्दर वहाँ आकर **उत्पात मचाने** लगे।
- निश्चित रहना

महाराज कल मंगल के दिन बंदर चले जायेंगे। आप **निश्चित रहें**।

- टूट पड़ना

  केलों पर बन्दर **टूटे** और बन्दरों पर लंगूर।
- मर्म समझना

  कृष्णदेव राय तेनालीराम की बात का **मर्म समझ** गए थे।
- खदेड़ना

  दुश्मनों को थोड़ी ही देर में **खदेड़ दिया**।
- मैदान साफ हो जाना

  शत्रु सेना भागने लगी और कुछ ही देर में **मैदान साफ हो गया**।
- ऊटपटांग बकना

  तांत्रिक **ऊटपटांग बकने** लगा।
- चकित रह जाना

  तेनालीराम की बात सुनकर सभी **चकित रह गए**।
- सिक्का जमाना

  तेनालीराम ने अपनी बुद्धिमत्ता का **सिक्का जमा** रखा था।

**2.** (क) संयुक्त राज्य अमेरिका, एक विशाल देश है।

(ख) तुमने, यह क्या किया?

(ग) अरे! तुम इतनी जल्दी कैसे आ गये?

(घ) यह सिद्धि नहीं महाराज चतुराई थी।

(ङ) मंत्री जी, क्या आप मुझ गरीब पर दया नहीं करेंगे?

**3.** अवतार, निरबल, आगमन, निर्मल, आजीवन, अपमान, आलेख, आहार, प्रख्यात, सुगम, सुपुत्र, निर्दोश, निरादर, अपहरण, अवगुण, सुयश

**4.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताजा | — | बासी | श्रेष्ठ | — | हीन |
| बढ़ा देना | — | घटा देना | सुरुचि | — | अरुचि |
| दुर्लभ | — | सुलभ | सुरक्षित | — | असुरक्षित |
| दंड | — | पुरस्कार | अस्वीकार करना | — | स्वीकार करना |

# 1 भारत जननि अंब

## मौखिक

(1) भारत जननि भारत माता को कहा गया है।

(2) भारत जननि का मुकुट गगन छूता दिखाई दे रहा है।

(3) भारत माँ के गुणगान में समुद्र शंख बजाता है और बादल तुरही बजाता है।

(4) (क) भारत माँ के गले में सरिताओं की माला है तथा नदियों के कल-कल की आवाज गीत की तरह है।

(ख) माँ जब हँसती हैं, तो नव निर्माण होता है, प्रकृति का। और जब क्रोध में होती हैं तो, प्रलय आ जाती है।

## लिखित

(क) सौन्दर्य (ख) सरिता मुक्त (ग) महावर

(घ) दोनों (अ) तथा (ब)

(1) माँ के अंग पर फसलों के समान हरे रंग वाला वस्त्र सुशोभित हो रहा है।

(2) भारत जननि! अब! तेरी विजय है! की कई बार आवृति से कविता में सौन्दर्य आ गया है। हमारे विचार से यह सत्य है।

(3) प्रकृति हिम के मुकुट, सूर्य की रज किरणों, सरिता युक्त माला, हरियाली के समान हरे रंग, दिशाओं, समुद्र, बादल, सूर्य, चन्द्रमा, सभी रूपों में अपना आदर व्यक्त करती है।

(4) 'भारत जननि! अंब! कविता से हमको देश-प्रेम और राष्ट्र-प्रेम की प्रेरणा मिलती है।

(5) (क) हवा और चाँदनी का मिलन अर्थात् शाम का समय स्नेहमय है।

(ख) पक्षी सदा वन्दना गीत गाते हैं।

(ग) सूर्य, चन्द्रमा, तारे सदा नमन करते हैं।

## भाषा अध्ययन

**1.** उदधि शंख औ तूर्य बादल बजाता,
विहग रब सदा वन्दना गीत गाता,
नमन कर रहे सूर्य औ चन्द्र तारे।
सृजन हास में, कोप में पर प्रलह है।

2. जननि — माता, माँ, अंबा
गगन — आसमान, आकाश, नभ
अनिल — पवन, वायु, हवा
अंक — संख्या, गिनती, क्रमांक
विहग — पंछी, खग, नभचर
बादल — जलद, वारिद, मेघ

3. (क) योग्य (ख) अग्रणित (ग) स्वदेशी
(घ) मानवनिर्मित (ङ) सामर्थ्यवान

# 2 वीर बालक की वर्षगाँठ

## मौखिक

(1) बालकरन ने अपनी वर्षगाँठ पर हथियारों की पूजा करने को कहा।

(2) बालकरन की मां ने कहा कि मैं अपने प्यारे बेटे को नहलाऊँगीं, चन्दन लगाऊँगीं, फलों की माला पहनाऊँगी, मिठाइयों के साथ खीर खिलाऊँगी और तुझे आसीस दूँगी।

(3) तैमूर के आने की वजह से ग्रामीण कल्याणी से भागने के लिए कहते हैं।

(4) तैमूर के गाँव में आने का उद्देश्य हिंसा और लूटपाट था।

(5) तैमूर के सिपाही बैठकर मिठाइयाँ खा रहे थे, इसलिए तैमूर उन्हें डाँटता है।

(6) तैमूर बालकरन को चाकू वाला बहादुर इसलिए कहता है क्योंकि वह तैमूर से चाकू से ही लड़ने को तैयार हो गया था।

## लिखित

(क) बारहवीं (ख) सुजान (ग) तैमूर
(घ) ऊँगली के खून से

(1) बालकरन दूध लाने के लिए माँ से आग्रह इसलिए करता है क्योंकि सूरज सर पर चढ़ आया था और पता नहीं सुजान दूध लेकर क्यों नहीं आया था?

(2) अलीबेग ने बढ़िया भोजन को सोना-चाँदी से बढ़कर इसलिए बताया क्योंकि उन्हें भूख लगी थी।

(3) बालकरन की निर्भीकता इस बात से प्रकट होती है कि उसने तैमूर की तलवार उठाते हुए कहा अब तुम मुझसे लड़ सकते हो तथा अपनी किसी भी बात को तैमूर के सामने रखते वक्त वह निडर था।

(4) तैमूर बालकरन की बहादुरी भरी बातें सुनकर कहता है कि तुम मुझसे भी बहादुर

और बड़े हो। क्योंकि वह तैमूर से चाकू से ही लड़ने को तैयार हो गया था।

(5) बालकरन को पाकर कल्याणी ममतावश रोने लगती हैं क्योंकि दादा चौधरी उन्हें बचाने के लिए तलघर में ले गये थे और बालकरन अकेला तैमूर का सामना कर रहा था।

(6) पाठ का शीर्षक 'वीर बालक की वर्षगाँठ' इसलिए रखा गया क्योंकि तैमूर ने आक्रमण बालकरन के जन्मदिन वाले दिन ही किया था तथा बालकरन एक वीर बालक था।

**भाषा अध्ययन**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** | हैसियत | — | औकात | नाचीज | — | तुच्छ |
| | जान बख्शना | — | माफ करना | हक | — | अधिकार |
| | हुक्म | — | आदेश | सलाम | — | नमस्कार |
| **2.** | मुबारक | — | बधाई देना | सलाम | | नमस्कार |
| | खामोश | — | चुप रहना | नाचीज | — | तुच्छ |
| | हक | — | अधिकार | जान बख्शना | — | माफकरना |
| | धावा | — | हमला | जर्रा–जर्रा | — | कण–कण |
| **3.** | बात | — | बातें | वह | — | हम |
| | चिता | — | चितायें | वाणी | — | वाणी |
| | तलवार | — | तलवारें | आदमी | — | आदमियों |

## 3 नशा

**मौखिक**

(1) लेखक और ईश्वरी में हमेशा बहसें होती रहती थीं क्योंकि लेखक हमेशा जमींदार की बुराई करता और ईश्वरी हमेशा पक्ष लेता था।

(2) नौकरों के साथ ईश्वरी कभी सीधे मुँह बात नहीं करता था।

(3) चलते समय ईश्वरी ने लेखक को समझाया कि वहाँ चलकर जमींदार की निन्दा मत करना।

(4) लेखक को स्टेशन पर भोजन में स्वाद इसलिए नहीं आया क्योंकि खानसामा ईश्वरी के हुक्म पर सब–के–सब दौडते थे, लेकिन लेखक कोई चीज मँगाता था तो उतना उत्साह नहीं दिखाते थे।

(5) घोड़े पर सवार होकर लेखक इसलिए डर रहा था क्योंकि उसने कभी घोड़े की

सवारी नहीं थी। बचपन में कभी केवल लद्दू घोड़ों पर सवार हुआ था।

(6) ईश्वरी के घर लेखक महात्मा गाँधी के कुँवर चेले के नाम से मशहूर था।

(7) लौटते समय रेल के उस डिब्बे में बैठना लेखक को बुरा लग रहा था क्योंकि वह जाते वक्त आराम से लेटे-लेटे गया था, जबकि वापस आते वक्त पहलू बदलने की भी जगह नहीं थी।

## लिखित

(क) एक गरीब क्लर्क का (ख) शांत (ग) सैर-सपाटे
(घ) प्रयाग

(1) ईश्वरी जमींदारों के पक्ष में कहता था कि ईश्वर ने असामियों को उनकी सेवा के लिए ही पैदा किया है। असामी भी यही समझता है।

(2) लेखक ने सोचा कि ईश्वरी के साथ परीक्षा की तैयारी खूब हो जायेगी इसलिए घर जाने का निश्चय किया।

(3) ठाकुर ने लेखक से प्रार्थना की कि—हुजूर अपने इलाके में थोड़ी-सी जमीन दे दें, तो चलकर वहीं आपकी सेवा में रहें।

लेखक ने उससे अपनी जान छुड़ाते हुए कहा कि अभी तो मेरा कोई अख्तियार नहीं है भाई, लेकिन ज्यों ही अख्तियार मिला, मैं सबसे पहले तुम्हें बुलाऊँगा। तुम्हें मोटर ड्राइवरी सिखाकर अपना ड्राइवर बना लूँगा।

(4) जब ईश्वरी ने अंग्रेजी में कहा कि वीर तुम कितने मूर्ख हो, तो लेखक को अपना नशा उतरा हुआ मालूम हुआ।

(5) लेखक को झूठी रहीसी का नशा हो गया था इसलिए इस पाठ का नाम नशा रखा गया।

(6) (क) मैं शर्मिन्दा हो रहा था, लेकिन पता नहीं क्यों उसका हास्य पद लग रहा था? उसके प्रत्येक वाक्य में, मैं अपने आपको सचमुच वैसा ही समझ रहा था जैसा कह रहा था।

(ख) आज मैं खानदानी रईस बनने का स्वांग कर रहा था।

## भाषा अध्ययन

**1.**
- मिट्टी पलीद करना
  उसकी बातों ने तो मेरी **मिट्टी पलीद कर** दी।
- पोतड़ों का रईस
  आज मैं **पोतड़ों के रईस** बनने का स्वांग कर रहा था।

- आपे से बाहर होना
  वह तो **आपे से बाहर होता** जा रहा है।
- रंग जमाना
  उसने महफिल में **रंग जमा** दिया।
- दाँतों तले उँगली दबाना
  लोगों ने ईश्वरी की बात सुनकर **दाँतों तले उँगली दबा** ली।
- लगने वाली बात
  तुमने आज मेरे दिल को **लगने वाली बात** कह दी।
- मुहर लगाना
  राजा की बात पर गुरुजी ने **मुहर लगा** दी।
- जान निकालना
  अरे! तुमने तो मेरी **जान ही निकाल** दी।

**2.**

| **शब्द** | | **प्रत्यय** | **शब्द** | | **प्रत्यय** |
|---|---|---|---|---|---|
| आतंकित | — | इत | जमींदारी | — | दारी |
| तमीजदार | — | दार | घरवाला | — | वाला |
| इंसानियत | — | यत | समीपतर | — | तर |
| सुस्ती | — | ई | गधापन | — | पन |
| नैतिक | — | इक | नम्रता | — | ता |
| मानुषीय | — | ईय | खैरियत | — | यत |

**3.** (1) क्लर्क (2) सेकेंड क्लास (3) इंटर क्लास
(4) स्टेशन (5) डिग्री (6) रिफ्रेशमेंट रूम

**4.** (1) जमींदार (2) जायदाद (3) असामियों

# 4 गुरु नानक देव जी

**मौखिक**

(1) कार्तिक पूर्णिमा के दिन सारे भारतवर्ष में कोई न कोई मेला, उत्सव, स्थान या अनुष्ठान होता है, इसलिए कार्तिक पूर्णिमा को पवित्र तिथि माना गया है।

(2) लेखक ने कहा कि जिस प्रकार आकाश में षोड्श कला से पूर्ण चन्द्रमा अपनी

कोमल स्निग्ध किरणों से प्रकाशित होता है, उसी प्रकार मानव चित्त में भी किसी उज्जवल प्रसन्न ज्योतिपुंज का आविर्भाव होना स्वाभाविक है।

(3) गुरु नानक देव का जन्म आज से 500 वर्ष पूर्व सन् 1469 ई० की कार्तिक पूर्णिमा को एक बेदी क्षत्रिय परिवार में लाहौर से 65 km दूर दक्षिण-पश्चिम में तलबंडी नामक स्थान पर हुआ था।

(4) नानक जी के जन्म के समय भारतीय समाज अलग-अलग जातियों में बँट गया था। व्यक्ति का ओहदा उसके कार्यों तथा गुणों के आधार पर नहीं, बल्कि जन्म के आधार पर तय किया जाता था।

(5) मुगल आक्रमणकारियों ने लोगों के साथ जो व्यवहार किया, वह इस प्रकार है सभी युवा स्त्रियाँ दासी बना ली गयीं। दूसरी स्त्रियों को जबरदस्ती सेनिकों के लिए अन्न पीसना तथा भोजन बनाना पड़ा। नगर को लूटकर वहाँ आग लगा दी गयी।

(6) गुरुनानक देव के लिए सभी लोग एक समान थे। कोई छोटा-बड़ा नहीं था। ऊँच-नीच, जात-पात का कोई भेद नहीं था। गुरुनानक देव नारी को भी बराबर समझते थे।

**लिखित**

(क) गुरुनानक देव (ख) 1469 (ग) सती

(घ) सत्य को प्रत्यक्ष करना

(1) गुरु नानक देव जी ने अमृत का काम किया और वे पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह विराजमान हैं।

(2) क्योंकि शर्दियों में अन्धेरा घना होता है, उस अन्धेरे में पूर्णिमा का चाँद अलग ही रोशनी देता है।

(3) आज से पाँच सौ साल पहले देश कुसंस्कारों में उलझा हुआ था। ऊँच-नीच, जाँत-पात तथा छुआ-छूत जैसी सोच समाज में फैली हुई थी।
नारियों को पुरुष अपने से नीचे समझता था।

(4) गुरु नानक देव की सहज साधना छोटे-बड़े, ऊँच-नीच, राजा, रंक का फर्क मिटाना तथा अछूतों को संगत और पंगत में मान-सम्मान देना था।

(5) गुरु नानक देव का व्यक्तित्व प्रेमपूर्ण, दयालु, समभावी तथा दैवीय था।

(6) (क) भारत वर्ष की मिट्टी में हर युग में कई महापुरुषों ने जन्म लिया है जैसे— द्वापर में कृष्ण, त्रेता में राम, कलयुग में स्वामी विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र बोस आदि। हर युग के अनुसार मिट्टी महापुरुष को जन्म दे

ही देती है।

(ख) सरलता से जीवन को जीना बहुत कठिन है, लेकिन सरलता से बोली गयी भाषा किसी को भी अपना बना लेती है।

**भाषा अध्ययन**

**1.** सर्वाधिक = सर्व + अधिक
कुलभिमान = कुल + अभिमान
टनायास = टन + आयास
अमृतोपम = अमृत + उत्तम

**2.** अपार शक्ति
बलवती आस्था
मृतप्राय: आचार
तीव्र प्रहार
अर्थहीन संकीर्णता
आध्यात्मिक दृष्टि
चरम प्राप्तव्य
परम लक्ष्य
बाह्य आडम्बर
निरीह रूप
क्षुद्र अहमिका

**3.**

| **शब्द** | | **उपसर्ग** | | **अर्थ** |
|---|---|---|---|---|
| प्रतिक्षण | — | उपसर्ग प्रति | — | हर पल |
| विच्छिन्न | — | वि | — | अलग |
| संस्कार | — | सम् | — | कृत्य |
| निरभिमान | — | नि् | — | अभिमान रहित |
| सम्मुखीन | — | सम् | — | समझ |
| अनुग्रह | — | अनु | — | विनती |
| अवतार | — | अ | — | मानव रूप में भगवान अवतार |
| अनुभूत | — | अनु | — | अहसास |
| संजीवनी | — | सम् | — | छोटा |
| सम्बन्ध | — | सम् | — | रिश्ता |
| उद्‌भासित | — | उद | — | प्रकट होना |

**4.**

| **शब्द** | **प्रत्यय** | **शब्द** | **प्रत्यय** |
|---|---|---|---|
| स्वाभाविक | इक | महत्व | त्व |
| पाण्डित्य | त्य | अवतार | आर |
| उल्लासित | इत | प्रहार | आर |
| संजीवनी | नी | अनुग्रह | ग्रह |

# 5 केवत प्रेम

## मौखिक

(1) केवट जान गया था कि राम भगवान के अवतार हैं।

(2) रामचन्द्र जी को नाव में बिठाने से पहले केवट उनके चरणों को धाना चाहता था।

(3) केवट ने कहा, 'हे राम! मुझे आपकी सौगन्ध है, चाहे लक्ष्मण मुझे तीर मार दें लेकिन जब तक आप मुझे पैरों को धोने नहीं देंगे, मैं आपको पार नहीं करुँगा। इस बात को सुनकर राम सीता और लक्ष्मण की ओर देखकर हँसने लगे।

(4) राम चन्द्रजी ने नाव उतराई में केवट को अँगूठी देनी चाही।

(5) गंगा पार होने के बाद श्री राम को संकोच इसलिए हुआ कि उन्होंने केवट को कुछ नहीं दिया था।

## लिखित

(क) दास्य (ख) दरिद्रता की

(1) रामचंद्र जी को अपनी नाव में बिठाने के लिए केवट ने आना कानी की क्योंकि वह सोच रहा था कि जिनके चरणों की धूल से पत्थर को नारी बनने में देर नहीं लगी, कहीं ऐसा न हो कि पैर रखते ही मेरी नाव भी घरवाली बन जाये या रास्ते में मेरी नाव उड़ जाये।

(2) केवट रामचन्द्र जी के चरणों को धोना चाहता था क्योंकि उनके चरणों की धूल से पत्थर नारी में बदल गया था, उसे डर था कहीं उसकी नाव भी नारी न बन जाये।

(3) केवट ने कहा कि मुझे आपकी सौगन्ध है, जब तक आप मुझे चरणों को धोने नहीं देंगे, मैं आपको पार नहीं करूँगा, चाहे इसके लिए मुझे लक्ष्मण तीर भी मार दें। केवट की इन प्रेम भरी अटपटी बातों को सुनकर श्रीराम चन्द्र जी हँस दिये।

(4) केवट के द्वारा चरण पखारे जाने पर गंगा नदी इसलिए हर्षित हुईं क्योंकि केवट ने श्री राम के चरणों को गंगाजल से धोया था और उन्हें राम के चरणों को छूने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

(5) केवट ने राम से नदी पार होने की उतराई नहीं ली। उसने कहा हे प्रभु! आज तो आपके दर्शनों से मेरे सारे दुख दरिद्र दूर हो गये हैं, आज तो मुझे सब कुछ मिल गया है।

## भाषा अध्ययन

1. (क) केवट सोच रहा था कि कहीं ऐसा न हो मेरी नाव भी नारी बन जाये और मैं बरबाद हो जाऊँ।

(ख) श्रीराम चन्द्र जी ने केवट की तरफ देखते हुए कहा कि तुम्हारी जो मर्जी हो, वो तुम कर सकते हो। मगर जल्दी पार उतार दो।

(ग) आपके प्रिय श्रीराम जी के मन की बात को सीता जी जान गयीं और अपनी अँगूठी उतार कर दे दी।

(क) तरनिउ मुनि घरिनी होई जाई।
बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।।
एहिं प्रतिपालउँ सबू परिवारु।
नहिं जानऊँ कछु अउर कबारू।

(ख) बेगि आनु जल पाय पखारुँ।
होत विलंब उतारहिं पारू।।
जासु नाम सुमिरत एक बारा।
उतरहिं नर भव सिंधु अपारा।।

**3.**

| | |
|---|---|
| दरिद | दरिद्र |
| चरन | चरण |
| हिम | हिम |
| सिला | शिला |
| लखन | लक्ष्मण |
| करुना | करुणा |

# 6 पानी का चक्कर

**मौखिक**

(1) हमारे आस-पास विज्ञान और उसकी आविष्करित वस्तुएँ स्थित रहती हैं, इसलिए विज्ञान ने मानव जीवन को सरल और उपयोगी बना दिया है।

(2) रमन श्रीवास्तव बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए हर शनिवार को अपने यहाँ एक गोष्ठी रखते हैं। इस बार गोष्ठी का विषय 'पानी की समस्या' था।

(3) प्रकाश के देर से आने का कारण तीसरी मंजिल पर पानी का कम चढ़ पाना हैं, जिसकी वजह से उसे नहाने में देर हो गयी थी।

(4) रेगिस्तान में अधिकतर कैक्टस जाति के पौधे ही पाये जाते हैं क्योंकि इन पौधों में

पत्तियों के स्थान पर काँटे होते हैं। काँटों के कारण एक तो जीव-जन्तु इन पर आसानी से मुँह नहीं मार सकते तथा तपते सूरज की किरणों को भी ये काँटे परावर्तित करके लोटा देते हैं। परिणामस्वरूप बहुत कम ऊष्मा ही इन पौधों के अन्दर प्रवेश कर पाती है और इनके अन्दर नमी का स्तर ठीक बना रहता है।

(5) आस्ट्रेलिया के मरुस्थल में पाये जाने वाले गिरगिट के शरीर पर बड़े-बड़े नुकीले सख्त काँटों का जाल सा बिछा होता है। काँटों के बीच-बीच में बारीक छिद्र बने होते हैं। इन छिद्रों से होकर ही बारिश आदि का पानी गिरगिट के शरीर में प्रवेश करता है। यह सारा पानी गिरगिट के शरीर के अन्दर मौजूद एक नली से गुजरकर उसके मुँह के पास स्थित दो थैलियों में इकट्ठा होता है। ये थैलियाँ गिरगिट के लिए एक थरमश का ही काम करती हैं। प्यास लगने पर गिरगिट अपनी इन्हीं थैलियों को संकुचित करता है, जिससे पानी सीधा उसके मुँह में जा पहुँचता है।

(6) मरुस्थल में गिरगिट की चर्बी इनकी पूँछ में संचित रहती है बाहर पानी न उपलब्ध होने पर यही चर्बी पानी में परिवर्तित होती है, जिससे इसकी पानी की जरूरत पूरी होती है।

**लिखित**

(क) गोष्ठी (ख) बोतलों में बिकने वाला (ग) 3/4
(घ) आस्ट्रेलिया

(1) जल का अधिक उपयोग करने के कारण ही भू-जल का स्तर नीचे गिरता जा रहा है।

(2) जीवित रहने के लिए हमें हवा, पानी और भोजन की आवश्यकता पड़ती है।

(3) ''जल एक अमूल्य संसाधन है। तभी तो प्रकृति ने पृथ्वी के लगभग 3/4 भाग को जल से भर दिया है। अत: जल के बिना न तो पेड़-पौधों का और न किसी अन्य जीव का ही जीवन संभव है। अगर हम जल को बचा नहीं पाये तो कुछ भी बचा पाना कठिन होगा। यानी अगर जल है, तभी हमारा आने वाला कल भी होगा।''

(4) ऊँट की शारीरिक ऊष्मा द्वारा ही उसके कूबड़ में वसा का दहन होता है। इस दहन प्रक्रिया द्वारा ऊर्जा के साथ-साथ पानी भी निकलता है। इस तरह ऊँट की भोजन की आवश्यकता भी पूरी होती है। एक और बात भी ध्यान देने योग्य है कि ऊँट के शरीर से पसीने या पेशाब के रूप में भी पानी की बर्बादी कम होती है। यही कारण है कि कई-कई हफ्तों तक ऊँट बिना पानी के रेगिस्तान में बड़े मजे से रह सकता है।

(5) कंगारू चूहा छोटे-छोटे बीज आदि इकट्ठा करके उनको रेत के नीचे गाड़ देता है। जमीन के अन्दर जो थोड़ी बहुत नमी होती है, उसे सोखकर ये बीज फूल जाते हैं। इन बीजों को कंगारू चूहा खोदकर खाता है और अपनी भूख और प्यास दोनों शान्त करता है। बीज जमीन के अन्दर से जो नमी सोखते हैं, उसी से ही कंगारू चूहे की पानी की जरूरत पूरी होती है।

(6) जब गिरगिट के दोनों थरमस खाली हो जाते हैं तो वह नखलिस्तान में किसी पानी के चश्मे में कलाबाजी खाता है। दो-एक डुबकी ले लेने से ही इसके शरीर में काँटों के बीच बने छिद्रों से पानी घुसकर इसकी थैलियों में दुबारा भर जाता है।

(7) (क) क्योंकि रेगिस्तान में पानी की कमी है और वहाँ ऊँट बिना पानी पिये दो तीन सप्ताह तक रह सकता है तथा उसके पैर गद्देदार होते हैं, जिसकी वजह से वह रेगिस्तान में आसानी से चल सकता है, दौड़ सकता है। इन्हीं कारणों से उसे रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है।

(ख) 'जल की महिमा सर्वविदित है' क्योंकि जल के बिना जीवन सम्भव नहीं। यह सभी जानते हैं। जल के बिना न तो पेड़-पौधों का और न किसी अन्य जीव का ही जीवन संभव है। अगर हम जल को बचा नहीं पाये, तो कुछ भी बचा पाना कठिन होगा।

**भाषा अध्ययन**

**2.** समय — काल, वक्त, बेला

नगर — शहर, कस्बा

दिन — दिवस, वार, वासर

देश — राष्ट्र, मुल्क, राज्य

ज्ञान — विद्या, शिक्षा, बोध

**3.** (क) वह — पुरुषवाचक सर्वनाम

(ख) हम — पुरुषवाचक सर्वनाम

(ग) स्वयं — निजवाचक सर्वनाम

(घ) जितना, उतना — सम्बन्धवाचक सर्वनाम

(ङ) यह — निश्चयवाचक सर्वनाम

(च) तुमने — पुरुषवाचक सर्वनाम

# 7 निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

## मौखिक

(1) कस्तूरबा अनपढ़ थी, लेकिन वे अंग्रेजी समझ लेती थी और कुछ शब्द बोल लेती थीं। किसी विदेशी मेहमान के आने पर इनकी ये पूँजी काम आती थी। कभी-कभी तो उस संभाषण से विनोद भी पैदा हो जाता था।

(2) दुनिया की दो अमोघ शक्तियाँ शब्द और कृति हैं। कस्तूरबा की निष्ठा कृति में थी।

(3) कस्तूरबा में पतिव्रत धर्म, त्याग व सेवापरायणता जैसे महान गुण एक आदर्श भारतीय नारी के थे।

(4) पति के गिरफ्तार होने के बाद काम को आगे चलाने की जिम्मेदारी बा ने ही उठाई है। महात्मा गांधी को जिस सभा में जाना था। उस सभा में जाने का निश्चय कस्तूरबा ने किया तथा तब सरकार ने उन्हें मना किया तो, उन्होंने जवाब दिया कि सभा में मेरे जाने का निश्चय पक्का है। मैं जाऊँगी ही। इससे बा की कर्तव्यनिष्ठा प्रकट होती है।

(5) बा भले ही अशिक्षित रही हों, संस्था चलाने की जिम्मेदारी लेने की महत्वकांक्षा भले ही उनमें कभी जागी नहीं हो, देश में क्या हाल चल रहा है? उसकी सूक्ष्म जानकारी वह प्रश्न पूछ-पूछ कर या अखबारों के ऊपर नजर डालकर प्राप्त ही कर लेती थीं।

(6) काका कालेलकर ने 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' में 'सीता जी' का चित्र अंकित किया है।

## लिखित

(क) 'बा' (ख) अनपढ़ (ग) संस्कार बल (घ) शिवरात्रि

(1) संस्कार बल के सहारे कस्तूरबा ने अपना जीवन सफल बनाते हुए भारतीय नारी के आदर्शों की प्रतिष्ठा की।

(2) कस्तूरबा के जीवन से आज की नारी को पतिव्रत धर्म, त्याग व सेवापरायणता की प्रेरणा मिलती है।

(3) आज के जमाने में स्त्री-जीवन सम्बन्ध ने हमारे आदर्श काफी बदल दिये हैं। आज कोई स्त्री अगर कस्तूरबा की तरह अशिक्षित रहे और किसी तरह

महत्वकांक्षा का उदय उसमें न दिखाई दे तो, हम उसका जीवन यशस्वी या कृतार्थ नहीं कहेंगे। ऐसी हालत में जब कस्तूरबा की मुत्यु हुई, पूरे देश ने स्फूर्ति से उनका स्मारक बनाने का निश्चय किया और सहज ही इकट्ठी न हो पाए, इतनी बड़ी निधि इकट्ठी कर दिखाई। इससे प्रमाण दिया है कि हमारा प्राचीन तेजस्वी आदर्श अब देशमान्य है। हमारी संस्कृति की जड़ें आज भी काफी मजबूत हैं।

(4) कस्तूरबा के 'राष्ट्रमाता' के पद पर प्रतिष्ठित किए जाने का श्रेय, उनको ही जाता है, क्योंकि वे अपने आंतरिक सद्‌गुणों और निष्ठा के कारण ही राष्ट्रमाता बन पाई।

(5) दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं—शब्द और कृति। इनमें कोई शक नहीं कि 'शब्दों ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है किन्तु अन्तिम शक्ति तो कृति की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति-कृति की नम्रता के साथ उपासना करके संतोष माना और जीवन-सिद्धि प्राप्त की।

(6) डॉक्टर ने जब उन्हें धर्म-विरुद्ध खुराक लेने की बात कही तब भी उन्होंने धर्मनिष्ठा पर कोई व्याख्यान नहीं किया। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा—''मुझे अखाद्य खाकर जीना नहीं है। फिर भले ही मुझे मौत का सामना कना पड़े।''

**भाषा अध्ययन**

**1. ( क ) दुनिया में ........................................................................ सिद्धि प्राप्त की।**

दुनियाँ की दो शक्तियाँ शब्द और कृति यानि कर्म है। शब्दों से सारी पृथ्वी में जोश जगाया गया। और हिला दिया गया। लेकिन अन्तिम शक्ति तो कर्म है बिना कर्म के शब्दों का कोई अर्थ नहीं है। महात्मा गाँधी ने दोनों की उपासना की। कस्तूरबा जी ने कृति यानि कर्म को अधिक महत्व दिया, उसकी उपासना की और जीवन में सिद्धि प्राप्त की।

**( ख ) आज के जमाने में .......................................................... काफी मजबूत हैं।**

आज के समय स्त्री जीवन के आदर्श काफी बदल गए हैं। आज अगर कोई स्त्री अशिक्षित है और उसमें कोई महत्वकांक्षा नहीं है तो, उसका जीवन यश प्राप्त करने वाला तथा कर्मपूर्ण नहीं कहा जा सकता, लेकिन इन सब के बावजूद कस्तूरबा की मृत्यु पर लोगों ने उनका स्मारक बनाने का निर्णय लिया जो प्रसिद्धि लोगों को नहीं मिलती वह कस्तूरबा ने आसानी से प्राप्त कर ली। हमारा तेजस्वी

आदर्श आज भी देशमान्य है। हमारी संस्कृति की जड़े आज भी काफी मजबूत है।

**2.** (क) कस्तूरबा जी को कैद के जीवन में मिला किसी भी प्रकार का ऐशो आराम पसन्द नहीं था। उनके लिए तो स्वतन्त्र जीवन की वह सेवाग्राम की कुटिया ही सभी सुखों की खान थी।

(ख) हमारे देश में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। वे सभी एक साथ रहते हैं। एक ही लोकतन्त्र को मानते है। यह सब हमारी संस्कृति की वजह से सम्भव है। हमारी संस्कृति की जड़ें काफी मजबूत हैं।

**3.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लोकात्तर | — | लोक + उत्तर | स्वागत | — | स्व + आगत |
| निर्भर्त्सना | — | नि् + भर्त्सना | प्रस्तुयत्पन्न | — | प्रत्य + उत्पन्न |
| गुणाकार | — | गुण + आकार | महत्वकांक्षा | — | महत्व + कांक्षा |
| एकाक्षरी | — | एक + अक्षरी | निस्तेज | — | नि् + तेज |

**4.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अमलदार | — | आज्ञाकारी | खुद | — | स्वयं |
| आबदार | — | साफ | जिद्द | — | हठ |
| हासिल | — | प्राप्त किया | कायम | — | स्थित |

# 8 बिस्मिल की कलम से

**मौखिक**

(1) बिस्मिल को फाँसी देना 19 दिसम्बर, 1927 दिन सोमवार, समय प्रात: साढ़े छ: बजे निश्चित हुआ।

(2) बिस्मिल ने अपने अगले जन्म के लिए ईश्वर से प्रार्थना की कि मुझे इसी देश में जन्म दे।

(3) लेजिस्लेटिव असेंबली तथा कौंसिल ऑफ स्टेट के सदस्यों ने वायसराय के पास प्रार्थना पत्र भेजा कि काकोरी षड्यंत्र में मृत्युदण्ड पाये लोगों की सजा बदलकर दूसरी सजा कर दी जाये।

(4) सर विलियम मोरिस ने ही स्वयं शाहजहाँपुर तथा इलाहाबाद के हिन्दु–मुस्लिम दंगे के अभियुक्तों के मृत्युदण्ड रद्द किए।

(5) रामप्रसाद बिस्मिल ने जेल से भागने का प्रयत्न किया क्योंकि ऐसा करने पर सरकार को अन्य तीन फाँसी वालों की सजा माफ कर देनी पड़ेगी और यदि न करते तो करा लेता।

(6) बिस्मिल ने देशवासियों से अंतिम विनय में कहा कि जो कुछ करें सब मिलकर करें और देश की भलाई के लिए करें। इसी से सबका भला होगा।

**लिखित**

(क) 1927 (ख) काकोरी षड्यंत्र (ग) अंग्रेजी अदालत
(घ) जेल से भागने का

(1) रामप्रसाद बिस्मिल अगला जन्म भारत में ही लेना चाहते थे क्योंकि उस समय भारतवर्ष की अवस्था बड़ी शोचनीय थी। वो वेदवाणी का अनुपम घोष मनुष्य के कानों तक पहुँचाना चाहते थे।

(2) बिस्मिल ने मुसलमानों में से एक नवयुवक निकालकर भारतवासियों को दिखला दिया, जो सब परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुआ। अब किसी को यह कहने का साहस न होना चाहिए कि मुसलमानों पर विश्वास न करना चाहिए। तब उन्होंने कहा कि पहला तजुरबा था, जो पूरी तौर से कामयाब हुआ।

(3) बिस्मिल को फाँसी काकोरी षड्यन्त्र के कारण हुई थी।

(4) बिस्मिल प्राण त्यागते समय निराश नहीं थे क्योंकि उनका मानना था कि हम लोगों के बलिदान व्यर्थ नहीं गए। मेरा तो विश्वास है कि हम लोगों की छिपी हुई आहों का ही यह नतीजा हुआ कि लार्ड बर्कनहैंड के दिमाग में परमात्मा ने एक विचार उपस्थित किया कि हिन्दुस्तान के हिन्दू-मुस्लिम झगड़ों का लाभ उठाओ और भारवर्ष की जंजीरों को कस दो।

(5) सरकार ने अशफाक उल्ला खाँ का दाहिना हाथ करार दिया। अशफाक उल्ला खाँ कट्टर मुसलमान होकर, पक्के आर्य समाजी रामप्रसाद के क्रान्तिकारी दल के संबंध में दाहिना हाथ बन गए।

(6) बिस्मिल ने देश के नवयुवकों को सलाह देते हुए कहा कि जब तक भारतवासियों की अधिक संख्या सुरक्षित न हो जाए, तब तक भूलकर भी किसी प्रकार के क्रान्तिकारी षड्यन्त्रों में भाग न लें।

(7) बिस्मिल के साथ राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह तथा अशफाक उल्ला खाँ को अंग्रेजी शासन द्वारा फाँसी की सजा दी गई।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) मृत्यु के सभी उपक्रम साधन मात्र हैं क्योंकि यह सर्वशक्तिमान प्रभु की लीला है। सभी कार्य उसकी इच्छा अनुसार होते हैं। यह परमपिता परमात्मा के नियमों का परिणाम है। किस प्रकार किसको शरीर त्यागना होता है।

(ख) बिस्मिल ने कहा कि—मैं प्राण त्यागते समय निराश नहीं हूँ कि हम लोगों के बलिदान व्यर्थ गए। मेरा तो विश्वास है कि हम लोगों की छिपी हुई आहों का ही यह नतीजा हुआ कि लार्ड बर्कनहैंड के दिमाग में परमात्मा ने एक विचार उपस्थित किया कि हिंदुस्तान के हिन्दु-मुस्लिम झगड़ों का लाभ उठाओ और भारतवर्ष की जंजीरों को कस दो।

2.

| हिन्दी | अंग्रेजी | उर्दू |
|---|---|---|
| निमित्त | असेंबली | सिफारिश |
| ग्रहण | काउंसिल | हुकूमत |
| सर्वज्ञ | मजिस्ट्रेट | नतीजा |
| संवरण | मेंबर | |
| सुबुद्धि | लेजिस्लेटिव काउंसिल | |
| पश्चाताप | रिवाल्वर | |
| फायदा | आनरेरी | |
| विनम्र | | |
| उत्तीर्ण | | |
| परिश्रम | | |
| स्वीकृति | | |

# 9 शक्ति और क्षमा

## मौखिक

(1) कौरव और पाँडव आपस में चचेरे भाई थे।

(2) वीर पुरुष को क्षमा शोभा देती है। एक राजा के पास मारने का अधिकार होते हुए भी उसे दोषी को क्षमा कर देना चाहिए।

(3) समुद्र भय के बंधन में बँध गया था।

(4) वीर पुरुष का संधि प्रस्ताव स्वीकार किया जाता है क्योंकि उसमें जीतने की शक्ति होती है।

(5) शत्रु एक हिंसक पशु के समान होता है। इसलिए वह क्षमा, दया, त्याग आदि की परवाह नहीं करता।

## लिखित

(क) तीन दिन से (ख) महाभारत (ग) आत्मसम्मान

(घ) मानवता–स्वष्टता

(1) कौरवों और पांडवों की आपसी शत्रुता का कारण राज्य था।

(2) कौरवों ने पाण्डवों को उनके क्षमा और विनम्र गुण के कारण कायर समझा।

(3) रघुपति 'श्री राम' राजा दशरथ के पुत्र थे। वे समुद्र से रास्ता देने के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

(4) बलवान व्यक्ति संपूज्य होता है क्योंकि उसके अन्दर सहनशीलता, क्षमा, दया का गुण होता है।

(5) जब रघुपति ने समुद्र को जलाने के लिए गुस्से से धनुष पर बाण साधा तो समुद्र रघुपति की शरण में आ गया।

(6) कायरता युद्ध से डरकर भाग जाना होता है जबकि अहिंसा शान्तिपूर्ण तरीके से युद्ध करना। इसलिए ये जीवन के दो भिन्न–भिन्न पहलू हैं।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सिन्धु | — | सागर | जलधि | समुद्र |
| जंग | — | लड़ाई | संग्राम | युद्ध |
| मूढ़ | — | मूर्ख | अज्ञानी | जढ़ |
| रिपु | — | नृप | नरेन्द्र | भूप |
| भुजंग | — | विषधर | साँप | सर्प |

**2.** (क) क्षमा हमेशा वीर पुरुष को शोभा देता है। जिस प्रकार उस साँप के क्षमा करने से क्या फायदा जिसके पास जहर ही न हो?

(ख) जब श्री राम इन्तजार करते थक गए, तो उनको गुस्सा आ गया और उनके अन्दर वीरता की आग धधकने लगती है, तब वो समुद्र को जलाने के लिए बाण को धनुष पर साधते हैं।

(ग) समुद्र ने राम को गुस्से में देखकर उनके चरणों को पूजा और उनका दास बन गया।

**3.** (क) त्रिलोकपति (ख) परमात्मा (ग) गुरुद्वारा (घ) परमेश्वर

# 10 दक्षिण भारत की रोचक यात्रा

**मौखिक**

(1) केरल में प्रवेश करते ही स्त्रियाँ 'महाश्वेता' की छवि धारण कर रही थीं। जिसने

लेखक को प्रभावित किया।

(2) मीनाक्षी मंदिर तिरुअनन्तपुरम के मदुराई में है। श्री गुरुस्वामी और उनके सहयोगी श्री सभापति ने हमें वहाँ के दर्शनीय स्थल दिखलाए, जिसमें मीनाक्षी का मंदिर विशेष प्रसिद्ध है। यह बहुत विस्तीर्ण है। जो कई गोपुरम से घिरा हुआ है। गोपुरम ऊँचा गुम्बद के समान द्वार है, जिसमें अनेक मूर्तियों में पौराणिक गाथाएँ अंकित हैं। मंदिर के प्रत्येक खंभेपर हाथी के ऊपर सवार सिंह दिखलाया गया है। ये बड़ी सजीव मूर्तियाँ हैं। यहाँ एक हजार खंभों वाला हॉल है, जहाँ हजारों नर-नारी प्रसाद पा सकते हैं। मंदिर में कुछ दक्षिणान्य संतों की प्रतिमाएँ हैं। जो संख्या में कदाचित 63 हैं। मंदिरों में इनकी वाणियों का अध्ययन-मनन होता रहता है।

(3) दक्षिण भारत के कुछ प्रसिद्ध मंदिर रामेश्वर तथा श्रीरंगम का मंदिर है। रामेश्वरम् में मंदिर तो विशाल है पर स्वच्छता नहीं, कई तीर्थ कूप है, जिनका पानी मीठा हैं। त्रिचिनापल्ली में सहस्त्रों सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद ऊँचाई पर एक विशालकाय मंदिर है। यहाँ से नदी और नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है।

(4) तमिलनाडु के निवासियों को अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, अपना देश सर्वोपरि जान पड़ता है। लेकिन फिर भी समय की आवश्यकता के अनुसार अपने को ढाल लेता है। अपनी बात को बड़ी चतुराई के साथ साध लेता है। चटपटी, खारी, खट्टी चीजें इन लोगों को अधिक प्रिय हैं। घी की अपेक्षा नारियल तेल का प्रयोग अधिक होता है। वहाँ के लोग ईमानदार हैं। जब वे भात पर घी डालते हैं, तो वह शुद्ध होता है तथा स्टेशनों पर आपकी आँखों के सामने दूध में पानी मिलाकर देंगे और कहेंगे कि शुद्ध दूध हम नहीं बेचते, हम कॉफी का दूध रखते हैं।

(5) उत्तर के गाँव जहाँ चारों ओर पुरीष से घिरे रहते हैं। वहाँ केरल के गाँव गली-गली स्वच्छ झलकते हैं।

(6) मद्रास में लेखक ने मिश्र जी की गृह गोष्ठी देखी यहाँ अड्यार पुस्तकालय काफी सम्पन्न है। यहाँ का जग-प्रसिद्ध वटवृक्ष दर्शनीय है। इसकी लम्बाई उत्तर से दक्षिण की ओर 200 फुट और चौड़ाई पूरब से पश्चिम की ओर 205 फुट है। वर्तमान में यह वृक्ष दर्शकों का विश्रामस्थल बना हुआ है। मद्रास का समुद्रतट बहुत सुन्दर है। यहाँ शाम को मेला सा लग जाता है।

वहाँ की हिन्दी प्रचार सभाओं और गोष्ठियों से पता चलता है कि उसकी प्रगति चरम सीमा पर है।

(7) कन्याकुमारी पर तीन सागरों का मिलन होता है। हमारे सम्मुख हिन्द महासागर,

दाईं ओर अरबसागर और बाईं और बंगाल की खाड़ी का जल उछल-उछल कर तरंगित हो रहा था।

(8) जनसंख्या का आधिक्य है।

**लिखित**

(क) बेजवाड़ा (ख) त्रावण कोर (ग) त्रिवेन्द्रम

(घ) मद्रास

(1) केरल में प्रवेश करते ही स्त्रियों की पोशाक के रंग में अंतर दिखाई देने लगता है यहाँ वे 'महाश्वेता' की छवि धारण कर लेती हैं। उन्हें तमिल की स्त्री के समान हरा रंग पसंद नहीं, वे उजले रंग के वस्त्र पहनती हैं।

(2) दक्षिण भारत के कुछ प्रसिद्ध मंदिर रामेश्वरम् तथा श्रीरंगम का मंदिर है। रामेश्वर में मंदिर तो विशाल है पर स्वच्छता नहीं। कई तीर्थ कूप हैं, जिनका पानी मीठा है। त्रिचिनापल्ली में सहस्त्रों सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद ऊँचाई पर एक विशालकाय मंदिर है, यहाँ से नदी और नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है।

(3) दक्षिण भारत में लेखक ने सर्वप्रथम आन्ध्रप्रदेश में प्रवेश किया। यहाँ की स्त्रियाँ खुली साड़ी धारण करती हैं, पुरुष भी लुँगी नहीं पहनता, वह उत्तर वासी की तरह धोती ही पहनता है और उसके पीछे लांग का छोर झंडी की तरह लहराता दिखाई देता है। वर्ण प्राय: गौर होता है। लोग तेलुगू भाषा बोलते हैं।

प्रात: लोग चाय के बजाय काफी की अधिक मांग करते हैं और साथ में भाप से बनी हुई चावल की इडली का नाश्ता करते हैं। स्त्रियों में फूल का अधिक चाव है। प्राय: उनके केश उनकी मालाओं से सुरभित होने लगते हैं।

(4) आधुनिक महाराष्ट्र की नारी स्वच्छ साड़ी पहनना पसन्द करती हैं। तमिल और केरल की नारी भी उसी तरह साड़ी पहनती है। जिसका एक छोर दक्षिण कंधे से होता हुआ पीछे एडी से छूता हुआ झूलता है। उसका सिर सदा खुले रहने का रिवाज धीरे-धीरे उत्तर के शिक्षित घरों में भी बढ़ रहा है। वेश-भूषा में नारी भारतीय एकता का प्रतीक बनती जा रही है।

(5) केरल में दो चार गाँवों के मध्य एक हाईस्कूल, बीस-पच्चीस गाँवों के बीच एक कॉलेज आवश्यक समझा जाता है। वहाँ हिन्दी का इतना अधिक प्रचार है कि गाँव-गाँव में उसे बोलने समझने वाले स्त्री-पुरुष मिल जाते हैं। केरल में तो शिक्षित परिवार में जहाँ कन्या को संगीत और चित्रकारी व नृत्य आदि की शिक्षा दी जाती है। वहाँ अब हिन्दी भी पढ़ाई जाती है। बिना हिन्दी सीखे वहाँ सुसंस्कृत

नहीं समझी जाती है। विवाह के समय पिता अपने भावी दामाद या भावी समधी से कहता है कि संगीत, चित्रकला के अलावा मेरी लड़की हिन्दी भी जानती है। त्रावणकोर विश्वविद्यालय में प्रतिवर्ष इण्टरमीडिएट में लगभग छः हजार लड़के-लड़कियाँ हिन्दी लेकर परीक्षा में बैठते हैं। परीक्षा के लिए हिन्दी कई वर्षों से अनिवार्य बनी हुई है।

(6) जब पार्वती जी का शिव से परिणय होने वाला था, शिव जी की बारात वहाँ तक नहीं पहुँच पाई। कुमारी पार्वती उनकी खोज में चली गईं, पर उनका पता नहीं चला। सवेरा होने पर ज्ञात हुआ कि शिवजी शुचिन्द्रम तक आ गये पर विवाह-मुहूर्त रात में था। अतः पार्वती जी को उदास होकर अपने निवास स्थान पर लौट आना पड़ा और तभी से वे 'कन्याकुमारी' कहलाकर इस मंदिर में वास करती हैं। इसलिए इसका नाम कन्याकुमारी पड़ा। कन्याकुमारी में तीन समुद्रों का मिलन होता है। यहाँ पर सूर्योदय तथा सूर्यास्त का दृश्य बहुत ही सुहावना होता है।

(7) दक्षिण भारत तमिलनाडु के होटलों में एक बात यह देखी गई है कि जब वे भारत पर घी डालते हैं, तो वह हमारे राज्यों की तरह वनस्पति-मिश्रित नहीं होता, शुद्ध घी ही होता है। होटलवालों की यह ईमानदारी प्रशंसनीय है। मैंने मद्रास, मथुरा, त्रिचिनापल्ली, रामेश्वरम् आदि स्थानों के होटलों में भोजन किया और मुझे हर जगह शुद्ध ताजे घी का स्वाद मिला। दूध के संबंध में भी यहाँ के दुकानदार बड़े स्पष्टवादी हैं। दक्षिण के स्टेशनों पर आपकी आँखों के सामने ही पाल (दूध) में वल्लभ (पानी) मिलाकर देंगे और कहेंगे, शुद्ध दूध हम नहीं बेचते, हम कॉफी का दूध रखते हैं। इस व्यवसायिक ईमानदारी ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया।

(8) त्रिवेन्द्रम से कन्याकुमारी की यात्रा बड़ी रोचक थी। त्रिवेन्द्रम के बाजारों में आपको बहुत से स्त्री पुरुष नंगे पैर चलते दिखाई देते हैं। क्योंकि यहाँ प्रायः बारहों महीने बूँदा-बाँदी होती रहती है। इसलिए कीचड़ से बचने के लिए प्राकृतिक ढंग से ही नंगे-पाँव चलते हैं। विश्वविद्यालय कार्य से निवृत्त होकर सबसे पहले मैंने समुद्र-दर्शन की इच्छा की। अध्यापक चन्द्रहासन और विलायुधन के साथ हम हवाई अड्डे को छूते हुए समुद्र तट पर गए। वहाँ समुद्र बड़ा उग्र है, खूब आवाज करता है। सामने से दूर की लहरें छोटी-छोटी किश्तियों के समान हिलती-डुलती चली आ रही हैं। एक के बाद एक ऊपर उठती जा रही हैं। पहाड़-सा बन रही हैं। एक ही समय न जाने कितने पर्वत बन रहे हैं, मिट रहे हैं। लहरें दौड़ती चली आ रही हैं। हमारे पैरों को छूकर न जाने कितनी दूर पीछे

चली गयीं। हम उनमें घिर गए। वे हमें बहाना चाहती हैं। पैर जमीन से उखाड़ना चाहती हैं। हम प्रयत्न कर उन्हें जमाये हुए हैं—बस क्षणभर में ही लहरें हमें छोड़कर भाग गईं। हमारे गीले पैर पानी से दूर हो गये—लगता है लहरें अब कभी नहीं आयेंगी, पर कुछ ही क्षणों में फिर टकराकर झोंका गया और हमारे पैरों पर गिरकर हमें पुन: घेरकर पीछे और फिर तेजी से आगे दौड़ गया। हम लहरें लेने में अभ्यस्त हो गये। पैर जमे रहते हैं। लहरें आती हैं, जाती हैं। अब भय नहीं लगता, आनन्द आता है।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) समुद्र में मछुआरे अपनी नौका लहरों में डाल रहे हैं। दो मछुआरों ने अपनी किश्ती लहरों में फेंक दी। वे भयंकर समुद्र में जाना चाहते हैं। लहरें किश्ती को बार-बार ऊपर ऊपर-नीचे कर रही हैं। लगता है, अब डूबे! बड़े संघर्ष के बाद मछुआरे समुद्र की सतह पर पुन: नौका खेते दिखाई दिये।

(ख) दक्षिण में ब्राह्मणों की विवाह-प्रणाली में उत्तर की तरह ही रुढ़िवादिता है, पर ब्राह्मणेत्तर जातियों में सरलीकरण हो गया है। वर-कन्या किसी पंडित द्वारा शोध हुए दिन को अपने-अपने रिश्तेदारों एवं मित्रमंडली के साथ मंदिर में चले जाते हैं, एक दूसरे के गले में फूलों की माला डाल दी जाती है, हाथ में अँगूठी पहना दी जाती है और दीपक की दो-तीन बार भाँवर डाल दी जाती है। बस विवाह हो जाता है। होम और सप्तपदी जो विवाह की वैध रस्म मानी जाती है। अब्राह्मणों में गायब है। पहले नंबूदरी ब्राह्मण के ज्येष्ठ पुत्र का नायर-कन्या से विवाह होने का चलन था पर अब नायर और ब्राह्मण अपनी-अपनी जाति में ही विवाह करने लगे हैं।

(ग) आधुनिक महाराष्ट्र की नारी स्वच्छ साड़ी पहनना पसन्द करती हैं। तमिल और केरल की नारी भी उसी तरह साड़ी पहनती है, जिसका एक छोर दक्षिण कंधे से होता हुआ पीछे एड़ी से छूता हुआ झूलता है। उसका सिर सदा खुले रहने का रिवाज धीरे-धीरे उत्तर के शिक्षित घरों में भी बढ़ रहा है। वेश-भूषा में नारी भारतीय एकता का प्रतीक बनती जा रही है।

**2.**

| शब्द | संधि विच्छेद | शब्द | संधि विच्छेद |
|---|---|---|---|
| अधिकांश | अधिक + अंश | संग्रहालय | संगह + आलय |
| सूर्यास्त | सूर्य + अस्त | मीनाक्षी | मीन + आक्शी |

| | | | |
|---|---|---|---|
| लोकोक्ति | लोक + उक्ति | ब्राह्मणेत्तर | ब्राह्मण + उत्तर |
| सर्वोपरि | सर्व + उपरि | निरामिष | निः + आमिष |

**3.**

| **शब्द** | **प्रत्यय** | **शब्द** | **प्रत्यय** |
|---|---|---|---|
| रूढ़बद्धता | ता | प्राकृतिक | इक |
| भारतीय | ईय | एकता | ता |
| दर्शनीय | ईय | प्रशंसनीय | ईय |

**4.** कुल— (1) ऊँचे कुल में जन्म लेने वाले कि करनी हमेशा ऊँची नहीं होती है।
(2) यह कुल कितनी किताब हैं?

उत्तर— यह उत्तर दिशा में है।
इस प्रश्न का उत्तर दीजिए।

सुर— उस गाने का सुर बहुत अच्छा है। समुद्र मन्थन में सुर और असुर में बहेस होने लगी।

चारा— भैस ने चारा खा लिया है।
उसके पास और कोई चारा नहीं है।

हल— इस प्रश्न को हल कीजिए।
उसने हल से खेत को जोता।

पद— वह किस पद पर कार्य कर रहा है।
प्रथम पद का अर्थ समझाइयँ।

धातु— सोना भी एक धातु है।
संस्कृत में क्रियाओं के मूल रूप को धातु कहते हैं।

मत— उसका शादी के मामले में क्या मत है।
आपने अपना मत किस पार्टी को दिया।

# 11 प्रदूषण की समस्या

**मौखिक**

(1) पर्यावरण की रचना वायु, जल, मिट्‌टी, पौधे, वृक्ष और पशुओं के द्वारा होती है। ये पारस्परिक संतुलन बनाने के लिए एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। कभी-कभी किसी कारणवश इनसे पर्यावरण में परिवर्तन आ जाता है। यदि इस परिवर्तन की प्रक्रिया का प्रकृति के साथ सामंजस्य न किया जाए तो असंतुलन

पैदा हो जाता है। वास्तव में यह असन्तुलन ही प्रदूषण का जनक है।

(2) प्रकृति का सन्तुलन बिगाड़ने में मनुष्य दोषी है, क्योंकि बढ़ती जनसंख्या से पेड़ों का कटान, बढ़ते हुए कल–कारखानों के कचरे, चिमनियों से निकलने वाले धुएँ, वाहनों की तेज ध्वनियों आदि से आज हमारा सारा पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है।

(3) प्रदूषण रोकने में पेड़–पौधों का महत्वपूर्ण योगदान हैं। पेड़ों की पत्तियों में बारीक रन्ध होते हैं, जिनके दोनों ओर रक्षक कोशिकाएँ होती हैं। इन्हीं रन्ध्रों के द्वारा वातावरण और पौधों में गैसों का विनिमय होता है। और जैविक क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं। पत्तियों के इन छोटे–छोटे रन्ध्रों से वायु भीतर जाती है। यहाँ प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया के द्वारा कार्बन डाई–आक्साइड ऑक्सीजन में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार रन्ध्रों से जो गैस बाहर निकलती है, उसमें ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है। रात्रि में साँस की प्रक्रिया तेजी से होती है। इस प्रकार पेड़–पौधे प्रदूषण रोकने में हमारी सहायता करते हैं।

(4) जल प्रदूषण से पेचिस, मियादी बुखार, हैजा, कुकर खाँसी, क्षयरोग आदि बिमारियाँ होती हैं। जल प्रदूषण से मुख्यत: पेट सम्बन्धी बीमारियाँ होती हैं।

(5) ध्वनि प्रदूषण से मानसिक तनाव बढ़ता है, हृदय की धड़कने तेज हो जाती हैं और श्रवण शक्ति कम हो जाती है।

**लिखित**

(क) प्रदूषण (ख) विरासत

(ग) गाड़ियों के धुँओं से (घ) (अ )और (ब) दोनों

(1) प्रदूषण निम्न प्रकार के होते हैं। भूमि, जल, वायु और ध्वनि सम्बन्धी प्रदूषण।

(2) प्रकृति में असंतुलन के कारण, फेफड़ों के रोग, हृदय के रोग, कैंसर, मानसिक तनाव आदि रोग होते हैं।

(3) बड़े–बड़े नगरों से मल निकासी के लिए बड़ी–बड़ी नालियाँ, निकाली गयीं, जो अन्तत: नदियों में ही गिरती हैं। कूड़े–कचरे और अन्य प्रकार की गन्दगी जहाँ–तहाँ फैल गयी। अन्त में उसे भी नदियों, जलाशयों में ही शरण मिलती है। कारखानों से लगातार कचरे निकल रहे हैं, जो प्राय: जलाशयों में प्रवाहित कर दिये जाते हैं। नदियों का जल इस प्रकार प्रदूषित होता जा रहा है।

(4) अनवरत दौड़ती रेलगाड़ियों, बसों, ट्रकों, जलयानों और विमानों के धुएँ से वायु प्रदूषण हो रहा है।

(5) जल प्रदूषण के कारण, चिमनियों से निकला कचरा, घरों से निकला कचरा तथा

गन्दा जल आदि नदियों में जाता है, जिससे जल प्रदूषण हो रहा है।

(6) पेड़–पौधे प्रकाश–संश्लेषण की क्रिया में वायुमण्डल से कार्बन डाई–ऑक्साइड लेते हैं और ऑक्सीजन वायुमण्डल में छोड़ते हैं, जिससे वायुमण्डल शुद्ध होता है।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विषाक्त | — | विष + आक्त | पर्यावरण | — | परि + आवरण |
| जीवनाधार | — | जीवन + आधार | कदापि | — | कद + आपि |
| यातायात | — | यात + आयात | जलाशय | — | जल + आशय |
| कीटाणु | — | कीट + अणु | | | |

**2.**

| **शब्द** | **विलोम** | **शब्द** | **विलोम** |
|---|---|---|---|
| अतिवृष्टि | अनावृष्टि | असंभव | संभव |
| कुप्रभाव | प्रभाव | जंगल | नगर |
| शुद्ध | अशुद्ध | असंतुलन | संतुलन |
| पूर्वार्द्ध | उत्तरार्द्ध | उपयोग | अनुपयोग |

**3.** (क) सन्तुलन (ख) जंगलों (ग) जलाशयों
(घ) मानसिक तनाव (ङ) पर्यावरण संरक्षण

# 12 भारतीय संस्कृति

**मौखिक**

(1) भारतीय संस्कृति का मूल स्त्रोत अहिंसा है।

(2) कोई विदेशी जो भारत से बिल्कुल अपरिचित हो, एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करे तो, उसको इस देश में इतनी विभिन्नताएँ देखने में आयेंगी कि वह कह उठेगा कि यह एक देश नहीं बल्कि कई देशों का समूह है।

(3) हजारों वर्षों से अलग–अलग अस्तित्व रखते हुए अनेकानेक जल प्रपातों और प्रवाहों का संगमस्थल बनकर एक प्रकांड और प्रगाढ़ समुद्र के रूप में भारत में व्याप्त है, जिसे भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं।

(4) बापू ने जनसाधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रान्ति करने के लिए, तत्पर करने के लिए नैतिक चेतना का सहारा लिया।

(5) लेखक ने नैतिक चेतना को देश का प्राण माना है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से

हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और सम्प्रदाय हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। जहाँ उनमें और सब तरह की विभिन्नताएँ हैं, वहाँ उन सब में यह एकता है।

(6) लेखक के अनुसार पृथ्वी पर स्वर्ग भारत में है।

**लिखित**

(क) प्रवाहों (ख) त्याग भावना (ग) संस्कृति (घ) इतिहास

(1) भारत की विविधताओं की तह में एक ऐसी समता और एकता फैली हुई है। जो अन्य विविधताओं को ठीक उसी तरह पिरो लेती है और पिरोकर एक सुन्दर समूह बना देती है—जैसे रेशमी धागा भिन्न-भिन्न प्रकार की और भिन्न-भिन्न रंग की सुन्दर मणियों अथवा फूलों को पिरोकर एक सुन्दरों हार तैयार कर देता है। जिसकी प्रत्येक मणि या फूल दूसरों से न तो अलग है और न हो सकता है और केवल अपनी ही सुन्दरता से लोगों को मोहता नहीं बल्कि दूसरों की सुन्दरता से भी वह स्वयं सुशोभित होता है और इसी तरह अपनी सुन्दरता से दूसरों को भी सुशोभित करता है।

(2) जीवन से संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब सबके विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी 'अहिंसा' तत्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया। अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम त्याग है और हिंसा का दूसरा नाम स्वार्थ है।

(3) लेखक के अनुसार पृथ्वी पर स्वर्ग तभी स्थापित होगा, जब अहिंसा, सत्य और सेवा का आदर्श, सारे भूमण्डल में मानव जीवन का मुख्य आधार और प्रधान प्रेरक शक्ति हो गया होगा।

(4) 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी' अब हवा का असर इंसान के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा शरीर और मस्तिष्क पर पड़ता है, तो उसका जीता जागता सबूत भारत में बसने वाले भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग हैं, इसी तरह कई मुख्य-मुख्य भाषाएँ भी प्रचलित हैं और बोलियों की तो कोई गिनती ही नहीं।

(5) हमारी आर्थिक व्यवस्था के पीछे वैयक्तिक लाभ और भाग की भावना प्रधान न होकर वै व्यक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) जैसे-जैसे हम एक छोर से दूसरे छोर की तरफ जाते हैं, थोड़ी-थोड़ी दूर पर हवा और पानी बदलता रहता है। इस आब हवा का असर इंसान के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, शरीर और मस्तिष्क पर पड़ता है। उसका जीता जागता सबूत भारत में बसने वाले विभिन्न प्रान्तों के लोग हैं।

(ख) संस्कृति तथा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे प्रदेश और सम्प्रदाय हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। जहाँ उनमें और सब तरह की विभिन्नताएँ हैं, वहाँ उन सबमें यह एकता है।

(ग) जीवन से संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब आपके विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा तत्व पर स्थापित हो रहा है। जहाँ–जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया है। अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम त्याग है और हिंसा का दूसरा नाम स्वार्थ है।

(घ) व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास चाहता है। और यदि एक ही उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो तो, संघर्ष पैदा होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब आपके विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी 'अहिंसा' तत्व पर स्थापित हो रहा है।

**2.**

| **शब्द** | **मूल शब्द + प्रत्यय** | **शब्द** | **मूल शब्द + प्रत्यय** |
|---|---|---|---|
| बौद्धिक | बुद्धि + इक | ऐतिहासिक | इतिहास + इक |
| सामूहिक | समूह + इक | नैतिक | नीति + इक |
| वैज्ञानिक | विज्ञान + इक | औद्योगिक | उद्योग + इक |
| प्रादेशिक | प्रदेश + इक | साहित्यिक | साहित्य + इक |

**3.**

| **तत्सम** | **तद्भव** | **विदेशी** |
|---|---|---|
| पथ | गिनती | उपार्जन |
| अभिन्न | अलग–अलग | सुशोभित |
| गान | आग | प्रगाढ़ |
| | आसान | कब्जा |
| प्लावित | सुख | कायम |
| | | सारे |
| | | मणियाँ |

**4.** **ईय** — प्रशंसनीय, स्मरणीय, तुलनीय, भारतीय, रमणीय

| | | |
|---|---|---|
| **आत्मक** | — | कलात्मक, तुलनात्मक, अहिंसात्मक, हिंसात्मक सृजनात्मक |
| **पूर्वक** | — | स्वतंत्रतापूर्वक, प्रसन्नतापूर्वक, प्रेमपूर्वक, श्रद्धापूर्वक, निश्चयपूर्वक |
| **त्व** | — | ममत्व, पितृत्व, भ्रातृत्व, अमरत्व, अपनत्व |
| **प्रद** | — | लाभप्रद, हानिप्रद, करुणाप्रद, शिक्षाप्रद, संतोषप्रद |
| **जन्य** | — | सौजन्य, लघुजन्य, आत्मजन्य, सामाज, सर्वजन्य |

# 13 पथ की पहचान

**मौखिक**

(1) कवि ने यात्री को चलने से पहले मार्ग की पहचान करने का सुझाव दिया है।

(2) रास्ते पर जो राही पहले गये, उनके पैरों के निशान मूक होकर भी बोलते हैं। वो रास्ते की पहचान कराते हैं।

(3) अच्छा, बुरा का विचार छोड़कर तथा यह असम्भव है, यह न सोचकर यात्रा को सरल बना सकते हैं।

(4) बाग, वन तथा सुमन अनिश्चिता के प्रतीक हैं।

(5) कवि ने किसी के रोकने पर भी, न रुकने की आन की है।

(6) यह बुरा है या अच्छा, सम्भव है या असम्भव ऐसा न सोचकर सिर्फ सफलता के बारे में सोचना ही सफल राही की पहचान है और तू सिर्फ सफलता के बारे में अपने मन में ध्यान धर ले।

**लिखित**

(क) पथ की (ख) सम्भव (ग) पैरों के निशान
(घ) यात्रा

(1) पुस्तकों से किसी मार्ग की पहचान नहीं होती है, उस पर चलकर ही मार्ग की पहचान की जाती है।

(2) जो मुसाफिर मन में यात्रा के सफल या असफल होने पर विचार करता है या अच्छे, बुरे के बारे में सोचता है, वह सफल नहीं होता।

(3) जो राही अपने मन में नकारात्मक विचार नहीं लाता, वह सफल पंथी होता है।

(4) सरित, गिरि और कंटक अनिश्चितता के प्रतीक हैं।

(5) कब पर्वत और गड्ढे मिलेंगे, कब बगीचे और वन मिलेंगे, कब सुमन काँटे या

तीर मिलेंगे और कब यात्रा खत्म होगी। कवि के अनुसार, यह अनिश्चित हैं।

(6) (क) यहाँ कवि पैरों के निशान के बारे में कहा रहा है। यात्री उनसे पथ का अनुमान लगा सकते हैं।

(ख) जो राही सत्य की राह पर चले हैं, उनका कुछ का तो इतिहास में पता नहीं हैं।

(ग) अच्छा, बुरा और सफलता, असफलता को सोचकर अपने दिन व्यर्थ करते हैं।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **2.** | पैर | — | चरण, | पाँव, | पग |
| | सरिता | — | नदी, | तटिनी, | आपगा |
| | सुमन | — | फूल, | पुष्प, | प्रसून |
| | बाट | — | इन्तजार, | प्रतीक्षा, | अपेक्षित |
| | चित्त | — | मानस, | मन, | विचार |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **3.** | और | — | एक और एक दो होते हैं। |
| | ओर | — | वह स्कूल की ओर गया। |
| | पता | — | तुम्हारा पता क्या है? |
| | पत्ता | — | पेड़ से पत्ता टूटा है। |
| | दिन | — | आज का दिन बहुत अच्छा है। |
| | दीन | — | वह बहुत दीन-दुखी है। |
| | हाल | — | तुम्हारा क्या हाल है? |
| | हल | — | इस प्रश्न को हल करके दिखाइये। |
| | मत | — | इस समस्या पर आपका क्या मत है? |
| | मात | — | शेर ने लोमड़ी को लड़ाई में मात दे दी। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **1.** | पूर्व | — | पहला और दिशा |
| | हाल | — | दश और अभी |
| | मत | — | विचार और नहीं |
| | गुण | — | विशेषताएँ और चरित्र |
| | आदि | — | प्राचीन और उस जैसा |
| | मन | — | इच्छा और माप |
| | बाट | — | वजनमापक, रास्ता देखना |
| | अर्थ | — | अनुवाद और घन |
| | जड़ | — | पौधे की जड़, ठोस |

# 14 मीराबाई

**मौखिक**

(1) (क) मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई० के लगभग राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी ग्राम में हुआ था।

(2) (ख) मीराबाई कृष्ण के पति रूप की उपासिका हैं।

(3) (ग) मीरा को राम रतन धन प्राप्त हो गया था और उसकी विशेषता थी कि उसे जितना खर्च करो, उतना बढ़ता है।

(4) मीरा भगवान कृष्ण से अटूट प्रेम करती थीं। इसलिए उन्हें प्रेम दिवानी कहा जाता है।

(5) मीरा की दो रचनाएँ नरसी जी का मायरा और राग गोविन्द हैं।

**लिखित**

(क) राजस्थान (ख) 18 (ग) कृष्ण (घ) द्वारिका

(1) मीरा ने जीवन में सामाजिक बहिष्कार सहा, जो सबसे बड़ा कष्ट था। यहाँ तक कि उन्हें जहर भी दिया गया।

(2) मीरा जी ने गोविन्द को खरीदा था। कोई कहता था कि चुपचाप बजने वाला ढोल ले लिया है। कोई कहता था सस्ता लिया है। कोई कहता था महंगा लिया है। कोई कहता था, तराजू से तौल के लिया है। कोई कहता था काला है। कोई कहता था गोरा है।

(3) मीरा का दर्द कृष्ण से विग्रह तथा दवा कृष्ण से मिलन है।

(4) लोक लाज खोकर आँसुओं से प्रेम की लता को मीरा ने सींचा है। उस लता से उनको श्रीकृष्ण की भक्ति प्राप्त की।

(5) (क) मुझे तो राम के नाम का धन मिल गया है, जिसे मुझे मेरे गुरु ने दिया है। यह भक्ति धन ऐसा है, जिसे चोर नहीं चुरा सकता है और खर्च करने पर सौ गुना बढ़ता है। मेरी जीवन रुपी नाव को तो सतगुरु श्वेत हैं। अब तो मैं भव सागर से तर जाऊँगी। मीरा अपने प्रभु गिरधर के गुण खुश होकर गाती है।

(ख) मीरा जी कहती हैं कि मैं प्रेम दिवानी हूँ। मेरा दर्द कोई नहीं जानता। मेरा काँटों पर बिस्तर है, किस प्रकार सोऊ। आकाश में पिया की सेज है, किस प्रकार मिलना होय। एक घायल के दर्द को एक घायल ही समझ

सकता है। इसलिए मेरे दर्द को कोई समझ नहीं सकता। मैं दर्द की मारी वन–वन डोल रही हूँ कि मुझे मेरा बैद संवरिया कृष्ण मिल जाये।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) गलत (ख) गलत (ग) सही (ग) सही

**2.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नैनन | — | नेत्र | किरपा | — | कृपा |
| बिसाल | — | बड़ा | भगति | — | भक्ति |
| सबद | — | शब्द | आणंद | — | आनन्द |
| विपत | — | विपत्ति | दरसण | — | दरसन |

**3.**

| | | |
|---|---|---|
| बंशीधर | — | बंशी धारण करने के कारण |
| गोपाल | — | गाय को पालते थे या चराते थे। |
| घनश्याम | — | बादलों के समान रंग था। |
| देवकी नन्दन | — | देवकी जी के पुत्र होने के कारण |
| राधारमण | — | बार–बार राधा जपने के कारण |
| पीताम्बर | — | पीला वस्त्र पहनने के कारण |
| गिरधर | — | पर्वत को ऊँगली पर उठाने के कारण |
| नंदलाल | — | नंद के लाल होने के कारण। नंद ने लालन–पालन किया था। |

# 15 सौदा

**मौखिक**

(1) लाला अमृतसर का रहने वाला था, उसके साथ उसकी पत्नी और बच्चे थे।

(2) घोड़ों की उजली सज्जा के साथ घोड़े वालों के मैले, फटे हुए वस्त्रों की तुलना करने से लगता था कि वे घोड़ों के मालिक नहीं, घोड़े इनके मालिक हैं।

(3) चंदनवाड़ी अमरनाथ के रास्ते में एक साधारण पड़ाव है।

(4) खालसा होटल का नौकर आवाज दे रहा था कि होटल में अठारह घोड़े चाहिए। इसलिए घोड़े वाले खालसा होटल की तरफ चल दिये।

(5) घोड़े वाला लाला से चंदनवाड़ी जाने का चार–चार रुपये माँग रहा था।

(6) घोड़े वाला यूरोपियन परिवार के लिए सात घोड़े इकट्ठा कर रहा था।

**लिखित**

(क) लाला जी अमृतसर के रहने वाले थे।

(ख) चार-चार (ग) 18 (घ) लाला जी

(1) आज घोड़े वाले धीरे-धीरे इसलिए आ रहे थे क्योंकि एक दिन पहले एक घोड़े वाले को किसी न चार रुपये माँगने के पीछे मारा था।

(2) आज घोड़े वालों ने किराया इसलिए बढ़ा दिया क्योंकि एक घोड़े वाले की किसी ने चार रुपये मांगने के पीछे पिटाई की थी।

(3) लाला ने घोड़े वाले से झूठ अपनी व्यवहार बुद्धि के कारण बोला। असल में यह सफेद झूठ था क्योंकि कुछ देर पहले जिस तरह एक व्यक्ति से वह चंदनवाड़ी के सम्बन्ध में पूँछ रहा था, उससे स्पष्ट था कि वह पहलगाम में पहली बार आया है।

(4) लाला के रुखे स्वभाव के कारण घोड़े वाले लाला की उपेक्षा कर रहे थे।

(5) लाला घोड़े से उतरने के लिए इसलिए मजबूर हो गया क्योंकि उसकी पत्नी को एक घोड़ा बिदक कर दौड़ा ले गया था।

(6) लाला को प्रसन्नता इसलिए हुई क्योंकि अन्त में घोड़े वाले ने चंनदनवाड़ी का किराया तीन रुपये बताया था। और वह उदासी में इसलिए बदल गई क्योंकि उसे और दो घोड़े नहीं मिल पाये।

**भाषा अध्ययन**

(1) (i) लाला घोड़े से उतरना चाहता था क्योंकि उसकी पत्नी को घोड़ा दौड़ा ले गया था। वह इसलिए नहीं उतर सका क्योंकि उसका पैर रकाब में फँस गया था।

(ii) लाला घोड़े की तलाश में बाजार में गया था।

(iii) लाला ने अपनी पत्नी के सामने डींग मारी कि किस तरह अब तीन-तीन रुपये में घोड़े मिल रहे हैं और थोड़ी देर बाद शायद इससे भी कम में मिलने लगेंगे।

(iv) अंत में लाला और उसका परिवार बाजार के चक्कर लगाते रहे, पर कहीं कोई दूसरा घोड़ा दिखाई नहीं दे रहा था।

(2) (i) ''लाला, कहाँ चलना है?'' घोड़े वाले ने उसे हाथ का सहारा देते हुए पूछा।

(ii) लाला ने घोड़े पर बैठते हुए विश्वविजयी की तरह एक दृष्टि चारों ओर डाली और घोड़े वाले की बात को महत्व न देकर कहा—''जरा बताओ, लगाम किस तरह पकड़नी है?''

(iii) घोड़े वाले ने लगाम उसके हाथ में दे दी और कहा—''साथ में आठ-आठ आना बख्शीश मिल जाए।''

(iv) ''लाला, यह ऐसे नहीं चलेगा,'' घोड़े वाला जरा हँसकर बोला—''तुम पैसे की बात करो, यह अभी दौड़ने लगेगा।''

(v) ''तो उतर जाओ,'' घोड़े वाले ने बीच में ही कहा—''घोड़ा नहीं जायेगा।''

**3.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विरक्त | — | उपसर्ग | वि | भाव | विशेषता |
| निरुत्तर | — | उपसर्ग | नि | भाव | अभाव |
| दुर्दशा | — | उपसर्ग | दु: | भाव | निषेध |
| निर्जन | — | उपसर्ग | नि | भाव | अभाव |
| निश्चल | — | उपसर्ग | नि | भाव | अभाव |
| नि:स्वार्थ | — | उपसर्ग | नि | भाव | अभाव |
| दुष्कर्म | — | उपसर्ग | दु: | भाव | निषेध |
| विशेषता | — | उपसर्ग | वि | भाव | विशेषता |
| विभाग | — | उपसर्ग | वि | भाव | विशेषता |
| विपक्ष | — | उपसर्ग | वि | भाव | विरोध |

# 16 मातृभूमि

**मौखिक**

(1) कवि ने कविता के प्रथम चरण में मातृभूमि के वेश का चित्रण करते हुए कहा है कि नीलेअम्बर के समान परिधान है तथा हरे रंग की चुनरी सुन्दर है। सूर्य, चन्द्र, मुकुट, करधनी समुद्र, प्रेम प्रवाह नदियाँ हैं जो फूल तारे से सजी हुई हैं। विभिन्न पक्षी सिर की शोभा तथा नागों के फनों का सिंहासन है। इतने सुन्दर वेश का बादल सदा अभिषेक करते हैं।

(2) क्योंकि बादल हमारे महल हैं इसलिए धरती हमें अपने वक्षस्थल पर धारण किए हुए है।

(3) कवि ने मातृभूमि को क्षमामयी और दयामयी कहा है क्योंकि हम पृथ्वी का सदुपयोग बहुत कम करते हैं, उसके ऊपर कूदते हैं और भी अनेकों कार्य करते हैं। मगर फिर भी वह हमें अपने ऊपर धारण किये रहती है।

(4) इस कविता से हमारे हृदय में मातृभूमि के प्रति प्रेम और देश–प्रेम का भाव जागृत होता है।

(5) (क) जिस मातृभूमि की गोद् में उसकी मिट्टी में हम लोट–लोट कर बड़े हुए हैं, जिसमें हमने सरक–सरक कर चलना सीखा है, जिसकी गोद में हर्षयुक्त कूदे खेले हैं। उस मातृभूमि को देखकर हम खुश क्यों न हों, अभिमान क्यों न करें?

(ख) जिस मातृभूमि ने सदा हमें सहारा दिया है, हमारी रक्षा की है, जो जननी होने का हमेशा पालन करती रही है, जिन्होंने माता का हमेशा फर्ज निभाया है उस मातृभूमि का हम आदर क्यों न करें? उसकी पूजा क्यों न करें?

## लिखित

(क) वस्त्र

(ख) शक्तिहीन

(1) कविता में कवि ने मातृभूमि को 'सर्वेश की सगुण मूर्ति' उसके सुन्दर वेश के कारण कहा है।

(2) हम अपनी मातृभूमि की गोद में खेल–खेल बड़े हुए हैं, उसके ऊपर घुटनों के बल सरक–सरक कर बड़े हुए हैं। उसकी गोद में खुशी से कूदे हैं। इस प्रकार वह हमें शिशु के समान पालती हैं।

(3) कवि ने मातृभूमि को क्षमा, दया, कल्याण, प्रेमभाव, प्रेम, धन ऐश्वर्य, विश्व पालिनी, दुखहर्ती, भयनिवारणी, शान्ति, सुखदात्री आदि गुणों से युक्त बताया है।

(4) प्रस्तुत कविता में कवि मातृभूमि की सुन्दरता का वर्णन और गुणों का वर्णन करना चाहता है।

(5) परमहंस पृथ्वी की रज में लोटकर और सरककर बड़े हुए और बाद में उनका नाम हीरे के समान चमका और चमक रहा है।

(6) इस पंक्ति में नीलाम्बर परिधान और हरितपट सौन्दर्य है।

(7) कवि ने मातृभूमि को सर्वेश की सगुणमूर्ति कहा है।

## भाषा अध्ययन

**1.** • सिंहासन — राजा के बैठने का स्थान

पृथ्वी का सिंहासन शेषफन है।

- पूज्य — पूजा के योग्य
  मातृभूमि हमारी पूज्य है।
- बाल्यकाल — बचपन का समय
  बाल्यकाल में हम इसकी रज में लोटे हैं।
- प्रलय — प्राकृतिक आपदा
  पृथ्वी जब अपनी शरण नहीं देती तो, इसकी प्रलय में हम समा जाते हैं।
- वात्सल्य — प्रेम
  मातृभूमि वात्सल्य युक्त है, इसे वात्सल्यमयी भी कहते हैं।
- अवलम्ब — सहारा
  मातृभूमि पक्षपात न करते हुए सभी को अपने ऊपर सहारा देती है।
- मेखला — धुरी या करधनी
  मातृभूमि की मेखला रत्नाकर है।

**2.**

| शब्द | समानार्थी शब्द | शब्द | समानार्थी शब्द |
|---|---|---|---|
| अम्बर | आकाश | जननी | माँ |
| सत्य | सच | विवश | मजबूर |
| प्रेम | प्यार | भय | डर |
| सूर्य | रवि | रज | धूल |
| प्राण | जान | | |

# 17 वृन्दा

**मौखिक**

(1) अपने नाना और दादी के स्वर्गगमन की चर्चा सुनकर लेखिका ने घर में सबसे कहा कि जब मेरा सिर कपड़े रखने की अलमारी को छूने लगेगा, तब मैं निश्चय ही एक बार उनको देखने जाऊँगी।

(2) सर्दी के दिनों में लेखिका को धूप निकलने पर जगाया जाता था, गर्म पानी से हाथ-मुँह धुलाकर मोजे, जूते और ऊनी कपड़ों से सजाया जाता था और मना मनाकर गुनगुना दूध पिलाया जाता था।

(3) लेखिका वृन्दा की नई अम्मा के गर्जन-तर्जन को सुनकर उलझन में पड़ जाती थी, उससें वे कहती थीं कि 'उठती है या आऊँ', 'बैल के से दीदे निकाल रही है', 'मोहन का दूध कब गर्म होगा'? 'अभागी मरती ही नहीं'।

(4) लेखिका एक भी काम नहीं करती थी और सारा दिन ऊधम मचाती थी पर फिर भी उसकी माँ उसे कभी कुछ नहीं कहती थी, पर वृन्दा सारे दिन घर के काम करती थी, फिर भी पंडिताइन चाची उसे उल्टा-सीधा सुनाती थी और मारती थीं, इसलिए लेखिका ने पूछा कि क्या पंडिताइन चाची तुम्हारी ही तरह नहीं हैं?

(5) लेखिका ने अपनी माँ से अनुनयपूर्वक कहा कि 'तुम कभी तारा न बनना, चाहे भगवान कितना भी चमकीला तारा बनावे।'

(6) नई अम्मा वृन्दा को गर्मी की दोपहर में, वृन्दा को आँगन की जलती धरती पर नंगे पैर घंटों खड़ा कर देती थीं। दिनभर चौके के खम्भे से बाँध देती थीं और भूखा रखती थीं।

**लिखित**

(क) पंडिताइन चाची (ख) विचित्र (ग) कोठरी में
(घ) आकाशवासिनी

(1) भूरी पूसी अपने चूहे जैसे नि:सहाय बच्चों को तीखे-पैने दाँतों में ऐसे कोमलता से दबाकर ले जाती थी कि कहीं एक दाँत भी न चुभ पाता था। ऊपर की छत के कोने पर कबूतरों का और बड़ी तश्वीर के पीछे गौरय्या का जो घोंसला था, उनमें खुली हुई छोटी-छोटी चोंचों और उनमें सावधानी से भरे जाते दोनों और कीड़े मकोड़ों को भी लेखिका अनेक बार देख चुकी थी। एक बार बच्चे को कंधे से चिपकाये और एक ऊंगली में पकड़े हुए जो, भिखारन द्वार-द्वार फिरती थी, वह भी तो अपने बच्चों के लिए माँगती रहती थी। अत: लेखिका ने निश्चित रूप से समझ लिया था कि संसार का सारा कार-बार बच्चों को खिलाने, पिलाने और सुलाने आदि के लिए हो रहा है।

(2) वृन्दा की नई अम्मा अपनी गोरी मोटी देह को रंगीन साड़ी से सजे-कसे चारपाई पर बैठकर, फूले गाल और चिपटी-सी नाक के दोनों ओर नीले काँच के बटन सी चमकती हुई आँखों से युक्त मोहन को तेल मलती रहती थीं। उनकी विशेष कारीगरी से सँवारी पट्टियो के बीच में लाल स्याही की मोटी लकीर-सी सिन्दूर, उनींदी आँखों में काले डोरे के समान लगने वाला, काजल, चमकीले कर्णफूल, गले की माला, नगदार रंग-बिरंगी चूड़ियाँ और घुँघरूदार बिछुए उन्हें गुड़िया की

समानता देते थे।

(3) वृन्दा आँगन में चौके तक फिरकनी की तरह नाचती थी। कभी वह उसका झाड़ देना, कभी आग जलाना, कभी आँगन के नल से कलसी में पानी लाना भी, नई अम्मा को दूध का कटोरा देने जाना। लेखिका को बाजीगर के तमाशे जैसा लगता था।

(4) लेखिका ने वृन्दा से कहा कि तुम नई अम्मा को पुरानी अम्मा क्यों नहीं कहतीं,? फिर न वे नई रहेंगी न ही डाटेंगीं। वृन्दा को लेखिका का उपाय जँचा नहीं, क्योंकि वह तो अपनी पुरानी अम्मा को खुली पालकी में लेटकर जाते और नई बंद पालकी में बैठकर आते देख चुकी थी। अत: किसी को भी पदच्युत करना उसके लिए कठिन था।

(5) नई अम्मा ने वृन्दा के साथ सबसे बड़ा अन्याय ये किया कि चेचक निकलने पर भी उसका ख्याल नहीं रखा, जिससे उसकी मृत्यु हो गयी।

(6) वृन्दा से दूध फैल गया था, जिससे उसका पैर जल गया था और वह डर की वजह से अन्धेरी कोठरी में छिपी थी। वहाँ वृन्दा अपने जले पैरों को घास में छिपाए और दोनों ठंडे हाथों से मेरा हाथ दबाये ऐसी बैठी थी मानो घास का चुभता हुआ ढेर रेशमी बिछौना बन गया है।

**भाषा अध्ययन**

**1.** (क) वृन्दा ने लेखिका को आकाश की ओर संकेत करके तारा दिखाते हुए कहा कि 'वह रहीं मेरी अम्मा'।

(ख) वृन्दा की बात सुनकर लेखिका ने समझ लिया कि क्या सबकी एक अम्मा तारों में होती है? और एक घर में?

(ग) लेखिका ने वृन्दा को अपनी नई माँ को पुरानी माँ कहने का सुझाव दिया।

(घ) वृन्दा से दूध फैल गया था, जिसके डर की वजह से वृन्दा ने लेखिका से उसे छिपाने के लिए कहा था। हड़बड़ाहट में दोनों सहेलियाँ घास वाली कोठरी में जाकर छिप गईं।

**2.** (क) लेखिका ने अपने आप से कहा क्योंकि उस समय वृन्दा के घर में बहुत भीड़ थी।

(ख) लेखिका ने गोपी से कहा क्योंकि वह इस दृश्य की घोषणा के लिए शोर मचा रहा था।

(ग) लेखिका ने अपनी माँ से क्योंकि वह वृन्दा की माँ के तारा बनने की बात से डरी हुई थी।

(घ) लेखिका ने कहा अपने घरवालों से क्योंकि उसे जन्म मृत्यु के चक्र के बारे में पता नहीं था।

(क) इच्छित (ख) कोमलता (ग) निश्चित

(घ) विस्मित (ङ) इच्छा

# 18 दिल्ली के किले

**मौखिक**

(1) दिल्ली को सात बार बरसाया गया।

(2) पाँडवों की राजधानी का नाम इन्द्रप्रस्थ था।

(3) पृथ्वीराज चौहान दिल्ली का शासक था। इसे राय पिथौरा के नाम से भी जाना जाता था।

(4) सर्वप्रथम एशियाई खेलों का आयोजन सन् 1982 में दिल्ली में हुआ था।

(5) मुहम्मद तुगलक ने अपने द्वारा बनवाये किले का नाम आदिलाबाद इसलिए रखा क्योंकि वह अपने आपको आदिल (न्याय करने वाला) कहता था।

(6) फिरोजशाह कोटला का मुख्य आकर्षण सम्राट अशोक का स्तम्भ है।

(7) लाल किले को बनाने में 1 करोड़ रुपये खर्च हुए।

**लिखित**

(क) लालकोट (ख) आदिलाबाद (ग) फिरोजशाह कोटला

(घ) शाहजहाँ

(1) (क) दिल्ली में पहला किला अनंगपाल तोमर ने सन् 1051 ई० के आस-पास कुतुबमीनार के क्षेत्र में एक मजबूत किला बनवाया, जो लालकोट के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(2) (ख) खिलजी वंश के बाद सन् 1321 ई० में तुगलक वंश का एक सैनिक गयास तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना। उसने आगे के दो सालों में कुतुबमीनार के करीब 8 km पूर्व में एक चट्टानी पहाड़ी पर तुगलकाबाद के नाम से एक नया नगर और किला स्थापित किया।

(3) यमुना नदी के तट पर बने किले का नाम शाहजहानाबाद है। इसे फिरोजशाह ने बनवाया।

(4) अशोक के स्तम्भ की विशेषता है कि यह स्तंभ पिरामिड के आकार की एक तीन मंजिल इमारत के रूप में खड़ा है।

(5) लाल किला शाहजहाँ ने सन् 1638 ई० में बनवाया। नौ साल बाद यह बनकर तैयार हुआ और इसमें 1 करोड़ रुपये खर्च हुए। इस अष्टभुजाकार किले की पूर्व और पश्चिम की ओर की दीवारें ज्यादा लंबी हैं। करीब ढाई किलोमीटर लंबा इसका परकोटा शहर की ओर करीब 33 मीटर ऊँचा और नदी की तरफ 18 मीटर ऊँचा है। किले के दो दरवाजे आज भी कायम हैं। तीन दरवाजे बंद रहते हैं। इसमें दो भव्य इमारत दीवान-ए-आम तथा दीवान-ए-खास हैं, जहाँ बादशाह आम और खास लोगों से मिलता था। इसमें पुरातत्व संग्रहालय है, जिसमें मुख्यत: मुगलकाल की चीजें रखी हुई हैं।

(5) लाल किले का सबसे शानदार स्मारक दीवान-ए-खास है, जहाँ बादशाह अपने खास लोगों से मिलता था। इसके संगमरमर के खंभों पर खूबसूरत नक्काशी की गई है। इस इमारत के मध्यभाग के एक चबूतरे पर हीरे जवाहरात से जड़ा सोने का बेशकीमती तख्ते ताऊस रखा गया था।

(7) दीवान-ए-खास पर अमीर खुसरो द्वारा रचित पंक्तियाँ ''यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है।''

**भाषा अध्ययन**

1.

| | | |
|---|---|---|
| इन्द्रप्रस्थ | पुरावशेष | स्मारक |
| अष्टभुजाकार | जिम्मेदारी | संग्रहालय |
| लौहस्तम्भ | पिरामिड | |
| ख्वाबगाह | | |

2.

| विशेषण | विशेष्य | विशेषण | विशेष्य |
|---|---|---|---|
| पारंपरिक | ज्ञान | विलुप्त | नदी |
| सभ्यता | मानव | निर्मल | वाणी |
| सांस्कृतिक | चरित्र | सुंदर | आभूषण |
| विशाल | जलधारा | अंतर्राष्ट्रीय | स्तर |
| पारम्परिक | मान्यता | व्यवसायिक | एकाधिकार |

**3.** **संधि**

| | |
|---|---|
| निष्कलंक | हतोत्साहित |
| संकल्प | प्रत्येक |
| सहानुभूति | पुरुषार्थी |

**4.**

| **मूल शब्द** | **उपसर्ग** | **प्रत्यय** |
|---|---|---|
| जीवित | पुनः | इत |
| आवश्यक | अ | यक |
| सफलता | वि | ता |
| मानवीय | अ | ईय |
| विज्ञान | वि | इक |
| मीटर | किलो | अर |
| भुजाकार | अष्ट | आर |

# 19 विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

**मौखिक**

(1) राष्ट्रीय ध्वज हमारी प्रतिष्ठा एवं गरिमा का यह प्रतीक हमें प्रेरित करता रहता है कि हम देशभक्ति की कसौटी पर खरे उतरें।

(2) सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त झण्डे में एकसिंगा एवं धूपदानी अंकित है।

(3) 24 अगस्त 1600 को हेक्टर नामक जहाज पर लहराता हुआ यूनियन जैक भारत पहुँचा और अगले साढ़े तीन सौ वर्षों तक भारत का भाग्य निर्णायक बना रहा।

(4) कलकत्ता झंडे की रुपरेखा श्री शचिन्द्रनाथ बोस तथा श्री सुकुमार मित्र ने बनायी तथा इसमें ऊपर हरी पट्टी पर भारत की तत्कालीन आठ प्रांतों का प्रतिनिधित्व करते आठ कमल, बीच में पीली पट्टी पर हिन्दू और मुसलमान समुदायों के प्रतीक के रूप में सूर्य और चन्द्र अंकित थे।

(5) स्वतन्त्रता संग्राम के शुरू के दिनों में अमरीका, जर्मनी और मेसोपोटामिया में इस झंडे का खूब उपयोग किया।

(6) कांग्रेस का पहला झण्डा सन् 1921 में अहमदाबाद में कांग्रेस समिति की वार्षिक बैठक में फहराया गया था। इसकी रूपरेखा बहुत सोच विचार के बाद गाँधी जी

ने बनाई थी और झण्डे को तैयार किया था। आन्ध्र प्रदेश के एक युवक श्री पिंगले वेकय्या ने।

(7) विजयी विश्व तिरंगा प्यारा के रचयिता पदम श्री श्याम लालगुप्त पार्षद जी थे। इसे प्रथम बार 13 अप्रैल 1924 को कानपुर के फूलबाग मैदान में हजारों लोगों के सामने गाया गया। जवाहरलाल नेहरू वहाँ मौजूद थे। यह कांग्रेस अधिवेसन था।

**लिखित**

(क) राजनैतिक इतिहास

(ख) 1857

(ग) छंगी

(घ) 16 अगस्त, पं० जवाहरलाल नेहरू

(1) किसी भी देश के लिए राष्ट्रीय ध्वज राष्ट्र अथवा समुदाय के प्रति आस्था का प्रतीक होता है।

(2) सभ्यता के शुरुआती दिनों में मनुष्य छोटे-छोटे समुदायों में रहा करते थे, जिन्हें 'गोत्र' अथवा 'गण' कहा जाता था। गोत्र अथवा गण एक ऐसे पशु, पत्ती, पेड़-पौधों आदि प्राकृतिक उपादान की पूजा करता जो उसके लिए विशेष रूप से उपयोगी होता। इन पशु, पेड़-पौधों आदि के नाम पर गणों का नामकरण भी होने लगा और धीरे-धीरे इन गणों की पहचान अथवा 'गण-चिन्हों' के रूप में प्रचलित हो गया। प्राचीन काल से ही लोग झण्डे की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति तक देते रहे हैं। आदिवासी समुदायों से संबंधित 'गण-चिन्हों' को हम झण्डों का प्राचीनतम उदाहरण मान सकते हैं।

(3) सिस्टर निवेदिता स्वामी विवेकानन्द की शिष्या थी। उनके द्वारा 1906 ई० में तैयार किये गये झण्डे का स्वरूप इस प्रकार है। यह झण्डा लाल एवं वर्गाकार था। चारों किनारों पर 108 ज्योतियाँ बनी हुई थीं और बीच में पीले रंग के बंगला अक्षरों में 'वंदे' और दाई ओर 'मातरम' अंकित थे।

(4) मैडम कामा द्वारा तैयार किए गये झण्डे में ऊपर हरे रंग की पट्टी पर आठ कमल थे। बीच की सुनहरी पट्टी पर देवनागरी में 'वंदे मातरम्' अंकित था। नीचे की लाल पट्टी पर एक तरफ सूर्य और एक तरफ चन्द्र अंकित थे।

(5) 27 जून, 1947 को स्वतन्त्र भारत के झण्डे के विषय में सुझाव देने के लिए एक

अस्थाई समिति गठित की गयी। समिति के विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय किया गया कि कांग्रेसी तिरंगे में कुछ परिवर्तन किया जाये। ताकि यह सभी दलों एवं संप्रदायों को स्वीकार्य हो। झंडे में ऊपरी केसरी पट्टी, बीच में सफेद पट्टी के बींचोबीच अशोक के सारनाथ स्तंभ के चक्र की हू-ब-हू प्रतिकृति गहरे नीले रंग में बनी हो। झण्डे की लम्बाई-चौड़ाई का अनुपात 3 : 2 रखा गया। यह 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत किया गया।

(6) राष्ट्रीय झण्डा प्रतिदिन सूर्योदय के समय नार्थ ब्लाक एवं साउथ ब्लाक पर दो-दो तिरंगे फहराये जाते हैं। जिन्हें सूर्यास्त होने पर उतार लिया जाता है। राष्ट्रीय ध्वज सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही फहराया जाता है।

**भाषा अध्ययन**

**1.**

| **व्यक्तिवाचक** | **भाववाचक** | **जातिवाचक** |
|---|---|---|
| स्वामी विवेकानन्द | स्वतन्त्रता | शिष्या |
| कलकत्ता | गौरव | ध्वज |
| निवेदिता | लोकप्रियता | राष्ट्र |
| दिल्ली | संप्रभुता | |

**2.** (क) धरती पर पहला झंडा किसने, कब और कहाँ फहराया? यह कह पाना तो मुश्किल है।

(ख) नागपुर के भोंसले शासकों के दो झंडे थे—जरी पताका और भगवा झंडा।

(ग) वज्र के बाईं ओर पीले रंग में बंगला अक्षरों में 'वंदे' और दायीं ओर 'मातरम्' अंकित थे।

(घ) श्री श्यामलाल गुप्त ने ''विजयी विश्व तिरंगा प्यारा'' की रचना की, जिसे उसी वर्ष कानपुर कांग्रेस में पहली बार गाया गया।

# 20 मैं हारिल हूँ

**मौखिक**

(1) पक्षी को तिनको से प्रेम होता है।

(2) पिंजरे में बन्द पक्षी आजादी के लिए ललचाता रहा।

(3) पक्षी को सोने के पिंजरे में बंद करके युवराज और सम्राट खुश थे।

(4) पक्षी को खुले आसमान में घूमना सदा प्रिय रहा है।

(5) पक्षी के मन में इस बात का मलाल था कि उसने जो कुछ भी लिया वह कभी वापस नहीं कर पायेगा।

(6) पक्षी के पुन: लौट आने की आशा नहीं है।

**लिखित**

(क) पक्षी (ख) तिनको के प्रति

(ग) खुले आसमान में (घ) स्वतन्त्रता

(1) बंधन में बंधे पक्षी अवसर मिलते ही उड़ गये।

(2) पक्षी सभी प्राकृतिक कष्टों को अपने बल पर सहन करने को तैयार है।

(3) विदा के समय पक्षी को मालिक से बिछड़ने का दुख है।

(4) पक्षी को विदा के समय अपने मालिक के साथ बिताया हुआ वक्त और उसकी यादें याद आ रही हैं।

(5) प्रस्तुत कविता में कवि ने स्वतन्त्रता और उसकी महत्ता का संदेश दिया है।

**भाषा अध्ययन**

**1.** फलित — फल
फलित — फल
सीमित — सीमा
फलित — फल
बंचित — बंच
बाधित — बाधा

**2.** नीड़ — नीड़े
पिंजड़ा — पिंजड़े
बंधन — बंधनों
याद — यादें
पल — पलों
महल — महलों
सपना — सपने
सुख — सुखों
दु:ख — दुखों
युवराज — युवराजों
सम्राट — सम्राटों
आँख — आँखें

**3.** प्रेम — स्नेह, प्यार, अनुराग, प्रणय
घर — ग्रह, निवास, भवन, सदन
मनुज — मानव, आदमी, नर, मनुष्य
संसार — लोक, जग, जगत, दुनिया

# 21 नए मेहमान

## मौखिक

(1) विश्वनाथ के परिवार को छोटे मकान और गर्मी की तकलीफ थी।

(2) खेवती और विश्वनाथ में मेहमान के आने पर खाना बनाने, छत और आँगन में सोने को लेकर बहस होती है।

(3) विश्वनाथ मेहमानों के आगमन पर इसलिए प्रसन्न नहीं होता था क्योंकि वह उन्हें पहचानता नहीं था।

(4) विश्वनाथ मेहमानों से स्पष्ट परिचय पूछने पर हिचकिचाता है क्योंकि कई बार पूछने पर वह स्पष्ट उत्तर नहीं दे रहे थे।

(5) 'नए मेहमान' कहानी समस्या प्रधान है।

(6) (1) क्योंकि वे स्वार्थी थे और किसी प्रकार की असुविधा नहीं सहन करते थे।

(2) क्योंकि उसे सन्देह था कि शायद ये दोनों सचमुच ही उसके किसी सम्बन्धी द्वारा भेजे गए हों।

## लिखित

(क) धर्मपत्नी (ख) गर्मी

(ग) मेहमान (घ) हिचकिचाता

(1) विश्वनाथ गृहपति था।

(2) किरण विश्वनाथ से कहती है कि माँ पूँछती हैं खाना .....।

(3) नन्हेमल और बाबूराम बिजनौर से आये थे।

(4) खेती अगन्तुक (अपने भाई) को देखकर प्रसन्न होती है।

(5) नन्हेमल और बाबूराम असल में कविराज रामलाल वैध के यहाँ आये थे।

(6) 'नए मेहमान' एकांकी के आधार पर रेवती बहुत बहाने बनाने वाली, मुँहजोर और स्वार्थी महिला थी।

## भाषा अध्ययन

**1.** निंदा — हमें आतंकवादियों की निंदा करनी चाहिए

निन्दनीय — झूठी अफवाह फैलाना निन्दनीय है।

गुण — अच्छे गुणों का हमेशा सम्मान होता है।

गुणवान — अच्छे गुणों से युक्त व्यक्ति गुणवान होता है।

| | | |
|---|---|---|
| स्मरण | — | राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का हमें स्मरण रहता है |
| स्मरणीय | — | मित्रों के साथ स्मरणीय पल साझा किया जाता है। |
| स्वभाव | — | निदेश का स्वभाव बहुत अच्छा। |
| स्वाभाविक | — | किसी के दुख में दुखी होना स्वाभाविक है। |
| गुरु | — | अच्छा गुरु बहुत भाग्य से मिलता है। |
| गुरुत्व | — | पृथ्वी गुरुत्व बल से किसी वस्तु को अपनी ओर खींचती है। |

**2.** (क) अहिंसक (ख) निर्भय
(ग) सत्याग्रह (घ) पथ प्रदर्शक

**3.** (1) स्वाभाविक (2) सरलता
(3) स्वतन्त्रता (4) सैनिक
(5) ममत्व

# नोट

# नोट

# नोट